

अपिचेति॥ फेरिपनिमंगलगर्हन. यागगर्भाभयाका. अर्द्धचंद्रजोहने. शिरकोधुवनभयाका. रेस्तामहादेवको. स्व
प्रकासज्योतिजोह. वडाउत्कार्यलेखंछ. कस्ताज्योतिभया. अंतः करणशान्तिभयाका. सुखमाणाडीविषे. रोधनुगरि
याकावायुलेगारि नाण्याकोहउर. अजसलेफेरिकस्तो ज्योतिभया. सपकाशसुखदेधि. भिन्नभयाको. फेरिकस्तो. नि
धारमाप्रकासभयाका. नेस्तानेचकाहललेगारि. उकतधियेनतपनिप्रकटभयाजस्तो. फेरिकस्तोजगत्संसारकनयाप्रगीररहा को. फेरिकस्तोजडा

अपिच॥ अन्ननीडीनियमितनरुद्रधितउधरं. अ. स्वानेशानिप्रणयिनि. समुन्मीनदानंदसांद्रमु॥ प्रत्यग्
ज्योतिर्जयति यमिन. सद्यलालाटनेत्रवाजवक्त्रिकनमिबजगद्धापिचन्द्राहमौले॥ २ ॥ नान्द्यत्ने
सुअधार॥ अलमतिविस्तरेण॥ आदिष्टोस्मि. सकलसामंतचूडामनिमरिचिमंजरीनीराजितचरणकमुलेन

हंकारिदेधिभिन्नभयाको. सत्येशानादिरुपले. प्रकटभयाको॥ २ ॥ मंगलकाअंत मासुवधारजोह. वडासेधुर्युक्तभयाका
राजावपालले. मलाईआशागयाकोह. नान्ददेशभनि. वडाकोमाचैपट. तसअर्थ. मंगलेमाठेरविस्तारगनुछेनभनिभ
ह. कस्ताराजाले. मलाईआशागयाकोहभया. बहुने. वडावडासजाका. शिरकारत्तको. कोतिपर. पराले. आका. चरने. क

आत्मा

प्रबोध
२

मलको पूजा गराउना को सामर्थ्य भया का हुनाले महाप्रतापि सधूर्न राजा हेरु कन आकाश विनभारा यन्त्रा भया का फेरिके स्तार राजा बडा बल ले चु
क्रभया का बडुने शत्रु राजा ले रुका छानि रूपि वडो को का को विदारण गन्ना हुनाले नर सिंह का जस्तो रूप भया का फेरिके स्तार राजा
बडुने बलिया राजा हेरु का समुदाय को नास रूपि वडु समुद्र मा दुवा कि धृषि वी को उद्धार गन्ना हुनाले

बलवद रिपुं जस्त ठक पाट पाट न प्रकति न नर सिंह रूपे न प्रबलतर नरपतिकुल प्रलय महरा वम ग्वमे
दिनि समुद्र राग मझा वडा हेन निखिल दिग्विजिता सिनिकर्न पूरि कृत किर्ति नता पत्न वेन समस्त आशर्व
रम कताला स्फुल्ल न बहल पवन सपात नर्जित प्रताप जलेन श्री मेता गोपाले न न

वराह को अवतार लिप्ता नारायण न जस्ता भया का फेरिके स्तार सवेदिशारूपि विह्वल का कान को गहनु आकाश की निरुपिलता का पा लुवा
ले बनाई दिग्भा भया का हुनाले दिग न सम किर्ति पुगा का फेरिके स्तार दिशा का हानि हेरु का कान्फूट का नीले वड्या का वायु ले
नचाया को छ आक्रु प्रताप रूपि अग्नि जस ले दिशा का अंत स पुगा का राजा ले आज्ञा गरिया को छु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मधु ता थ

शम
२

हामीर

गनालेसूत्रधारलाई जो आजागनाकोहे सो आजासूत्रदेखाउँछु स्वभावैलेकोमलचित्रमयाका कीर्तिवर्मागजाकादिमाजितनाकाव्या
पारमालागनालेपायाकोछैन आनन्दसुखजसले ऐस्तोहेरुले भोगविलासगरियाकोमालाचंदनखिहेरुमाको आनंदानुभदलेग
रिदुस्तभयाजस्तादिनुकाटिया अवयसकालमागनाका कार्यपनिगरियो जसकारनले कीर्तिवर्मागजाकासबुहेरुजोछन सबैका

यन

यथा स्वस्वसमहजमुहुदोरातः कीर्तिवर्मदेवमेदिगिजयवापारां नरितपरवृहानेदेरमाभिः ममुनीलिनं
विविधविषयसंस्पर्शद्वीताइवानिवाहितादिवसा ॥ इदानींतु कृतकं तत्तावयमे ॥ नीता ॥ क्षयक्षि
तिभुजोत्पत्तेर्विपक्षारकावतीक्षितिरभूत्प्रथितैरमान्ये ॥ साशान्तेमस्यविहितक्षितिपालमोलि
मालार्चिनमुविषयोनिधिमेशलायां नद्वयशानरसप्रयप्रयोगाभिनयेनात्यानेधिनोदयितुमिच्छाम ॥ ॥

टियाः पृथुपुनिवहनेप्रयान कीर्तिभयाकावडासंविहेरुलेगी रक्षालेयुक्तभयाकीभईचारसमुद्रवावाभयाकीप्रिथिवी
माचडागजाहेरुकाशिरकासुकुंतकापंक्तिसेपुजागरियाकोचकवर्त्तित्वजोछकीर्तिवर्माकाहानगरियो हाशपनि अवउंछोनगना
कार्यकेहिरहो कोछैन तसकारनलेशानर सबडोभयाकानिमप्रकटगर्नलेगरिकन मनकोविनोदगर्ना कोईछागर्को ॥ ॥

प्रबोध

३

नसर्थ पूज्यनया का श्रीकृष्णमिच्छे प्रबोधचंद्रोदयनाटक वनाधार जो तो लाई दिया को थियो हे सूत्रधार आजनेले जो नाट
क जो कर्त्तव्य वमारा जा छे उल्ला उनु पद सभा मावसा कारकिर्ति वमारा जा का पनित्य नृत्य हे ना को मन मावडे उत्तराठ भे
रहे छ भनि आश गरि आया सूत्रधार पनि वठि या हवस घर मा जाई कन नटिलाई बोलाई कन गीत गाई कन नृत्य गरी
लाभ निविनिगयो प्रदक्षिणा

॥ नद्यत्पूर्वतव भवद्विः श्रीकृष्णमिच्छेः प्रबोधचंद्रोदयनामनाटकं निर्माय भवतः समर्पितमासि
त्रयशतः श्रीकीर्तिवमराः पुरस्तादभिनेतव्यं भवता ॥ अस्ति वास्तुमुपते सपरि सदस्यदवलोकनकुतूहलमिति ॥
नद्रवतु गृहगत्वा गृहिनि माह्वय संगितकमनुनिष्ठा मि ॥ इति परिकल्पने पश्चात्तु मुमुक्षुमवलोक्य आर्य इत
स्तावत् ॥ प्रविश्य नदी समसि अनवेदु अज्ज उ नो केरिणि आश्रयगच्छि चिठि अडुत्ति ॥ सूत्रधार ॥ ॥

गव्यार नृत्तिशाला मा पनि हे चोर सूत्रधार जो छ ॥ नति छे उ बोले नलाग्यो हे आर्य हे माने भया कि नाच दे आ भनि आश्रय भयाः
को छ अचउ जान कसो गन्त हो भयोर नति पनि नृत्यशाला भि वपसि र सूत्रधार भगबोल नलागि हे सूत्रधार वडा मान्य का पुत्र भया
कामत मे नजर मावसा की दु कस्को आश्रय भया को छ नित्य गर्भ भनि नटिले सूत्रधार संग सो धिनः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

साम

३

सुवधारपनि नति केउ उन्नगन लाये हे ग्यो र्ये हे नोटि सवे तो लाई वर छ तस ग्युर्थ क स्को आर्या भयो को छ भनु ने ले पदे न भ नि सु
 चधार ले भन्ना को सु निर सवे सवर म लाई क सो गरि छ नदी ले भ नीर सुवधार जो छ जो राता गो पाल ले आया ग न्या को चिर या उने रा गा की
 नदी लाई बुझाउ ना नि भिन्न वर न ग र्छ मू धी न ले मा का पु रा गा हे रु को से न्य रू पी व ड व न मा व द्या का उ ना प रु पि गो ति का ज्वा लाले उ द्या
 को छ वि भु व न रू पी ओर राज स ले से जो जो धा भ या का स पू र्ण स सार मा की ति प्र था न भ या का ॥

अपिन ३

आर्य विदिन मे वत्ता ॥ अस्ति प्रत्प थि पृथ्वी पति विपुल वर्त्तर गप मु र्छ न्युता प ग्यो नि ज्वा ला व ली ठ वि भु व न वि व र्णे वि ध
 वि भ्रात की ति ॥ गो पालो भु मि पाला नृ प स भ म सिले ना मि व मा वे न जि त्वा मा मा जे की ति वि र्मा न र प ति निल को ये
 न भु यो ॥ भ ये चि ॥ अद्या पु न्य द या नु धा न न रू गिा च च न्क रा स्फ र ल न था व त्ता नृ क पाल ना ल र नि ते नृ त्म मि शान्
 ग ना ॥ उ ह्ये ति च र्मा सि य स वि त ने नो दे अ नानिल

गो पाल राजा छ नृ ये के नृ र तार रु पि मि व स हा य भ या का ज स रोजाले जु ड मा व ड ह र ले रा जा हे रु क न जि त्वा र से पु रा रा जा हे रु का
 ये रु भ या का की ति व मा रा जा क न रा ग्या भि ये क दिय ॥ के रि प नि गो पाल राजा के व र्ण न् सू त्रा धार ग र्छ ॥ व हु ने म न्न भ या का रा स स का
 न रु नि रू रू का सु द र हा त का ग्या लि व जा उ ना ले च च ल भ या का म नु य का क पाल रु पि वा घ वि से य का श व ले यु ॥ ॥

प्रबोध

४

कभयाका वडा वायुने शोभक नया प्रभयाका शान्तिका भुका कागडस्थले समुहका छिद्रमा प्रकत भयाका वंदे विस्तार भयाका शब्दले गरि
नृसगर्दछन् पिशाचका खिजस्या पहिले गोपालले छुट्टा गरियाका सुस्ता संगम भुमि जो छ सो अजकाल पशिराजा गोपाल का वडो
जस गाउँछन् शान्ति र सप्रभयाका नभे गोपाल राजाले मनको विनोद गनो निमित्त प्रबोध चंद्रोदय नातक कन नृपले गरि
यका संग नो निमित्त आशा गरियाको छु जसका चमले टनहेरु जो छ नृचनको भेस गनो निमित्त हेने दी नहले नटनको भेस गन भ

प्रक्षुभ्यत्करि कुभकर्तु कुहुर्यन्त्रे र नदि क्षोणाय ॥ नेन चं मानि पथ प्रस्थिते नात्मने विनोदार्थ प्रबोध चंद्रोदयाभिधा
न नाटक मभि नेतु मादि एरि ॥ नदा प्रता भरा वरि का परिहाय ॥ नदी मवि स्तय ॥ अत्र उजा ॥ अत्र रि ॥ जे
गान धारि अत्रु अत्र वली विक्क मे करि अरि स दस अत्र ले रा अत्र ले न अत्र अत्रा कट्ट कठिन को अत्रा वरु ल वरि स न
सर नि अत्र जे जरी अत्र नेतु अत्र नेतु ग मालि ॥

नृभन्धोर सुस्ता सुत्र धार का वृत्त नम निर नदी जो छ अत्र अत्र ले जे कभे र हे अत्र पुत्र वडो अत्र अत्र सुनि यो श्री कट्ट वली क्षीर समुद्र मथ
नगरि जे ले लक्ष्मी पाया था नले वहुन वल का परा कनक्ष अत्र ग रा यो को छ नरा जे मरा ल जस ले को न पर्य न रे या को कठोर धनु र
पीडले वसा या का वान समुह ले जे र भया का घोडा र पि नर ग की माला जस्या ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राम

४

वारवार चोरे दिशा मा पद्म अति निषेधा रभया का ह जार शर आर का आधा तले चोरे दिशा मा ध पाश का छन मने भया का हा ति
 रूपि ह जार पर्वत जस्मा चोरे दिशा मा धुन्दो भुज दण्ड रूपि च वण्ड म को राड ल का आधा तले घुं मा उदाह से पून पैद सि पा हि रु स्ते
 पी नाल समुय जस्मा रस्ता कर राजा का से न्य रूपि समुद्र मथन गरि कन सुध को जय लक्ष्मी जात्र गन्या भया का सबे मुनि जन हे स्ते
 रगा

रिण रत्तर रिण वंदन नि कव वि छिन्न सत्य सहस्र पद न्य ड तुंग मा अग म हा महि हर स ह स ॥ भ स न मुद्र दण्ड
 चण्ड मंडल भिषा द धु म न स अल पति सति संधा द ॥ क म से सा अर नि म हि म ह म ह रो गो व र वी र स मुद्र आ सा
 दिस म र वि ज अल की ॥ न स स य द स अल मुणि अ स ली हि रिण अ वी र च रि दे स क ध मे रि सो उ व स मी स वु नो
 ॥ स्रवधार ॥ आर्य ॥ नि स र्ग सा मे व आ स न ज्यो ति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्लाघनिय वरान्ग नर्ग को योग भया को छ वीर चरित्र ज को रस्ता महा प्रतापि राजा का ए स काल मा क सो गरि शांति पा प्र भ यो
 भनिः स्रवधार छेठ नटिले सो धीर स्रवधार उन्न रा ग द हे आर्य हे नटी खल जो नि छ स्व भा व ले व शो शांति रूप दः ॥ ॥

प्रबोध.
५

कोटिकारणाले विकारकनशात्रभेग साका नपनि फेरि आकै स्वभावलिनि छ. सखाकरभापनि तो लाइव्या आश्चर्यभयो. आश्चर्यनि
मानो जस्कारनले स पूरा गता हेरु विधि. पलयकालको अग्निबरोबर कुहु भयाको चेदि देश कारणा ले. नाशकनशात्रगरियाको च
द्ववज्जीरागो कीतिवमहेरुको स पूरा अगको स्वाभित्वकन. पृथिवी विषे अति बलियोग नानि निमित्त. योगो

कुनो विकारणात्. आश्रविकारमपि पुन. स्वभावमेवावतिष्ठते ॥ यत् ॥ सकल भुगत कुल पलय का लाशिरु देण
चेदि पतिना स मु भूलिने चेदा न्यपाथि वा नापृथि व्यामधि पसे स्थिरी कर्तु मयम स्प संरभः ॥ पञ्चपान भा ॥
कल्यात वात संक्षो मल धिता ये य भुभृतः ॥ स्पे पसाद मया दा स्तारं बहि महे दधः ॥

पालराजाको कोध हो. स्वभावले गरि भयाको हाईन. तस्कारन महा प्रतापि एआपनि. शान्त स्वभाव भयाका कशे गरि भुयाका. भ
न्या आश्चर्य न मान् ॥ हे नरी तरे हेर. महा पलयका वडा वायु ले संक्षो मित हुनाले ना घ्याका छनू सर्वे वर्त जस्ले सखापनि व
डा स मुद्रका परं तु स्वाभाविक गुनता. अति थिर. अति निर्मल मर्यादा ना घनु ईने छनू ॥

रामः
५

अपिति॥ हेनयः दोस्त्रोपकीनदृष्टान्तेरः सकलपानिहेतुकाहितगर्ननिमित्तः भगवान् श्रीनारायणः स्वशरूपले प्रकटभयाका
पुरुषार्थभुयराभयाकातलापुरुषहेतुगोदन्तस्तार्थनिमित्तयुधोमाश्रवतारलिङ्गन्तस्तार्थसिद्धगर्धनन्तरिशात
रूपकनपात्ररुद्धन्तः तत्रिलेपरशुरामलाहरेरः कस्त्यापरशुरामकन्तः जसपरशुरामलेः सकादसफेराकाटिया

यथा

अपिचः॥ भगवन् नारायणः शंसुतामुताहितायनपाविधाः पौरुषभुयराः पुरुषः क्षितिमवतीर्यनिश्चयादित
कस्त्यापुनः शोतिमवसुपद्यते॥ पशुराममेवाकलयतुभवतितावत्॥ येनविः सप्रक्षोक्तो नपवहल
वसामान्समस्ती सुपकषाभारः ३ कारिसुरिच्यततुधिरसरिदारिपुरभियेकः॥ यस्मिन्निवालवृद्धाव
धिनिधनविधौनिर्हयोविष्कतोसौराज्योऽसंकटकथनपटुरद्व्योरकुमारः॥ ॥ ॥ ॥

काशजाहेतुकाः वहनेवोसाः मासुः गिदिः लेनुकभयाकोनिरभयाकाः वहनेवहदारक्तरूपिनदिकाजलप्रवाहमाः खानतप
रागमाथाः खीवालः वृद्धः श्वधिभयाकाशानिकामरराविधिमादयानभयाकोप्रव्यातभयाकोराताहेतुकाउच्चभयाकासुंधकास
मुदायकोनाशगर्नामाकुशलभयाकोशदुर्गर्भयानकधारभयाकोरुस्तोफराजसपरशुरामकोहो

प्रबोध
६

जस परशुरामले रागोहेरुका समुदाको नाश गयार आका पराक्रमले यथीको भार उठाया र तपस्याले शान्त गंगाको दका धरूपी
अग्निजसले शाभायले युक्त भयाको उजापनि परशुराम जो धन शान्ति र सकन प्राप्त भया दन ॥ नसे इराजा गोपालपनि ग
र्वाकार्य गयार स्फालमा वैदेहातरकन प्राप्त भयाका दन ॥ एते प्रते प्रकारले राजाको वर्णन ॥ सुवधारले नदी सग वो

सोपि सोवीर्यादवतार्य भारं भुमेः समुत्थाय कुलं नृपाणाम् ॥ पुत्रांतकोपज्वलनस्त्रपोभिः श्रीमान्मुनिः

शाम्पनिजामदप्यः ॥ युग्मम् ॥ तथा यमपि कृतकृत्यः संप्रति परमा मुपसमनिष्ठा प्राप्तः ॥

येन च ॥ विवेकेनेव निर्जीतकशो मोहमिवोर्जितम् ॥ श्रीकीर्तिचर्मनृपनेर्वो धस्ये वोदयंकृतानेपथ्ये ॥ २५ ॥

त्योर विवेककोर मोहकाजय परजयका कथा गौरिकन नाघवनाउ ना निमित्त प्रस्तावक रहे दन ॥ यनीति ॥ नसराले प्रति
बलिया कराला रजितिकन कीर्तिवर्मा राजा जे ते उद्योगया नसे विवेकले गरि मोहकन जित्यार शानको उदय गंगा भनि
सुवधारले भन्याको सुनिर नृत्यसाला मानधी रिमाहकन योग्य नला गि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शमः
६

यगुनमोदुर्जनमें भयमवसं आरमोफकफकभयरहतेहैं वैराग्य मोकुहूमयनहि॥ ३१ ॥ आयुव्यमंतनृणां निग
रिंरात्रौ तद्वर्गं तत्सार्द्धमर्द्धमपरं बालत्वं विदुर्नयो ज्ञेयसाधिवियोगदुःखताहेन मेदादिभिर्नियते निवेवारितं गुरुदुर्बलं
मौख्यं कुतश्चिनाम्॥ ३२ ॥ शिवव्यमनुष्ये लोककि आयु कहाहैं निस्कि आधातमा जातेहैं॥ तीसके आधके आध
आध बालयमोदिदुमोगयेहैं सोभिः जने कोग विरह बुझ कर्कः जेठवा॥ सेवा कर्क गमावतेहैं ऐसे जल विद्वच्च
लजिवमोप्रानिलोकके मुख कहाहैं॥ ३२ ॥ लोक पुछति मेवार्ता मरिरे कुशल ततः॥ कुत कुमल मत्स्या कमा पुण्या
निदिनेदिने॥ ३३ ॥ लोक हमको पुछतेहैं तुमा रासीर कुमल है की नहिद सोर कुमल कहासे होगा॥ दिनदिन आयु
घत जातेहैं॥ ३३ ॥ कोचिद्भीरावायकोपिदपि चहाहैं तिरुदित॥ काचिद्धिडाडोहि कोचिद विरावसुरामस्तकल
ह॥ कोचीडडमयागमः कचिदपि रागज्ज्वरवपुर्नजानेसरा किमस्तमयः॥ ३४ ॥ कहै विराव जावतेहैंः कहै
हाहा कर के गोवतेहैं कहै पडि जलोक कठा कहतेहैंः कहै मद्यानमें मंत्र होय के फल ह कहतेहैं॥ कहै विज नंद गिरी
जन देखतेहैं कहैं बडा वर था मंथि हित मया का शरि देवतेहैं॥ नीकार ममो जकार कोः अस्तमय कहना कि विषमें क

इणः सोहमजानते नहिः ॥ ३४ ॥ इति वै वै गंगे शन के सार स्तोको मगृहिताः ॥ ३५ ॥ ॥ अथ निति शत के कति चिचु
स्तोका लिख्यते ॥ ॥ अथः मुख माराध्य मु सो नर माराध्य ते वि शेष शः ॥ तान ल ल दुर्विदग्ध उद्धा वी न रं न रं जयतिः
॥ १ ॥ मुख जन के मुख मेः मे वा कर्न हो ते हेः अव जाने वाले को वदे मुख मे मे वा कर्न हो ते हेः धो ग जाने वाले मुख मे
न हिति के वृद्धा भिरिगा वन को न हि सम र्थ हो ते हेः ॥ १ ॥ लभते सिकता मु ते ल म पि यन्न तः पिठ ये त्पि वे ध म गति हि
कामु म लिले पिया सा हि तः ॥ कदा दि द पि प र्थे नु श श विद्या न मा सा दय न्न नु प्रति नि वि ह मू र्ख जन चित्र मारा धय तः ॥
॥ २ ॥ वरु ते ज त्ने मे नि चो दे गो फलः न ल मो भी ते ल पा वे प्पा म धो लेः धि नो पा नि का पो व रि म ग ति ले मे ज ल पा
वेः कडा चि न् पि रे तो य रा हा का भि सि दः पा व सा ये वे ठे तो मि मुख का चि न्न न हि या व ते हेः ॥ २ ॥ शशि दि य म धु सो
ग लि न् ये व न क मि नि म रो वि ग त वा रि जे मुख म न द्वा र स्वा हे तेः ॥ प्र भु द्ध न प रा य नः स त त ड ग तः जुः नो न य म न ग त य
लो म नो मि स प्र श ल्पा नि म्पः ॥ ३ ॥ दिन मे च र्द मा म लि न दे य के न म्म न म दाः द रि द्र दे य के दु ग न र के हि त दे य के
छि द् व च न वा डि पु र्य दे र्ग व केः मु न्द रि स्त्री के जी न ग य दे य केः क म ल हि न दे य केः ध न लु ड्ढा ग्ना दे य केः ए न

नामात्तपः दीर्घदेवके मेरे मन मोविंखादहर्निहैं ॥ ३ ॥ विपत्ति धैर्ये मथाभ्युदय क्षमा सदति वाक्पटुता श्रीधिक्रि
मः ॥ पससि वाभि रुचि व्यसन मन ॥ केतो प्रकृति सिद्धि मिदं हि मातृनाम् ॥ ४ ॥ विपत्ति काल मे वैर्ये सस्य भिषक ते मेः
क्षमा स भोषेठ जे मे को मल वचन संग्राम स्वेः पराक्रम न पावने का भमे रुचि वेसन करे तो आ स्वमे एतना सो भाव जो हैः
मो वडे आदति के सो भाव होने हैं ॥ ४ ॥ निदनु शिनि निपुना पदि वास्तु वंतु लक्ष्मीः समाविशतु गदवाय धेष्टम्
॥ अघे वावा मरण मस्त युगा जे वा न्यायात्म थः पति च लः त्रिपद ज्ञपि रा ॥ ५ ॥ कोहि निन्द्य करे तो भिः अमृति
करे तो भिः लक्ष्मी आये तो भिः जाये तो भिः अमृति मरण होय तो भिः कल्याण जिवन होय तो भिः निनि मे निपुन शानि ज
नान्याय का राहा के दुके अन्याय मे नहि चले ॥ ५ ॥ व्याधि रोगे धृति ज्ञापति तर्ज्य पति रोग अशत्रु वर्ध प्रहरति
रहेः आयु परिध्वति भिन्न घता दिवा भो लोक स्त्र पाप्म हित मा चरति ति चित्रम् ॥ ६ ॥ वधा वस्था वाधि नि
जे से ना कि के वै ठ है वदुत प्रकार का राग शः जुने से होये के देह मे पिडा देते हैः पुण्ये लासे पनि चहः ते हैः जे सा
दिन दिन आयु घरे ते हैः तो भिः सन्सार म्य लोक आप नाहितः काम कर्त्त नहि वडे आस्वैर्य दुहु क्षामे पिजरानि

वेग
॥८॥

नोमिनिधिलयाकोपिदस्यदसामापन्नोपिविपन्नदिधीदिशामोपुनश्चानमपि॥मन्त्रेभेदुविभन्नकुम्भकवल्लगामै
कवदुस्पृहकिंजितनमृत्तिमानमानमहतामहतामग्रेसरकेसहि॥ ८ ॥ कइतनुकाहोवातोमिदुहोयतोमिदुवल्ल
हायतोमिजीवमेकचरहो॥ नोमिनेजनहिरेतोमि-मागेलगेतोमि-मागेलजिकामस्तकफेरिकेःयानेकोमनमुवाव
नेहे॥ शोभिःघासतो नहिधातेहो॥ मीहवदुनामोते॥ ९ ॥ दोर्मश्चानुपतिर्विनस्पतिर्यतिःसगासुतालातुना
नविधानययनात्कुलकुतनयादि संयलापामनात्॥ होर्मघादनव्यक्षनादपि कृषिमेहःपुदामा अघातमेने
चापुनयात्समृद्धिरनयात्पागात्प्रमादुद्धनम॥ १० ॥ दुर्मिचिभयमेराजानासहोतेहो॥ मगके दोयमे जतिकाम
होतेहो॥ खड्गमे लडिका कानासहोतेहो॥ पठेविनावाहनकानासहोतेहो॥ कुपुत्रमेकुलकोनासहोतेहो॥ दुर्जनके
मेवामेःशीलकानासहोतेहो॥ मनपानधियतो लज्जा कानासहोतेहो॥ विनजिचाकोमेयेनिकानासहोतेहो॥ विदे
सगयेमेः प्रितिकानासहोतेहो॥ दोश्चारेमेमित्रकानासहोतेहो॥ अन्यायेमेः एवयकानासहोतेहो॥ अहंकार
मेभ्यागमेधमकोनासहोतेहो॥ ८ ॥ क्षातिश्चेत्कवचेन किंकिमरिभिको धोस्तिचेदेहिनाः शाने धेदनको

उपसर्ग
॥८॥

यमनियमादिनोद्धन विचारनपाप्रभुशका चिभलेमात्रतिद्वगारि न्याहु नोनेह थोरै नाओ कनषाप्रहनेछन् ॥ अपिच ॥ इय
मनियमादिकाविप्ररूपभयाकास्त्रीहेरुछन् तस्कारनले इयमनियमादिनोद्धन हावाअधिनेमाछन् विश्वामिधपराओ
रआदिगयाका त्रिहिरुभयाजलेमात्रमुकाकापातमात्रखाररहन्मा जोकोहिमुनिहेरुछन् निपनिअनिगवास्त्रीहेरु
कोमुखरुपिकमलदेखनेलेगारि मोहकनषाप्रभेगया जोनघिउ दुवदहि मासुलेसहितभयाकोवशभोजन नोर्गधमनुय

यमनियमासनपानाशामपत्ताहर ध्यानधानगातर्मधयस्त्रनिविहारे कचितसाध्यादि यत्करसमुन्मूलनायव
अपिच ॥ स्त्रियएवामीवाक्याः ॥ तेनेत्यस्मद्वाचराएववर्जने ॥ यतः ॥ संतुविलोकनभावनविलासपरिहोसकेलिप
रिर्भा ॥ स्मरनमपिकामिनीनामलमिहमन् सोविकाराय ॥ वैशेषनयेतेमदमातसर्यदंभादिभिरस्मत्तामी
ह्रमेरभिधुन्यमानानरपतिमत्रिणमधर्ममेवाश्रयिष्यति ॥ ॥

हेरुतत्रकार्द्वियकोविग्रहवडेकटिर्लेपनिहुनेन दभैमात्रवठछ ॥ ॥ स्त्रीहेरुलाई हेनुवोल्नु विलास ठट्टाकाकथा
कीशअकमालसा सजनु पनि एतिकुरा योसालमा मनकोविकारगर्नामावडासमर्थछन् विसेखलेगारि इयमनियमादिवि
येकरुपिराजाकोमविहेरुछन् हावास्वामिराजामहामोहका अतिप्रियाराभयाकामदेमा त्तर्षदभलो भादिमविहेरुले
आशागरियाकाराजामहामोहकोम वि

ममका अथभैसंवागर्न

प्रबोध
५

रतिबोलछे हे आर्य पुत्र हे कमदेवः तिमिहेरु कोरः शमदभादि विवेकहेरु को उत्पन्न भया को जग्गाः एके सो भनि एको कुरे सुनिं
दुभनिरति लेरः काम बोलछे आर्य लागे हेरति हे प्रियः ते ले एके उत्पन्न भया को जग्गा हो भनि दुः काय सो कुरे भद्रे स जन्म
दिन्या वा वापनि स भये के हुनः कसो गति मिहेरु को वा बाय के हुन भनि लो दु दे सत भुन हे रति रसर को स भं धुनाले
माया विषे मन नाउ भया को लोक मा प्रसि दु भया को पुत्र जाधः पहिले उत्पन्न हो भयो तसे मन ले नै लो के जगत्स सारक

रति ॥ सुदं मरः तुलानं समदमविक्रः अथ हुही रां चर ह्य सुपति द्य रा उति ॥ काम ॥ आः प्रिय कि सुचते ॥ एक मुप
ति स्थान मिनि ॥ ननु जनक एवास्माकस भिन्न ज्ञः ॥ तथा ही ॥ समरुतः प्रथम मिहेश्वर स संगान्मायाया म्मन इति वि अ
नस्त नूजः ॥ त्रैलोक्ये सकल मिदं विस्तु भूयस्ते नाथे जनि न मिदं कुल ह्य नः ॥ तस्मै च प्रवृत्ति निवृत्ती हे धर्म भक्त्यो ॥
तयोः प्रहं न्म सुत्पन्नं महामोहं प्रधानं मे कं कुल ॥ निवृत्त्या च द्वितीयं विवेक प्रधानं मस्मिनि ॥

बटिया खसि गयो रः साहाय छिः महामोह प्रधान भया को कुलरः विवेक प्रधान भया को कुलर नै दुइ कुल कन उत्पन्न गराउगे
भयो तसे मन का प्रवृत्ति निवृत्ति नाउ भया का दुइ भा र थिया प्रवृत्ति नाउ भया की भाया विषे मन ले महामोह प्रधा
न भया को ५ उदा पुत्र ज माये निवृत्ति म थी विषे विवेक प्रधान भया को दो त्रौ पुत्र ज माये

राम
५

एतेषु कारले महा मोह पुत्र कोर विवेक पुत्र को उत्पत्ति गर्दो भयो भनि रति छेउ काम ले यो कथा सुनायो रति वो लन जागी हे शार्प
पुत्र हे काम देव एके का पुत्र हो भया का निमित्त सरो दर भाइ भया का निमित्त हेर परस्पर सरो यो विरोध हु दो भयो भनि का
म छेउ रति ले ॥ काम को लच्छे प्रिये हे रति एक चं सका निमित्त महा दर भाइ हेरु का विरोध हु छ भया को करो संसा
र मा प्रसिद्ध हे रति हा

रति ॥ अज्ज उज्जदि एव ता कि रति मित्त तु क्षाणा वि परोपरं एवा वि संवेर म् ॥ काम ४ ॥ प्रिय ॥ एकामि यम मव मे
यस हो दराणा मुज्ज भने जगति वे रति मि प्रसिद्धः ॥ पृथ्वि निमित्त म भव कुरु पा राड वाना ती पु स्तथा हि भुवन क्षय
कदि रोधः ॥ सर्व मे ये न ज्ज म दस्य मि त्रो पा जी तं न धारमा भि म्मा ति क्ख भतया सर्व मे वा ज्ञा तं ॥

आमा वे भाइ हेरु का विरोध केन अरु अरु का प्रनिदे वि छ हे प्रिय त छे हेर दुयो धन हेरु को पा राड व हेरु को पृथ्वि का निमि
त जगत् संसार को नाश गर्ना अति भयानक भया को विरोध हु दो भयो हे रति सुन सर्वे जगत् संसार मो छ वा वाले उपा ज न ग
या की हो वा वा का अति प्रियारा भया का हा मि हेरु ले त्वे जगत् संसार जो छ सर्वे मा स भया को छ वा वा को आशा कारि व ज्ञा न भू
हामी को सर्वे जगत् मा अति छ निहाये छ ॥

प्रबोध

१०

यमनियमादिहेतुको न कसे कसे जगना मान्य सिद्ध हूँ कते प्रसिद्ध न भया का यमनियमादिहेतु वडा पापि छनः तने पापि हेतु न
निःसकाल न वा काले सहित भया का हा मिहेतु का जरे उरे लूना कन प्रहृष्ट भेर ह्या छनः भाने कामले रति संग बो ल्योर शानि बो ल
छे अर्ध महा भानि र रति बो लून लागि हे काम देव पाप खरु न भया को चडा विरोध गो छ कानि मित्र यमा विरमादि हेतु ग
छन असको निमित्र भाइ हेतु को विरोधो हु छ भन्दा कुरा त सुन्या हे काम देव दोस्ती ॥

तेजो नु विरं ल प्रचार ॥ सेनेने पापा साय ते पितर मस्तो श्लो न्य लयितु मुघना ॥ रति ॥ सतं पाव ॥ अज्ज उन्न
किं एद पावे विदे समस्त केन ते हि अरं ॥ अह वा यथि उवा ज्ये को विच त्प मति दो ॥ काम ॥ अस्म त्र कि निगु
हं विज ॥ रति ॥ अज्ज उन्न ता कि न उगघा डी अदी ॥ काम ॥ श्री ख भा ड वृ ति भी ल ॥
गुरु को शित न ते वरु ता पा पी य मा सु दो ही य ने ॥

पनि विरोध गामित्र भया को के हि क से मंत्र नाग मा को छ कि भनि रति ले काम छे उरः काम बो ल छन ॥ यस कुरा मा अति
गुह्य भया को कारणा छ भानि रति के उ काम ले भन्योर रति बो ल छ हे काम देव विरोध को के हि कार न ह भन्ना कि न कह मु ति
यमादि मन्त्र को मन्त्रो हेतु देन भनिले र काम बो ल छ हे रति उरा उ न्या स्त्री को हेतु को स्वभाव के ना ले त अति उरा उ ह म
न्या निमित्र वडा पापि यम नियमादि गमा को न विहेतु को अति भयानक भया को विरोध को कारन गो छ कह न सक्ति ॥

रान
१०

भनिकामलेरतिछेउभनार. रतिपनिभयलेयुक्तभेकन. केहिवोलेछे ॥ हेकामदेव. कसोतोचिरोकारनछसुनाउनुहवसर भनि
रतिलेर. कामवोलेछे. तत्रिलेउरा. आसापूर्णनहुन्यादोभापलेयुक्तभयोकापुस्यहेरकोआसागर्नुमात्रछे. लोकमाप्रसिद्धभयाको
योवाक्कीहो. हेरति. सुन. हासाकुलेमा. कालरात्रिवरोवर. भयाकी. आत्यतनोकोस्वाध्यात्कारगम्यको ॥

रति ॥ सभयं प्रजउत्तकेरिसतं ॥ प्रिये ॥ नभेनवेहतासानांमाशा मात्रमेतत् ॥ अस्त्रिकिलेयाकिवदंति ॥ अत्रास्मा
केकुलेकालरात्रिकल्याविद्यानामराक्षसि. समुत्तम्यतइति ॥ रति ॥ सभयं ॥ हृद्दीकहं अस्मान्नेकुलेरकवसिति
वेवदिमेहिअ ॥ श्री ॥ काम ॥ प्रियनभेतवेनभेद्व्यकिवदंतिमात्रमेतत् ॥ रति ॥ अधनसरकवसिस्त्रिकेद्वयं ॥
काम ॥ प्रय. अस्त्रिकिलेनत्रपाजापत्तामरसति ॥

हीरसीरूपिविद्या. उत्पन्नहन्माछभनि. रतिक्षउकामलेभनार. भयलेयुक्तभेकन. रतिवोलेछे ॥ हा. अ. धिककारहुकसोगारि.
हीरकुलमा. राक्षसिरूपिविद्याउत्पन्नहोति. भनानित्त. मेरोहृदयकंपछ. भनिरतिलेर. कामवोलेछे. हेप्रिय. नउरा. वानेमात्र
योहो. भनिरतिलाईवुगायोर. रतिवोलेछे. हेकामदेव. तेसराक्षसिरूपिविद्याकोकउत्कार्यछ. भनिसोविरतीलेर. कामवोलेछे.
हेप्रिय. तसकुरामा. प्रजापतिसंव. भयाकोकेहिकुरेसुन ॥

श्री उवाच
११

हेरति सगलैरहिते भयाकाप्रमेषरकी भायारूपस्त्रीले पुरुषको संवंधन भैयाकिले नपि पत्तिकेले मनरूपि पुत्रकन उत्पन्नखे जरि
रकमेले सेवे लोक संसारकन उत्पन्नगदि भइन् पुरुषको संवंधन भैयाकिले पनि कसोरिलोक केनु उत्पन्नगदि भइन् भनि मायाविचे
शकानगु ससैकुशमादृष्टानपनिछ सुन हेरति चुवकसरिका नानिकमारहनाले चुवकले नछोइया कोपनिलो

पुंसः॥ संगसमुज्जतस्पर्शगहिनिमायति तेनाम्यसावस्थपिमनः प्रमुच्यत नयलोकानमृतकमात् ॥ तस्मा
देवगनिचेते पुनरसो विद्येतिकन्यायात्तानसेवसंलोदराश्च जननि सर्वच भक्ष्यकुलः ॥ रतिः॥ सचो
सोत्कपेः॥

हकोखराउजोछ जसैजला चुवकगयात जैजाछ तसैघट नाहो इनसज्जा वात को निछटनी को सामर्थ्य भया की माया पनि इसरले
हेरिदिशमाने सभैलोकन उत्पन्नगना सामर्थ्य भया के हुदिन् सवेमगत्संसार को सिष्टिगुयापछि तसैमनदेखिन् इनेविद्यारूपिकन्या
उत्पन्नहुन्याछन् जोविद्यारूपिकन्याले मनरूपि प्रकावावाले सहित भयाका भाई हेरति सारिसवे कुलजोछ भक्षणनगरिइन्याछ
भनि ससैकथाकन रतिछेउकछो कामलेर जोसखडो के परतिलाई भोग्योर रतिवोलेछ ॥

राम
११

हे देव हे काम ममे रक्षागर्नु हवस दुई वेश भनिर दुई वाहुलगाइ कन काम देवलाई अगालो हालि रतिले अंगालो हालदा मा भ
 या को मन का सुख केन काम ले पनि कोहि नाछ को चेछाले प्रकाश गयो ॥ अति चंचल नेव भया किरति जोरे मा च भया को भयले
 गरिके पदा उच्चो दुई स्तन सपि भार संग हुनाले मन कन हर्षा भया को ऊँस मद्यगर्षा मनिका बलयले युक्त भया को वाहु रूपिल ना
 ले गरिया को सुखो आलिगन जोध वडो आनन्द गर्छ मोह कन पनि गर्छ भनिका मले ॥

अज्ज उन्न परिनाही परिनाहि ॥ इति भ त्रिरमलिंगती ॥ काम ॥ स्वर्ग सुख भनि य ॥ सत्तन ॥ स्फुल्ल दो मो ड्डे स्वर
 लतुल नाराज कुल दशो भयो त्के पोने गजन युग भरा संग भु भग ॥ अचिर क्षण गुज न्म निवल य दो ब्रह्मि रचित परी
 भो मो दे जन यति च सस मो हयति च ॥ प्रकाश ॥ छपरि ख न्म प्रिय न भेन न्य अम्मा सुजि वत्सु कु तो विघो ने नि ॥ रति
 ॥ अध कि ता यर क वसि र्ण प्यति त हान पडि प क वा रां स म्मा द ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रति छे उभयो र सवेले देखेने मा अति वलियोग रि दुई वाहुले रतिलाइ अंगालो हाल्योर हे प्रिय हे रति न हले न न डर न डर
 रामि हरु जि उदाह दामा का हरे छि आत्म तत्व को सा आत्मा रग र्ग भया कि राक्षसि रूपि विद्या उपच होलि भनिरति को
 चि सस्थ ग र शो काम ले र रति बोले आत्म तत्व साक्षात्कार ग र्ग भया की राक्षसि रूपि विद्या को उत्तम नि जो छ ति मि
 हेरु का श भु भया का विवे करे र को समत छ कि भनि मा धिर रतिले र

सि

कामबोल्ह हेरति यवसेसमत्तु. तोराक्षरुपि विद्यो जे छे विवेकले वेदान्तरूपि देवि देखी नृपकासमया को. आत्मतत्त्वसाक्षा
काररूपि भाइल संग. उपनगराउना कनू यो गच्छ. निश्चयमान हेरति राक्षरु विद्याउत्तम भयाका उपांन संवेश मद्. त्कारं
रूपि मादि हेरु जो कनू. आकु. आनु कार्यगर्भा केन वदामा मर्थ हु न्याघ अनिरति छे उ सुनायो. कामलेरति बोल्ह.

कामबोधः॥ साखलु विवेके जो पनि चह्यो प्रबोध चंदेरा भात्रास संजबी रोगान यित्ता ॥ जे जेने शमदमाद यय
प्रित बोद्योगा. अपद्यते ॥ रतिः ॥ अज्वउत्त. कहंडरा. सदेहिं. आप्यनो. काकारिनि रविज्जाय उपनि तेहिं दुविशा
दहिस ताहि तहि ॥ कुलक्षयः अरिना नोपाप कारिणा कुतः प्रत्यवायगरा नाः ॥ पश्यः ॥ ॥ ॥

हो

हे आर्य पुत्र हे कामदेव. आकुनाशगर्भा विद्याका उत्तमी को. अमी ईदुष्ट चित्त भयाकां यावे कहै रूले नाउ लिदामा पनि पाप लाग्याः
कुसमा. कगोरि. वशवर्ण नगरि अछि. अनिरतिले काम छे उर. कामबोल्ह हे प्रिय कुत को नाशगर्भा को मन्त्र सुखामयाका. पापकर्म
गर्भा पुरुष हेरका अधिल निर. कापाप को गरा नाछ. कहि छे न हेर हेर. हे देवि हेरति. सखुसमा दृष्टा. एतच्छः ॥

ता

सुभावेले दुष्टचिन्त भया का पुरुहेरु को जन्म जो छु. आहुड ले भि भया का. स्थान ले शक्ति भया का. ओपे नात्रा को निमित्त हुं छ क मरि पुरा अ
हेरु को सुभा वरु से देखि नूछ. पुवा जो छ. मेघ का मार्ग सम्य पुगु छर. आहुड पति स्थान भया का अग्नी को नात्रा गछर. ओपे पति पछि
वाट ना सिजि छ. ॥ नृत्य जाला विषे रति कोर. काम देव को सयाद भया को. रुखे कथा को प्रसंग जो छ सुनि.

सहज मलि नुवक्र भाव भाजा मवति भव. उभवा त्म ना शोहेतु ॥ जल धर पद विवाप धुमा ज्पल न विना समनु प्रया
निना समः ॥ नेपथ्यः ॥ अः पाप दुरात नुकथ ममसा नेव पाप कारि न इत्या छि पति ॥ नतुरे ॥ गुरोरप्य वलि प्रस्यः
काया कार्य मजाननः ॥ उभय प्रतिपन्न स्वपरित्यागो विधियन्तः ॥ रति रो ए री की गा धा पुरा न विद उदाहरति ॥

योः विवेक भन्ध. वडो पापि दुष्ट विष्ट भया का. कसो गरि हा मि हेरु कन. पाप कर्म गन्धा. भनि गालि दिंछ स. रे दुष्ट काम. कुल को
नाश गन्धा भन्ध स. वडो गर्व ले मुक्र भया का. सतु अन्त कार्य अकार्य. विचार न भया का कुमार्ग माला भग्ना भया का. रुखाः
गुरु को पति त्याग गनु भनि. पुरा न जा न्या हेरु जो छने. पुरा न विषे कह छ ॥

का

बडो अहंकार ले युक्त भया का मन लपि हावावाले पहिले प्राप्ता निभा भया का जगत् प्रतिभया का जे स्वरिलाई वहु गभामो
हमद हेर ले पुनि उने पर मधुर लाई अति बलियो गरि बंधन बा प्रग राया सखा पाणि मन को जरे उबेलना कन के रखा चितला
जे न भुनि विवले सुनायोर हारे कन हे प्रिय मनोर काम देप दोलन लाग्यो बडा सो भाव ले युक्त भया की मति ले संग हाश कु
लमाया वडो प्रेस भया की विवेक जो छ हा मि वस्त्रा का जगामा आउन प्रवृत्ति भैर हे छ विवेक न गरिकन प्राप्ता दशा ले रह

अने न चास्या कं जन के नाहंकारा नुवर्ति ना जगत् प्रतिज्ञा वृत्ति ने ववद्ध मोह भि श्रु सय वंधा सु द ठां
निता काम ॥ विलोक्य प्रिय अयमस्मा ककुल जायान् देवाम त्प्राप्त विवेक हत यवा भि वर्त्तते ॥ य स्यं ॥ रा
गादिभिः स्वर सचारि भिरात्र कांति निर्भर्त्समान इयमान धना कंस्तः सा गः ॥ मत्मानि तां त कलुषी ह सयां
ससाकः का त्प्रवसा इ तु हि नान्न रितो विभाती ॥ तदमुक्त मिहा त्या कम वस्था तु मि ति न ह्यु तो ॥

न्या भया का राग म द मो हा दि हेर ले अत्य ते मे लो भया कि म ति सहित भाया को ई ने रा गा दि हेर ले कांति शोष न गरि या को मा नैव
न भया को दुवलो अंग भया को क से ले गालि दिया की जस्तो यो विवेक जो छ ठेरे हिम ले ढा की या को कांति ले सहित भया
को चेदु मा र्जे जि व डो रो भय मान दे छिंद हेरति हेर तस्कार न यो नित्य जाला विसे हा मि हेर ले वस्त्रा को योगे छे न भयोर ॥ १३

निर्बन्ध भया ॥
मोह भि श्रु सय वंधा सु द ठां
कांति शोष न गरि या को मा नैव
राम १३

ब्रह्मपदि मन्तिलेसहितमसाकेराजा विवेकलेपवेशागेडी भयो नृत्तसालामार ॥ राजा विवेकलेविचारगोर. बोलनलाग्यो रेषिये
 वडोउठनभयाका सार्गसमने. कोविचारनभयाका. योका मदेवलेवडागर्वलेकहाकोबचन. नजिलेसुनिर. जोयोआफुव
 ओदुष्टभयाकोपनि. हामिहेरुलाई. पापकर्मगर्भभनिगालिदिछ. भविविवेकराजाले. मतिमंगभनोर. मन्तिले. हे. प्र॥

विष्णुभक्तः नतः प्रविशति राजा मनिश्च ॥ राजा ॥ विचिन्त्यपि ये भक्तं तन्वयात्सर्वदेवैर्मदविस्तुर्जितं बन्ध ॥ यदस्माने
 वपालकारिण इत्याक्षिपति ॥ मनि ॥ अज्जउत्त. किमप्यसो. दोसंलो. ओविष्णुगारि ॥ राजा ॥ प्रियेपत्रप ॥ आसा
 वहकारेपरैदुरात्मभिर्निवध्यने. पासशनेर्मदादिभिः ॥ विरचिगनंदमयो निरंजनो जगत्पुत्र भुवि नन्दत्रामनि यतः ॥

जा
 र्चपुत्र. हेवीवेकनामरा. लोकमा. आमुदोयकोहि जादछु. अंदेवुद्धि भयाकाहेरुपराइका दोसमात्रदेवुद्धन. भनिः ॥
 मन्तिलेविजिगरि. राजा विवेकजोछन. आसागछेन. हेमनिहेर. अहंकार मुरपभयावडोदुष्टचित्तभयाकि घटियाक
 र्मगर्भलेवडेप्रसिद्धभयाका. मदमात्तर्यमोहादिहेरुलेनानाशकारका कर्मकावासना रुगिडोरिलेगरिवधनमाहालिकन. जग
 त्काप्रभुभयाका आकाशरुत्रिनिरंजननिराकारस्वरूपभयाका शान. अति आन्दस्वरूपभयाका परमात्मा कनपनिदेर

॥ विष्णुभक्तः नतः प्रविशति राजा मनिश्च ॥ राजा ॥ विचिन्त्यपि ये भक्तं तन्वयात्सर्वदेवैर्मदविस्तुर्जितं बन्ध ॥ यदस्माने
 वपालकारिण इत्याक्षिपति ॥ मनि ॥ अज्जउत्त. किमप्यसो. दोसंलो. ओविष्णुगारि ॥ राजा ॥ प्रियेपत्रप ॥ आसा
 वहकारेपरैदुरात्मभिर्निवध्यने. पासशनेर्मदादिभिः ॥ विरचिगनंदमयो निरंजनो जगत्पुत्र भुवि नन्दत्रामनि यतः ॥

धीप्रबोध

१४

हेमतिनिरपराधिपरमात्मा केन वंधन लगाउन्ना भयाका. तनेने संज्ञा महामोहादि जो छनू. पुराण कर्म न्याविडा पुराण न्याठ
हया वंधन मायाका. तनेसे परमात्मा लाइ डोरि देखि कुकाउना निमित्त उवृत्त भयाका. हमेस जो छो पाप कर्म गन्ना ठहीरि
उं. ऐसे संसारमा जसले भलोगयो उसलाई उल्टे लाग्यो दुष्ट चित्त भयाका. मोह हेरुले निन्ना काबोलनु पर्छ. हेमति
भनि आशागन्या विवेकलेर मति विनिगर्छिन्. हे आर्य पुत्र हे विवेक नाम राजा. जसकारनः

तस्ते पुराणकारिणो नृकृत्य प्रवृत्ता. पापकारिन इति जिते दुरात्मभिः ॥ मतिः ॥ अज्ज उत. जदो सो सहज
आगाद सुंदर सहायो. शि श्रुप्य आ सो विस्तु न्तम अलति हुन्. अनप आरौ पर मे सरे मु र्णी दिता कध र्दे
हि दु वि र्णी दे हि वधि अ मह मोह सा चरे नि कि व व तो ॥ राजा पिये ॥

सभावेले आनन्द सुंदर स्वभाव भयाका. सदा सर्वदा प्रकाश. स्वरूप भयाका दे दीपमान भयाका. सेवेति ने भुवन माष सिद्ध भया
का. संज्ञा प्रमेस्वर छ. अनि सुनि छनू. तस्कार संज्ञा प्रमेस्वर लाइ मति. दुष्ट चित्त भयाका. मोह मडा दि हेरु ले. बांधिकन. कस्तग
रि. महामोह रूपि समुद्र विषे डुवाइ दिया भनि. विनिगर्छिन्. मति लेर. रागा विवेक जो छनू. आशागर्भ लाग्यो. हे प्रिये हेमति ॥

राम
१४

नि३

पुरुष जो छः स्वभाव ले भया को धैर्य पनि छोड़ कर केहि कान ले गरि भया को धैर्य लार्छा इछ भनि क्वाग्ना धैर्य मानुपर्छ हे मति । स
वदा धैर्य ले जूझ भया को पनि वडा शान्त स्वभाव भया को पनि वडा से स्वर्ग को मोग गर्दै भया पनि नीति शास्त्र जान्ना भया को प
नि मन वदे सख भया को पसंमय को ब्यहोरा गर्न सक्छा बुद्धि भया को पनि स्मिहेरुले छलिया को पिर्ति हुना पुरुष जो छः स्वभा
व ले भया को धैर्य लार्छा इछ जस्कार नत यो परमात्मा जो छ वडि माया यो को संग हुना यस काल विधि ७५

सत धितिरपुंसे : शानोपवात्र भूरोदयोपधिगत चापन्नः सस्थोपुदीरित्तधिरपि॥ न्यजति सहज धैर्य स्त्रीभिः
पत्नारित्तमानसः स्वमविद्यदयेमाया संगान् पुमानिह विस्मृतः॥ अजउत्त शाकबुध ले आले हाथ सहस्र र
सिरोत्तिरकाराज मायायत धाप्य पुरं तमहमहास सा अरस्त विहिहवीः ॥

पैलार्प निवीस छ भनि से स्त्रै कथा विवेक आत्ता गमार मति विगेछ हे आय पुत्र देवि वेक नाम रा जस्ले अथ काल काले
खाले सुख को तिरस्कार हुदै नबज्ज से सभाय मान हुदो वडा प्रकाश पि समुद्र भया को परमात्मा को पनि माया ले गरि तिर
स्कार हुना छैन भनि मति ले विज्ञि गरि नूर ॥ ॥

जिने

प्रबोध.

१५

॥१०५॥ ६८१

राजाविवेकजोहनु देप्रियये सेसैव्यसत् रूपांशुविचारनकरु नसकिन्नाभयाकिमायाजोहै वैराखी भीरुगभयाका नृत्वांकिं
भोक्तृवाकिकेन देखोउनाकनः शीलभयाकीहदि वेस्पांलेवरपुरुषको चित्तभुलाउदा रुजिगरि परमानमालाई भुलाउ
है हेमति नेरामन साचो कुशाचा लागन भन्नायतन रहे न भनिआपाग छेन साचोको रुधे रुधको साचो एस्तोअनधकि
मगभी भयाकि सुस्तिमायाले आकेएकसभयाको परान्ना जोछ अत्यंत एस्तो हो भनि कोहिनसकिन्ना भयाका काहि विः
कारकन प्राप्तरियाको पनि परमान्ना जोछ संभावनेगनी

॥राजा॥ प्रीय॥ अविचारसिद्धेयं वारविलासिनिवमायाऽसेतोपि भायानु पदार्थं च निपरमपुरुषं च यतिः ॥
पश्य पश्य ॥ स्फुटिकमनिबद्धास्वानुदेवः प्रगाढमनार्ययाविकृतिमनयाजित कामपसंगत विक्रियः ॥ नय
लुप्तदुपलंघ्यादस्वर्णपतिरुद्धिमेनाकप्रभवति तथाप्यथावाठ विधानुमधि रताम् ॥ मतिः ॥

कोयोपनभयाकाविकारलेयुक्तभयाकोहनाकारणले मायाकोसंबंधभूयाउप्राप्तपनि इनेपरमान्नाका थोरेपनि आक
स्वरूपहीनभयनरु कस्तोगरिभन्ना जेहेजपापुष्यकोसन्निधानहुनाले आरक्तभयाकोपनि स्फुटिकजोछ स्वभावैले
भयाकाआक्राखतागुनकन छोइदेन॥

राम
१५

तेसैयस्त्रापरमात्मा लाईपनि आक्रासरूपदेखिनि गराउना निमित्त योमायाजोछे वडैयभुद्धछे भनि विवेकले आशाग
 भार मतिविधिगछिन् हेविवेकनामरा कउनेकारनछ जस्कारणले अनिदुष्टभयाकी योमायाजोछे नरकावडैचरि
 त्रभयाका परमात्मा लाई भुलाउछे भनि भनिमनिले विनिगारिन् विवेकजोछन् आश्रयगछन् हेमति निश्चयजान
 फलनिकेहिछेन कारनपनि केहिछेन सोजैयोमायाजोछे यसमात्मा लाई भुलाउनाकन अविनि भैरहिछ निधयजा

किउरा कारणजेनसातवा उधारचरिदुष्टिअहापचारेदि ॥ राजानंस्वलुप्रयोजने तथाकारणवावि
 लोकमाथापर्वत्तने ॥ सभावः सत्यस्त्रापिशाचिनो ॥ परप ॥ संमोहंयतिरमयंविद्यादयनि निभत्सयं
 निमदयतिविंदवयति ॥ एताः श्विश्चसदहृदयनरा नाकिं नामवामनयना नसमाचरति ॥

नरत्रीपिशाचिहेरुकादाखालाहभुलाउया सभावेसो ॥ हेमति ॥ हेरहेर वडाकटाक्षपानलेगारि हेर्याभयाकासुंदरिखिहेरु
 जोछन् दयाले सहितभैकनः मनुअहेरुको हयमा गडीकनप्रवेसगछन् नर कउन् उपदुवगदे नन् वडैविवेकभुन्य
 भयाकाकर्नगछ सुसितुल्याउछन् वडैविजारचित्तभयाकोपनिगछन् निदाकोपात्रपनि तुल्याउछन् उन्नतभयाका

ना नाप्रकार
 नि आक्रावसंगराउमा
 नि नर
 नि नर

प्रबोध

१६

हेमतिः परमात्मा लाह भुलाउ ना मा दो सो प नि कार न छ भ नि आ ता ग या वि वे क ले र म ति विं ति ग र्दि न् ह प्रार्थ उ व हे वि वे क ना
म रा जा पर मा त्मा ला ह भु ला उ ना को क ड का र छ आ ता ग नु ह व स भ नि विं ति ग रि न् म ति ले र रा जा वि वे क जो छ न् आ र्पा ग
रु हे म ति सु भ व श दु य आ वा र भ या कि मा या ले म न मा ची ता ग या को वा न जो छ न् क लो वा न भ न्या यो व न ले

ह) १८

म अ न्ध

अ स्ति चा प र पि का र न ॥ म ति ॥ अ न्ध उ त्त कि त्त ॥ रा जा ॥ ए व म यो दु रा वा र या चिं ति त्त ॥ अ हं ता व
हु त्त यो व ना व र्णो य सि ॥ अ यं च पु रा न पु रु षः स्व भा वा दे व वि ष य र स वि मु ख ॥ त नः स्व त न मे व पा
र मे श्व रे प दे नि वे श या मि ॥ त मे व च मा तु र भि प्रा य मा सा ध ति ता न प्र णा स न त या

र हित भ या की अ ति वि द्यु व र था क न प्रा ण भ या कि भे ग ओ न् पर मा त्मा भ न्या स्व भा वै ले ग रि ना ना प्र का र का मा ला चं द
न खी आ दी ग या का वि ष य मा न ला ग या भ या का भे र त्त का र न आ प्रे मु न रु पि पु नै ला र्ह आ त्म त त्व को व य व हा र भ या
का र था न मो रा म्भु र आ कि म ह ना रि का म न को वा ट बु जि क न का र्य ग लो भ न्या बु डि ले रा यि ॥ अ त्त न न जि क म र ह ना ले

६५

शम

१६

२॥
 मायारूपे कथा प्रभयानुलेयथा जोग आजी महत्कारिका मनको वानवुजोर नौखे का भया का शरिर पुरव नायोर स्क पर
 मात्मा लार् पनिकि नमि भिन्न भिन्न भया को जसे परिकन नने नौद्वार भया र भया का पुर माग अदो भयो वा हा पछी आफु
 ले च्या गरिया का करिने भाक्ते न सु खितादः खित्वा आदि गुन्या का धर्म कन नजिक मारहा को रक्त पुथ नोछ आशा आर
 क्त गुन कन जसे स्फुति कवि से देखा उछ नत्त परमात्मा विषे देखा उदो भयो भनियो कथा

तद्रूपमेवापने न मनसा न वद्वार निगमीयः॥ एकोपि बहु धाते युविदि देवनिवेशितः॥ स्वचेष्टित
 मधो नस्मिन् विदधाति मनविषः॥ मतिः॥ विचिन्तः॥ अजड ज्ञाति सीमा दा पुन आ विना दि सो जे
 वा जा दो ॥ राजा ॥ न तो सो अहंकारे सा चिन्त स्प जे ए पुनै रान आ परि खेळ ॥ तत ध्या सा विश्वर ॥

आशाग भा विवेक लेर मति विनिगर्हिन मन भा विचार गरिंर हे आये पुत्र हे बी वेरागा जसे महा तारि न छन युव
 यनिको रित सै हुन्दार हा छन भनि विनिगर्हिन राजा विकनो छ आशाग र्धन इने परमात्मा जो छन चित्त को
 जेण पुत्र भया का अपि नो ति अहंकार ले सहित भया का मया वा हा पछि अहंकार ले जुक्त भया का इने पर

मातमा जो कर ॥

प्रबोध-
१७

अज्ञानमुखमयाकिरिडाकेनप्राप्तगन्धार-आकृष्टरूपपनिवित्तिनाभयाकाष्ठदं मनकाचेच्छालेकल्पितभ
याका-मुच्यतेऽस्वादि के अनुभवगर्भाकृदाः बडेजान्नाभयाकापनिमलैराजनाभयाकोष्ठ-वावामहतारिखी
क्षत्रकुलपुत्रमिवशत्रु-धनवत्तु विद्यादागू भारदुन्याकोहि ममतालेगरि-एस्ताना नापकारका स्वप्रभुलेभया
कापसार्थकनमाचोभेआनुदितगरिदेष्टु

जातोहंजनकोममेवजननीक्षेत्रेकलत्रेकुलेपुत्रोमित्रमणुयोवसुवलेविद्यासुहृदंधवाः॥चित्र
सदितकल्पनामनुपतनूविद्वान् विद्वामयीनिदामेत्युविद्युगिनीवहुविधानस्वप्रानिमानुपश्यति॥
मतिःअग्रउत्त-र-अग्नीह-अतशिहाविद्याविश्वप-ओहपरमेस्वरेकधर्तनीभविस्सदि॥एता॥तलज
मधोमुखस्ति॥मतिः॥

भनिराजाविवेकले-अज्ञागन्धार-मतिवित्तिगुर्छिन-हेआर्यपुत्रहेविवेकनामराजा-बडेनिद्राविशे-विस्तारम-राम
याकोष्ठज्ञानजस्ता-एस्तपरेमधुरिविवेकस्वगिरि-उदोधज्ञानकोउत्पतिहोला-भनिवित्तिगरिन्-मतिमैर
राजाविवेकनोद्य-लज्जोलेसहितमेकनउंधोशिरगरिकन-वस्त्यातस्त्वाविवेकराजाकन-देखिरमतिवित्तिगुर्छि॥१७

हे पार्थपुत्र हे विवेक नामरा वडेलु ज्जा का भारले नव भया को शिर भया दया का निमित्त नु पला गिर हनु भेरु हे छ भनि
 विनि गरि नु मतिलेर राजा विवेक जो छ नु आशाग छ नु हे प्रिये हे मति स्त्री हेरु को हृदय जो छ नु छेर हृदय ले सहित
 भया का हृदय नु स्कार नु ले अपराध ले सहित भया गस्ती अपु फन शे का गछु भनिराजा विवेक ले आशाग
 भार मति विनि गछ नु

अज्ज उत किमिनि गुरु अरल ज्जा भर रा मिद से अरे नु ही भु दो सि ॥ राजा ॥ प्रिये ॥ मेर्य प्रोये ए यो चित्त भ
 वति हृदय ॥ ने न सा प ए ध मि वा न्ना न श के ॥ मति ॥ अज्ज उत अस्सा ता इति आजा ओसर स प उत स ध म्मा
 यथा वार वत्थि दस्त वा भनु गो हि अ अ छि अं वि ह न दि ॥ राजा ॥ प्रिये ॥ ॥ ॥

हे विवेक नामराजा अरु को हि न स्त्री स्त्री र जो छ नु आकार स ले प्रविष्ट भया का धर्म अर्ध मत्त को विषय भया का
 व्यापल विषे ला ग्या का आक्रां सामिका गो मन को वान क विघ्न गरि दि छ नु हा धीन ए स्तो स्व भावे छे न भनि नि गरि नु
 मतिलेर राजा विवेक आशाग छ नु हे प्रिय यदि एने कुरा ग छे स भन्या सु नु ॥ ॥ ॥ ॥

जगत्संसारका प्रभु भयाका कहिले पतिनाशन हुन्या भयाका एखापनि परमात्मा नाना प्रकार कामनुव्य का भया अरु जोर को
ही नारकीय शरिर भयाका ननु विषे एके परमात्मा कन ठरे वनाई वा धि कन प्रवेश गरइ कन जसले एखा परमात्मा त्यापनि
जन्म मरने यस्ता पद विध न प्राप्त गन्या तेने व ह्य को भेद गन्या भयाका मोह आदि गन्या का हेरुलाई व ह्य दित सा

तथा हि ॥ वधे को व द्ध धा विभज्य जगता मादिः प्रभुः शास्त्रतः क्षिप्रपिः पुरुषः पुरे सु परमं मृत्योः पदं पापित
नेया ॥ ब्रह्मभिदा विधाय विधिव त्पानांतिकं विद्या शायश्चित्तमिदमया पुनर सौ व ह्ये कता नीयते ॥ त इत्तु
प्रभुत निधानाय प्रबोधोत्तये शमदमादि न्योजयाम इति निष्कृते ॥ ॥ इति श्री कृष्ण मित्र विरचिते
प्रबोध चोदये प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

साक्षात्कार ले गरि देहात्त भया को पायश्चित्त गराइ कन मैले यो परात्मा जो छ ब्रह्म ले संग ऐ कता कन पाश गरि छ भनि
आगे गन्या श जालेर एखा वार्ता होत मोहलो भहेरु को नाश गनी निमित्त अद्वितीय ब्रह्म साक्षात्कार का सिद्धि गनी नि
मित्त शमदम आदि गन्या का आक्राम विहेरु कन आता गरी ला भन्यार नृत्त शाला देखि विवेर मति जो छ नू निस्कदा
भया ॥ ॥ इति श्री प्रबोध चोदये प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

प्रबोध
१७

प्रथम संकमा सवैजगत्ससारजोह - अज्ञानलेगरि प्रकट भया को हो - अदितीय ब्रह्म को साक्ष्यात्कारभयापछि जगत्
जोह सो पनि ब्रह्म रूपे देखिछ - एखे निश्चय गगगरि - विवेकलेग न्या को उद्योग कने सुयोग नाम मोहलेर - एम दोखी
अंकना विवेकलेग न्या को नाना प्रकार का धर्म का अनुष्ठान को नाशगर्न निमित्त - रामा महा मोह जोह न - आकाश
आदिग न्या का मंत्री हेरुलाइ पठाइ राखेछ त्वाविक जोह - हा मा कुल को नाशगर्न लाइ लागिरेछ - नरकोतह

१२॥

ततः प्रविशति ॥ आदिष्टास्मि मूहाराज महा मोहेन ॥ यथावत्सदं भे प्रतिज्ञातं सा मात्मन विवेके
न प्रबोधो दयाय ज्ञेयता भवते युते युतिर्ये युसमद मादयः ॥ सचायमस्या कमुपरिष्ठत कुलक्षयो
भवद्भिरवृद्धिर्मेऽपत्तिकर्तव्यः ॥ तत्र पृथिव्या परसंयुक्तिक्षेत्रवागणसि नाम नगसि ॥ तद्वास्तवग
त्वाचतुर्नामप्याश्वमारोनि श्रेयसविद्यार्थविथततामिति

हेरं मंत्री तत्तन्नुध्या नलगाई कनतिमि हेरुले विवेकाशमदम आदिग न्या का मन्त्रि हेरुका मन्त्र ना को पहिले विघ्न गरिदि
हेरं मन्त्राण्यधिसा मुक्तीदि न्या का लिन उभया की न गरिदु न नो का सिमा ति मि हेर जा उर ब्रह्म चारि पृथं स्ती
वान प्रस्थ भिक्षु डने चारे आधर्म का यनि ज सो गरिदु हेर मोक्ष को दिष्ट गनी निमित्त वडो या न ग पुति मि

महर्षि
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

न्याहो वडा यज्ञ आदिकर्मको सुदता न्याहो वहने काल देखिनु अग्निको रोम कर्मग न्याहो अह जस्तो रो भनि चित्ताहो तपसि पनि व
देहो मनि सहे प्रकाले तेन मा कहिहो न जपनि मुख ले गुरि वडा जा न्याहो हरिकनखी पुरुष रूपि जगत् जोहो सर्व धाति छ भनि
सस्त्रा कथाहा कहिहार र भगो छ केहिवाला लागी हे नार क्या बोल्यो दे भगो कह कोहि पो दासि नो छ गगा काति र देखिनु स
स्त्रा लमा हा प्रसम मुख मा आउनु लागि र हे छ कहि गरि आउ छ भ ह्य न्या वडा बल ले प जलित भया जस्तो तिने लोक लाई या
भग न्या किन तयार भय जस्तो नाना प्रकार का वचन ले गरि अतंत जालि दिना कन नयार भजस्तो वडे बुडि ले गरि तिने लोक लाई या

[illegible]

प्रबोध
२०

मजोह अकागह कस्तोशकभन्ना योपोवासिजोह निश्चयेलेगरिकेनी श्वयेलेगरि दहिनदेश का राखनाउभयादिनगरदेविन
थाउ न्याहालाभनि स्तुतोवाकागुछ तस कारणातह सेसेपोवासिदेविन हापुजभयाचहकालकोदधियासमाचारकोचवरपाउ
भनि स्तुतकथा देभलेकुहदाभया वाहापछि अहकाबले नृपसाला मापवेसगमार केहिले लून लाग्यो वदो आश्चर्य जगत्स
सारजोह मुखकुरे भयाको भयछ काहा भन्ना जान्या भयाकाप्रभाकर आदिगयाकाकासिहेरुको मजजोह सुदोरहे नछ
भाकसेलेकथाकोपनि नतजान्या कोरहे नछ भन्ना याय भाव्यको व्याख्यान सुनेन भनिकाबोलु डोसले कथाकोमहा भाव्यपनिउ

तथा कथामि नूनमयेदक्षीनराक्षदेसा दागते भविष्यति तदेतदस्मादायस्यहंकारस्मवि तातमनुसरिष्या भीति नन
प्रवित्तत्वंहकारो यथानिर्दिष्टि ॥ अहमुखवहुलजगत् तथाहिने वाभा विगुरोर्म तन्निदिनतो तातिनंदसेननननशात
महोनवालिकगिरा वाचस्पते काकथा सूक्तनापिमहा दधेरधिगतं महावृत्तिने सिनासु क्षमावस्तु विचालरात्रिप
धुमिः स्वस्थे कथास्थियते विलोके सेनेजावदधविधारराविधुरा साध्यायाधयनमंत्रनिरतावेदविज्ञावकास्वः ॥

वडादुखलेपनिजान्ननसकिन्ना भयाकाबहाको विचालभयाको वनकनकहन्ना डीवधा स्त्रपनि सुंदिरहे नछ स्तुतेशकार
लेजगत्स साले रजोह दुवेछ स्तुताछदा मापनिहामि पंडितहेरुलाई विचारकागनुपछ भन्ना बुद्धिले गरि र्मनुष्य
पसुहगले कसोगरि स्वस्थचित्त भेकन रहिछ भनि स्तुतकथा कह्योर वाहापछि वेदमात्र पक्षीकनहेपोर बोल्छ जि

कोरहेरुछ

पुनः
क

रुमजोहनु

राम
२०

सोरोभमिनिधयभयाकानहुनालेगरि. वेदमात्रवर्ग्यभयाकाहुनालेवेरताइडवान्पाहुनभनिसस्तोकुरीबेलोरफेरिअ
 कजिगामागयोर. वेल्ह. निरहेरकस्ताहुभन्यमुक्तिहवसु. भनानिमित्त. सेमासलिन्याहोनन. भिक्षामाउ. नाकासजिलानिमा
 जसन्नासन्नासलिन्याहुन. ताहिहरेखाउनानिमित्त. यन्मेमात. अड्डिनभयाका. मुदमात्रमुडनगर्गभयाका. परिउने
 ननृत्तपतिअपके. हाभिवपरिउनेछौड. भनिअमु. सहोनिगर्गभया. सस्ताघतियापुरुअजोछन. वेदानशात्रलार
 नासगछन. भन्योर. हास्यगरिकनवेल्हप्रत्यक्षोदिप्रमानलेसिद्धभयाका. एसलोककास्त्रीपुत्रारिसुयइकहन्ना. भया

२५५

पुनरत्यगत्वास्तेचभिक्षार्थमावगृह्णन्त्यपतिवृत्तामुंतीतिमुंशः पदितंमन्यावेदान्तसाख्यमाकुलंयति. विहसे
 प्रतेक्ष्यदिप्रमासिद्धविरुद्धार्थभिरिववेदान्तायदिशास्त्राणिवेदैः किमपराध्यते. यदेतेर्वाहू. मिअ. रामनि
 गुरुतरदुदितोदयायपुनरन्यतोगत्वा. एतेचसेवनाभुषणादयोदुरभ्यस्ताक्षरादमता. प्रवाच. तेपिपाचेशअ
 भिसंभाषनादपिनगरानकप्रयान्ति. तदनेदर्शनपथादुरंमहिहरणीयाः पुनरन्यतोगत्वा.

तसाख्यहरुजोछ. यदिशास्त्रहुन. भन्यासेमेलेकमा. नानाप्रकारकासुखदुःखछनः. स्वर्गादिलोकछेननभन्यावेहहेरकाकनउत्थ
 पराधछर. वेहलारनमानु. जोबोहहेरलेसंगवेल्हपनिवडापाववेल्हदिगलार. समर्थहुँछ. भनिभन्योर. फेरिअ. कीजगा
 जयोरवेल्ह. जोवादिमास्त्रकोअभ्यासेगर्गभयाका. इनिनिहेरुजोछन. साक्षान्तपथुहोन्. तनेब. निवडापाखडिभयाका. जो
 पारंउडेह. संगवेल्हनालेपनि. मनुअहेरुजोछन. नरकमाजाछन. तस्कारण. पारंउडेहजोछन. दर्सनगर्गको.

प्रबोधः

२१

योगपदैर्ननुभन्तानिमित्तः प्राफुदेक्षिपुधोसारिगवुभनिभन्मोरः फेरिचर्काजमागयोरः वोल्कः गंगाकालहरिले अतिचिर्सा
भयाकापथ्यरमाः श्रोद्धायाकाः अतिगमाः भयाकाः असनहेरुमावसाकादुराकापुषले अतिशोभायमानहृदाभयाका
धोयाकावस्त्रगम्भावाः सकापात्रले जातिउज्यालोभयाकाः वेठियागरिवर्णायाकाः मनिकामालाएकरमणिलेगरिमत्र

विजयोयदरागभरः

इतेच गगानिरनरंगतिः तवशिलाविन्यस्तभाहृदु सीसंविष्टाः कुशमुष्टिमंडितमहादंजः करंडीजोलाः पर्या
यग्रथिताक्षमुत्रवल्यपमेकवीजगुह्वग्रासामुलयाहलनिधनिनावितामहोदयभिक्षाः ॥ ॥ ॥

मानिकोग्रदुगगनुः निदुरकुरामाः अतिचंचलकनूः अउलाकाः अयभाजनकास्त्रादांभिकहेरुले तसारमावडाधनि
हेरुकोधनजोहः हरिलीकनूः एस्कुसमावडेः आश्वर्यलागुह्वः भनिवोल्दोरः फेरिदोस्वो जमागयोरः रज्जिनिहेरुजोत्रसन्नासि

२१

भन्नाहललेगारि. निउनाकोसगिलो. गन्नाभयाकाहुनले. रसलोकदेविन्. पप्रैरलोकदेविन्. भृष्टगरयाकाहुनभनि
 एस्लोकोरोबोल्को. फेरिरोस्मानगामायोर. हेरिकन. केरिबोल्कोलागो. बडोअभयादेयियो. छोकाकानजीककाभुमिमा
 गाआकोभनि. अलोभयावांसकालिगाकाअग्रभागमातृतरादछन्. नानाप्रकार. वडोमोलप्रन्नाभयाकाहुनरउ. वस्त्रजन

पुनरनेत्वगतायनेचिद्विदडिव्यषदेसजिविनेहेतमा. हेतमार्गपरिधृष्ट. पनरन्पतोगत्वाविलोक्य. अये.
 कसेददारेणान्ननिशानानिषा. मुदंशकोरुताउवितुहोतसित्तसुक्ष्मावरमरुस्वसितस्ततोविन्यस्तकक्षाजिन
 दसदुत्तलचआलोत्. खलसूक्ष्मलमनवरतहोताजागंचिपुपश्यामलिकेतगगनमंडलममरसरिनो
 नानिदूरतीरेविभात्याअमपदेनूनमद. कस्पोपिएहमेधिनोमृदुंभविष्यति. भवतुयुक्तमस्माकसनि
 पवित्रमेतद्दीविदिवसनिवासायस्मानप्रवेसेनाटकयेति. विलोकेअले. मृदिंदुलाक्षितललानभुजो

गालेयुक्तभयाकोचारेपदिमाराव्याकाद्वनू. मृगचर्म. पथर. चमसनीउभयाको. चखालनाउभयाको. ओवलभयो
 मुसलभयो. एस्तेनायकारकायतको. प्राजहेरुले. युक्तभयाको. सद्रासर्वदा. होमगरियाका. धिउकागंधलेजुक्तभयाका
 धु. बालेस्वामवर्नभयाका. आकासमदलले. युक्तभया. एस्तेअस्थाननोह. गंगाकानिरमाअतिरासोदेविनू
 कस्कोयो. आअमस्थानहोभन्ना. विश्वयलेगरियो. आअमस्थाननोह. कोहिवडागृहस्थिकोघरहोलाभयो. रामि

विश्वेस्वत्वायसंकलि
 दशकंधोपष्टचिपुकोरुकोलजानुं
 हिंदुकिरु
 हिंदुकिरु
 हिंदुकिरु

निमित्तः योऽप्रतिदीप्त भयाकाजगाः हवस्व वधि येह भनिभन्योर ज्ञानिमित्तप्रवेशगनोऽप्योक्तेः द्विप्रकाशगर्ह हेयोः
 र गोपि चन्दनका अतिवातुता विंदुले युक्त भयाकन निधार वाहु धाति पेठ गला व्योढो चिउदो उरु गलागतु
 जस्का शिखाका अग्रभागमा कानमा कतिमा शोभायमान भयाकाह कुस्तजस्करेस्ताद भुजोह साक्षाः सात्तमुक्तिधा भया
 जस्तोगरिप्रकारहुं ह भनिभन्योर हवस्व वधियाह योदं भवरासरजा न्हु भन्योसरराभापनिगयोर तपात्रिहंरूकाकल्या

बुझाग्रहं कर्तुं कालानि विराजमानदर्भा कुरः स्फुरति मुक्त इवै अदम्यः ॥ भवतु पप्पामेने उदं सत्त्व कल्यात भव
 तामुः त भः कुकारेणो वतवुरयति तत्तप्रविशवतुः समधुमं बहून दूरतरयवस्थीयतामुच्यतः पाः
 दोप्रदा जस्त रासमपदप्रव्यमः अहंकारः क्रोधं ध्याः पापतुरस्व देशाज्ञाः स्मः यत्र सोत्रिया नति
 धीनासनपाद्यादिभिरपि गृहिणो नावतिश्रुति नयेदं भः हंस जयासमाश्वासयति वदुः

रजोह आशीर्वादगर्दीभयो वाहापद्धिदं भजोह वशहुंकारसंदेले गरि लोअहंकारलाई आप्ता नजिकमा आउनरी
 यनवाहापद्धि नत्तवालादं भदं भको शिष्य भयाको वालक प्रवेशगन्योर वडे कैहिवाल्नला ग्पोरेवृत्तनः तपत्रिले नुठे
 राजगर्नु हवस्व जस्कारनतं ह रस्व आश्रमस्थानमापाउ धोई धुदु भैक प्रवेशगर्नाको गोगच्छ भनिविनिगयो वालकले
 अहंकार केउर भनिविनिगयो दं भकासिध्यालेर अहंकारगोह वडे क्रोधले सहित भैकन केहिवालुला ग्पोरेवृत्तपापि वडा
 घनियादेसमा हा मिहंरू आयाहो जुन्देसमा पहिले कहिले पनि न आयाका वडे वेदशास्त्र कनजो न्यो भयाको पनि पाऊना

शमः भनि अहंकार

लाई गृहिस्तिहेरुजोछन् आसनपाधदिले गरि पूजागर्गरहे नछन् वडा दुष्ट चित्रमया कारखाछन् भनि अहंकारले भन्नाकेतु
न्यार वारापछि दभजोछ सोपनि हातकाचे छाले गरि हेरु अहंकार वडा कोध गर्नु हवर् भनि पुगाउनु लाग्यो बाँझो पछि दभ
कोशिय भयाको बालक जोछ केहि बोल्छ दुरदेशादेशिन् आयाका वडा पुन्य भयाका पनित पात्रि हेरु काकुल शीलादिजो
छ वठिया गरि जान सकिचन भनि पूजागर्नाका योग्य छने पाउजन्का रेखा दभजोछन् एते प्रकारको आताग र्छकी

एव साराध्यपादा प्राप्तापयन्ति दुरदेशागत स्या र्थस्य कुलसिलादिके पुरिभुरि अष्टकनामधाम परमं चोन्नमोनः
पितातप्तुत्राश्च महाकुलान्निदिताः कस्मान्नत्रयामपी प्राप्ताशीलविवेक धैर्यविनयाचारैरहं चोत्तमः दभः वतुष
स्पतिः वटुसामुधतिगृहिन्ना भवन्पादशोचविधिर्यविताम् अहंकारः संगतुभवको विरोधः अवक्रियगत्
थाकनोपसर्वनिदभः दत्ताः पिउत्वा दुरेतावस्थीयतामू केडाचित्तवगाहताः प्रस्वेदकारिका प्रमनिः

भनि दभकासिखेले विनिगप्यारः अहंकारजोछन् बोल्छ हेरु डोषापाप्मा भयाका दभः सेकालमा हासोपनि कुलसिला
रीजोछ कसोरहेछ कउन् देसमावस्या मामिरेखाछोः कस्त्रोगुनहामिरेरुकोरहेछ न्यारिसवै विचारगर हाआवडाकु
लकोकथाजो मुन् भनि भन्यारः कपाहा कहनलाग्यो हेरु दभः गोडनान भयाको वडा धैर्य देशछ तसेगोड देसमापनि
अतिसुन्दभयाकि भनि देसमा वडे हरणान भयाकि राधानाउभयाकि नगरिछ तसेनगरिविषे भुरि अ

२३

एकनाउभयाको कसेवडाः मनुबेकोः वडोउन्न मभयाको धरदः तसेधरमाः वडेप्रेमभयाउभमे नाउभयाः हासावावाछन्
 ननकापुत्रहस्तजोछन्ः सापूनि वडेकुलिन भनिजगत् ससारमा प्रसिद्धछन् तनेपुत्रहस्तमाः पनिबुद्धिसमावः पंडितधर्मः
 नमिताः वधियाः आचारभयाः ससैनानाप्रकारकागुनले गरिः वडिप्रेमकुमनिः अहंकारलेः आक्रुकुलासीलः गुनको कथापु
 नायारः दंभजोछः आक्रासिथ्य वालकलाइ हेछुः वाहापछिदंभकासिथ्यलेत्ताः वाकोगाग्निहातमालियोर हेभन्न् अहंकार
 पाउधुनूहवस् भनिविजिगयोरः अहंकारजोः वोल्लागेपाः ससंगछोः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

भन्नां चठिछ. विरोधेन भन्नेरः पाँउधायोर. नजिकमा वल्ह्या निमित्त. अहंकार जोछ. जसै आयेत कठ कट्टा वगारि. दाँत बुजाये
र. ठोठे वस. नजिकमा वल्ह्नेन. पशिनाका बिंदु जोछन्. फेलाउनु छन्. भन्नेर भन्नेर. अहंकार जोछ. कहि वल्ह्ने. कतेन भयाको बाइ
गलाई. पूजा गन्थो. उपायदमै छुट्छ. भनिठ्ठा गन्थो. अहंकारले. दमको शिष्य बालक जोछ वल्ह्ने. हे बुझ्ने. यो कुरो यस्तै छ. इनछुठ भनि
विजिगयोर. दमको पूजा गर्छन्. भनिकथा कह्छ. वडा र राजा हेरु जोछन्. सापनि दमको पाउका नजिकै काट्छि. भागलाई. आका
शिरकारन्का कान्ति लगरि. पाउ नछाई कन. आरति कन गर्छन्. सस्ते प्रकारले. दम हेरु जोछन्. राजा हेरु लाइ पनि. पूजा गर
उनाका मथ भन्नाको. बाहिरीको आउवर भयाका छुन्छन्. तपस्या विद्या लगरि. भिनभुद्ध भयाको छुन्छन्.

२३.

वेन न भनि विनिगयेर देभका सिधलेर अहंकार जोछ आप्रमममा आया के वात बोल्छ देवाल कयो देम जोछ देभ हेरु लेठ ग्यानी
 गस वेस क्य करह छ हव सयो आसन विष वस छ भयोर आसन मा वस्ला कोइ छान मे गन्वा त मे काल मा वडा पूज्य भया को देभ हेरु को
 आसन जोछ ऐसा प्रकार ले गरि अन्न पुरुइ छ ले वस्ला को जो पछे न भनि विनिगयेर देभा का सिधलेर अहंकार बोल्छ देवा
 पुपुद्धि भया दक्षि न राखान गरि विषे हा मि हेरु ले पनि दा भि क हेरु केयो आसन जोछ वस्ला को जो पछे न हेरु मुख सुन त ले
 उजाल कुल मा जय भया कि हा मि महारि पनि छे न नु मे लेत वेडे वेडे जा न्हा हेरु का कुल मा उत्तम च भया की अर्त्त ने

पुनश्चुठाकाचनकन्यकारखनुमयातेनांस्मिताताधिकः अस्मिन् लकमिवमातुलमुतामिष्यामिसप्रायतस्तत्संपर्क
वसान्येयास्वाहाग्रीपुष्पतिपाकता द्यमः कुक्षनूयधपेवनथाप्पूष्माककमविदिनवृत्तांतो भवान् ॥ ॥ नयाहि
सदृजमुनगतोहंपुर्वमभोजयानः सपदिमुनिनिरु शैरासनेयुजितेषु ॥ ॥ सपथमनुनियवहरणागोमयाभ
परिमृजितनिगवाधुशवसितोस्मिः अहंकारः स्वगूतं अहोदाभिक आह्वन स्यात्पुक्तिः विहिज्ज अथवाहं भस्मेव

सुदरिभयाकि कोहिकन्याजोछ विवाहगयाकिछ तस्कारगले हाआवावादेविनु पनि मवडेथेष्टछु आचारपनिमेरावठिया
 कुभनिकइछ जस्कारेनतंरुमाभालाकोमिनकासायाकिछोरिजोकेरु मयेभकोपनिकोहिधनियावातलाग्पात्सेसंगवसुठ
 ठकोल् चाले गरिभन्नानिमिन्न पनिपियारिभयाकिपनिआफ्री खोलाइछेडिदिया तस्कारगलेआचारपनिमदेउवडो
 छेभन्ने अरुकारलेरुदंभयोल्छहेबुझन आचारभयो सबधभयो इदुवेकुरालेगरि तपाइवडेथेष्टहुनुहुयोरेछ साचो
 होतैपनि हामिकस्तछि कउनुहुकउनुविआइनु छेउछ भनिमोवितांननजान्याभयाकातपाओहुनुहुछ तस्कारगा सुनुह
 न्नुम पहिलेभगोछुबुझाकाधरमागयो तसेधरागा मा मुनिहेरुलेवडो असमदिंदाकासमयमा तपाभिलेमेराकाखमाव सपछ

भवति वा वत्स कोषप्रकाशः

भनि जपथंगरिभेयुजावशेरि ब्रह्मलेमोरलेयुक्रमयाकर जललेधुदुगमाका आश्रकायमावसायाथाभन्योर ब्रह्मलेपनिरको
 पुजागन्थात मनुष्यहस्तपुजागछन भनि कउनु कहुभनिवमलेआक्रुपुजाभयाको कथाहाकेहाकोसुन्योर अहकारवोल्हव
 शेआश्रयछ दाभिकब्राह्मनको कमेलेनपत्ताइसक कथागन्थाकोसुन दडेअनर्थवोल्ह भन्योरको धलसहितभैकनकडेप्रका
 शगरिकन वोल्हलागो हेदभः पारखावशेगर्वगर्हम् अरेइदुजाछ सोपनि अहल्याकोपोतिवर्त भगगन्थाभेयाको कउनु
 कोभेराअधिलतिर भन भनब्रह्मापनि कठिनहोभन योजगत्तसारमा ः क्रिषिदेरुका पनि उत्पतिस्था न :

आकिमेवंगर्वायसे अरेकेववासवः कथयको कपदो दुवोवदप्रतिवभुमयोजगतिका अथिनामनि॥

अवेहितपसावलमम पुरदरागाज्ञतज्ञतचपरमथिनापततवामुनिनाज्ञतमदभः विलोकेसानंदम् अहो

आथपितामहोअकारः आयुदभोलोभात्मजोहवो अभिवादये ॥ अहकारः वत्सआयुया भववोलेस्वत

सिमयादापरातेइथिः । सप्रतिचिरकालविषयकोदाहकतयानसम्पक्षतेभिजानामि अथयन्कुमास्यानृतसंकुसलमदभः

कोकथान्तकउनुगनु महलाकिहोरिदेचिन्व्यासकाजन्मभयोकोहो गाथादेचिन्व्यासजन्माकोहोइने सवेअरबिदेरुजो
 छनु कउनुगनागनाको जोगपछनु भरातपसाकोसामर्थकरोहो जोनुशयरुइभयाका वदामया मुनिहस्तभया इनेस
 वेजोछनु मेतपसाका जोरलेगारि पानकुउनु इडादिजोछनु सोपनिभेरा अधिलतिर कउनुगननागनाको जोगपछनु भनि
 भन्यो अहकारलेरदभवोल्ह वेदेमाने भयाको शापिनाम तपाई अहकार हुनुहुन्छ वडे पुन्यभयाकोलोभ
 कोपुव मंदमई मनातिलार्ह आशीवाददिनुहवसर भनानिमित्त तपोत्रिकाचरण लाई वि ति ग छुः

भनिदभले विनिगयो. अहंकार छे उर. अहंकार जो छन. आतागछे न. हेवत्त. हेवालक भुया का दम. वडेरी. धौयुभयाको भयास
आति वीडियो. दभलार. अहंकार ले. हेदंभ जो लार मेले. दानर जुगका. अन्त विषे देखा को हुनाले बुछे पनि भेगभा.
नस्कार नले. वाठिया गरि. चिहंसा किन हेव भ. कुमा कुमा भयो. असत्ये जुग छन. जाकु सत्त छ भनि साधो. अहंकार ले
र. दंभ जो छ विनिगछ. मेरो कुमार भयो को असत्य जो छ सो पनि राजा महा मोहका आशाले गरि. नृत्प साता विषे वरपाका दम
नि. विनिगयो. दमले. अहंकार जो छन. आतागछे न. हेदंभ जो लार महत्ता रिवावा भया. नृत्प सातो भपनि कुशल छन भन्ना अहंकार
अथ कि सो प्यत्रेव महा मोह साप यावर्तने. अहंकार. अथ तव माता पिता रोत्त सातो भावपि कुमलो. दंभ अथ कि ता
वप्यत्रेव वने. तया विना लक्षन मपि न पियामि. दंभ. आर्यमी. अ. पुनरुक्तेन प्रयोजनेन प्रसादः कृतः. अहंकार.
वत्स मया महा माहस्य विकसका शान्. अत्राहित. अतने नृत्प सात प्रसु मागता स्मि. दंभ. तहि सागत मेवार्थ से. यतोप
हार जस्यार. दुलो का दाग मन अयत्ने. अस्ति चे कि वरति. यद्देवन वारा नमिना मन गरि रा धनी निपु पितति. तत्राग
मन मविष्यति. अहंकार. कि पुनः कारण वाराण त्याग नो नमना महा माहस्य वस्थान. दंभ. आर्य ननु विने कापरो धयव
लेर. दंभ जो छ विनिगछ. हे अहंकार. नृत्प सातो भजो छन सो पनि हसे जगता सा छन. नृत्प सातो भल विना. एक क्षन पनि वलस
क्तिन. हे अहंकार भना मेले कउ कारण ले गरि. हा मान जिक ना पाउला गनु भयो. वडे प्रा रा भुभयो. भनिदभले विनिगयो. अहंकार
हंकार जो छन. आतागछे न. हेवत्त. राजा रा विवेक. देखिनु भयाको. हा मारा जा माहा माह को पदे पटियायो. कुरे मुनि योर न
स्कार नले. आज काल मोह को कु सौ समाचार छ भनि बुग्मानि मित्र. आया को छन भन्ना. अहंकार ले दंभ बोल्छ. पुत्र भयाको
तथाजिले. आहा पायला गु भयछ. वाठिया हो. जसका रनले राजा महा मोह. पनि र. दुलो क देखिनु आउछ नरे. भ.

प्रबोध.

२५

दासुनीक लोकमापनिकुणचलिरहेछ. देवनाले बनाया की वारा नसि नाउ भया की वडा वडा रा जाहेरु लेव ह्या निमित्त नगरि छन मेरा प
निव झालाह जो गप भया की तने कासी छन. भनि एको मनमा विचार गरि. कासी विसे. वा मगुनी निमित्त आउनु भया कथा सुनि
छ भनि विनिग मोद भलेर. अहंकार जो छन वोल्छ. हुंद भ कउ कार नल महामोह को सवय कार ले गरि कासि मा. बाहुन्या छ भनि
शोधो. अहंकार लेर. द भ वोल्छ. हे अहंकार. विवेक का जे र भ मेन. उखेलि से त्ना ना सगनु. त से निमित्त. काशी वा स.

तथाहि. विद्या प्रबोधादयजन्म भुमि वारा नसी. बुझ पुरि दुर न्या. अत कुल क्षद विधि विधि तु निर्वित्तु म वे छति नि
समेव. अहंकार समय. यद्य व समय पुनिकार य वा य म ध. य न. प्र मे म विद्या प्र द न रा रा पुर वि ज पी क रु ना वि धे य चे
ता. कथयति भगवानिहान काले न व भय का तुर तार क. प्रबोध मु. द भ. स त्व मे त त नो पि नै त्काम को धा द वि भुता ना
ना स भावे न्य तथा सु हर ति ते थि का.

को सर्व दा धा. इहा मा य छन. महामोह ले भनि विनिग मोद भलेर. अहंकार वोल्छ. विद्या जो छ. बुझ मय भया को मन को रति
कहि छन. त से रि तिले युक्त भ. यो कि चे न न्य जा छ. प्रबोध के हि क. तने हुं वै विचार. प्रबोध को उत्त न कु न्या ज गग भया को के
लेप नि ना स हु न्या भो या की शिव को पुरी भ मि प्र स्या त भ या की. स सी का सि छन. तने का सि वि से. कुल का ना रा को इ हा ग र्पी
भ या का वि वे क जो छ सर्व दा. व र्णा को र्क्षा ग छन. भनि विनिग मोद भलेर. भये ले जु क भे क न. अहंकार वोल्छ. हुंद भ.
यदि य ह प्र कार लेर. मु क्ति रि ना को. समर्थ भ या कि का सि छन. भ न्या वि वे क स ग हा मि हे रु ले स क छे न. ज र्कार न ले ज ने
काशी पी से व डार स य ले युक्त भ या को. न जा न्या हे रु वि वे क रु ना ग न्या भ वा को. स र्ना सा श्मा त् म हा दे व जो छन. सो जि राम
२५

समय

वहेरूकामन्या विचेसंसार देचिनु भयाको भयले वडाका नभयाका प्राणि हेरू लारता न्या भयाको कोहितारको पदेस कन कहं छुनु भवेला
इमुक्तिगराउछं नभनि आतागन्या अहंकारलेर नभजोल्छु हेअहंकार तारको पदेस गरिसि वजोछु न भवेलाई मुक्तिगराउछ
नभन्याको किरो साचोरो नेपनि यो कुरो जोछ मामको धनो भले युक्तमया प्राणि हेरू लाई सभागरि नसर्व भयाको क
ठिन् कुरो हो भनि विनिगन्या दभलेर वेदिक हेरू पनि तेसे कुरो कहनु छुनु जस्कार गाले होत पाउ जोछु न प्रमस्वरको
मात्र प्रजागछु न जस्को मन न जोछ वडु। तैका मानामा लाग्नाको छेन विद्यातपस्या की निज रक्षा वडुने छुनु

यस्य हस्तो च पादौ च मनश्चैव सुमं यते विद्या तपश्च किर्तिश्च सतिथ फलुम भुते न्ये पथे तावकेन चि दुक्क भोजन एव ख
लुसं प्रो देवो मोहमहो तेन निस्पंदे श्व दनानां स्फटिकमणि शिला वरिकाः सखिय तां ममा च नाय मार्गाः प्रसरन्तु
परितो वारि धारा गृहे सु ॥ उद्धीय त्तो सम तां स्यु रुरु मनयः येन यस्तार गाना धु यंता सो ध मु ध स्व मरण ति ध नु धा म
चिवापताको दभः श्यार्थ पत्मा स श्राम हरान् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तने पुरुष जोछु न तीर्थको फल पाउछु न भनिरुखो कपास दभले विनिग दो भयो अहंकार छेउ तसे कालमा नृत्पशाला विचे
कोहि पुरुषले कहि कुरो कहनु लाग्ना रज न हो निश्चयने गरि राजा महा मोहले नृत्पशाला मा पाउला नुहुंछ न स्कार गाले ना ना प्र
कारको चेदनले लेपन गरि मनिर न हेरू लेवनाया पठागि निजोछु न वठिया गरि वणाउ नो ना प्रकारको रेव लग्नु निनि
त वनायाका जल यजका माग जोछु न वहुने प्रकारले युक्त भयाको वनाउ सवे जग्गा मा जलको फोहोरो छोड चारे दिशा
मा वेदे सुभाजे जूक्त भयाको मनिमो सुभं माला गडाका तारणको माला जोछु वडेयो भाले युक्त भया वनाउ
चुन वनेले युक्त भयाका अति उच्चा हवेलिमा श्रद्धा नुवरोवर चिच विचि वभयाका अति उच्चा पताको जोछु न वनाउ

कार

प्रबोधः

२६

जसे नाना प्रकारले गरिः वडे स्वभायले युक्त भयाको सहर मोह चना उभनि कोहि पुरुष मोह . एसे कुरो वोल्तु लागो कोथियो न
से स मय मा . अहंकार संग दु भजा छ विनिग छ . अहंकार . राजा महा मोहले हा मान निकमा पाउला गु भये छ न सप्रथिता
जिले पनि उठिके न राजा महा मोहलाई . सत्कार पुर्व पुजा गनु हवम . अहंकार न मा राजा गनु हवम . भविष्य हंकार छ . विनिग मो दम
लेर . अहंकार ले पनि राजा महा मोह पाउला गु हवम . न्याव किये छ . अहंकार . अहंकार द भजा छ नः नृत्त काला देखि न
निच्छंदा भया . वा हा प्राज्ञ खे वे सवे कर मु दोथेले . सहित भया का राजा महा मोहले प्रवसग . पार . महा मोह जो छ न

तत्पुत्रु मने न संभाव्य तार्थेणः . अहंकार . एवं भवति नि निष्कान्तैः . प्रवेशकः . मतः . प्रतिशत महा मोह वि भवत
अपरिवाह . महा मोहः . विहस्य . अहंकार . कुशाज उधियः . तथा हिः . आत्मा सिद्धे हा द्य निरिक्त सुनि मोक्तो सलोका
नेरित फलोनाः . आकासे यमा क सतरः . प्रमुना तु धिय सीसा दु फल प्रमुनो . इदं च सक पोत कले ना विनिर्मित पदा
या वष्टु भेज ग दे नै दु विद उधे वं न्म न्मः ॥ ॥

हास्य गरिक न केहि कुरो . आजा गद न . वडे असाये छ . उडि हरा या का मुख पुरुष हेरु जो छ न . वडे निरंकुस भया का जसे न मा
आयो . तसे आहु न्दर हा छे न . कस्त निरंकुस भया का पुरुष जो छ न . एसे कुरो वोल्तु न . चार दाखि न भिन्न भया को आ
मा भुन्छ न . मोहि आतमा जो छ . स्वर्ग मार्गे कन . स्वर्गादि मुख को भोग गछ . भनि एसे वा जग नु जो छ . आका सरूपि ब्रह्म का
फल देखि न . उत्पन्न भया का . अति मोठो र समय का . फल का उत्पत्ति भावडी . आसा गनु . जसो हो साख का विचार नु गरी कन .
आर्क्ष बुद्ध क कल्प ना गरि . उत्पन्न भया का पदार्थ . को अगि करण ना ने गरिकन . दुष्ट चिष्ट भया का . एसा पुरुष हेरु जो जग संसार जो छ

शमः

२६

कति

कसोगभन्या उपांन जो आत्मरूप बस्तु दे दे न नभया का पमि आत्मा के न आत्मा छ भनि ससो भुयो वो ल्या भया का अतिकहे
 सले गरि पुन्य न दे सनाले शरिर दे यि न आत्मा छे न भन्या भया का ज जो दे यान से वो ल्या भया का ससो हा मि ह रु जो धो व दे शो
 डा का पात्र भया का नास्तिक प नि ग जे न र पर तु विचार ग रो भन्या आत्मा छ भन्या नास्तिक कु न कि आत्मा छे न जो छ सरि रे छ भन्या
 भया का हा मि नास्तिक कह भनि वो ल्या मे हा मो ह ले र शरिर दे यि आत्मा भि न छे न भन्या क र मा दो भो प नि अति प्र मान भया को
 वा न महा मो ह अरु कर जो छ न ग छ न वगे अ धि यै छ कानि या को सरि र दे यि न भि न भया को आत्मा जो छ क से ले दे यो को छे न
 न स भु थ वार वार व किया गरि विचार गर स से वे व हा र दे यो ले प नि आत्मा छे न निश्चय जान यदि आत्मा छे न सरि र मा न भन्या

अभया का प

तथा हि यन्त्र सेवन दस्ति वस्ति मि भया जल्प हि वा स्ति के वा ची ले र्ब ह भि स्त स त्प व न्न सो नि द्या दान ना शि का ॥ हे रो प श्न त न
 ज्यो यदि पु न्छि आ द तो व र्गि गे दू छि कं परि ना म रूपि न चि ति र्जि वः ए थ क रि व ॥ अ पि च न के व ल ज ग दो मो व न्ता व द
 सी धि र्व च्छा तः ॥ तथा हि तु ल्य त्वे व पु र वा मु र्वा द्य व य वे व र्गि क र्मः की दृ शः स्त्री च य व सु वा प र स्य द मु भे दो न
 वि द्या व य स ॥ हि मा न्या म थ वा य य ए ग म ने स्त्री गा ण र स्य गृ हे का र्य का र्य क था स्त था पि य द मि नि पो ह सः कु व र्ते ॥

थ जल तेज वायु अकाश इने पंच महा भुत ले गरि व न्या को सरि र जो छ चै त ने ले यु क्त भया को कसोग रि भन्या उपांन जे से
 पंच भुत का लु पा र न को उ त्प नि कु न्या ले गरि उ त्प नि हु नाले गरि उ त्प न भया का चै त न्त्र ले यु क्त भया को शरि रे छ पु मान दे य न्या
 ले शरि र दे यि न दो सो आत्मा छे न निश्चय जान ज से छे र सु पारि ला इ रंग उ त्प न्न ग ना को सा र्थ थ हं छ न स्त्रे मि ल्या का ण थि श्या
 दि आ का स हे रु का ण नि चै त न्य उ त्प न ग र्ग को सा म थ्य कृ छ त र्ग थ य शरि र दे यि न आत्मा भि न छे न से स्त्रे सा स्त्र को मि द्वा न हं द हा मा प ने
 शरि र दे यि न भि न भया को आत्मा छ भन्या भया का धु न्ने आस्तिक हे रु ले के व ल आत्मा मा व था रि दे न ज ग त्त सार जो छ भो प नि छ

अभया का प

प्रबोध
२७

२५

आस्तिकहेरुले जगत छातु न्ना उपाय गंध मुअ हस्त पाठ आदिगन्नाका अवयले गरिरीर जो छ सर्वे चारवर्गको स्वे
नाशक न्ना वासन क्षत्रिय वैश्य भुद्रु रस्त्रा भेदले चारवर्गको विभाग जो छ कउन कामको छ यो पराई की स्त्री हो यो मेरि हो
यो मेरो धन हो यो पराई को हो भनि सस्त्रा को हिनेद बुद्धु छन सो पनि कउन कामको छ वेदमा कहिया को हिता भयो स्त्री हेरु सब २
प्रवकाल पनि नछोडि मैथुनादि कर्म गर्नु भयो पराईका देवका भोग कोई छागनु भयो सकार्य असत्कारको हिनेवेकले
गरिविचार गर्नु भयो सस्त्रा भे जो छ समिते केहि जादे नो ते पनि पुरुषार्थ ले हीन भयो का आस्तिकहेरुले तस्ले वडा भेदका वरा न

गरिआसो

विचित्र सभा घमू सर्वथाले कायने मेव शास्त्र यत्र प्रत्यक्ष मेव प्रमान सुध्य प्रतजो वाचवस्तुत्वानि अर्थ कामोच
पुरुषार्थो भुक्ताने वन्ये वचन युक्त नास्ति परलोक मत्पले वा पद गुरुति तदेतदस्मदभिप्रायानुरोधेना वाचस्पतिना
सास्त्रं पुनश्चाचार्यो कायसमापित्तमासीत् तेन त्रिच्यद्वारणास्मिन् लोके बहुलिङ्गतमन्त्रं जन्तु उविसति चा
यकिः त्रिच्यध्वः चार्वकवत्सजानासिददन्ति तिरेव विद्या न्यत्रैव वा तस्मिन् भवति तिः ॥ ॥ ॥

जो छ ठाटि छ भनि जो लो नहानो हलेर चिन्तारग चोर वडागर्बले सहित भेकन केहि वाट बोल्न लाग्यो सर्वशास्त्र भन्ना लोकलाई
मुख भयाका नास्तिक को हो जस शास्त्रमा प्रत्यक्ष न प्रमान छ बुद्धि व्याप जे जवायु आकाल हुने प्रमाण होत जो छन अ
निसा चो भयाका गरिखुल गरिमान भयाका शान्त जन्म वर्गको सामर्थ्य भयाका हुन अर्थ काम जो छन सो हि पुयाथ राम
छन स्वर्गादिलोको जो छ छैन धर्म गरिकन मोक्ष हुछ भन्ना कुरे पनि छुठो हो मनु जो छ नसेलाई सो सब नुहा मिले
जो बोलिनु सो हिकुराको पुरुष गन्ना भयाका वाचस्पतिना उभयाको शास्त्रको आचार्य ले शास्त्र लाई न गायार चार्वक भन्नाका
२५ तस्तो यो

नास्तिकहेरुलार्दिदाभया नसेनास्तिकलेपनिशिष्यपुत्रिष्यलेगरियो लोकसंसारमा बहुतेशास्त्रुलार्दिविस्तारगमोभनिः स
 लोकथाभहाभाहले आजागदाभया वाहाणछि शिष्यलेसहितभया नास्तिकलेनृत्पशा लामापुवेडाग मोर नास्तिकजो
 छ सिस्यसंगकेहिबानबालन लाग्या हेवत्स हेसियेहो जयन्त्यनयकोवर्गनः जुस्मागरिहः सत्तोविद्यादउनिनिजोछ
 राजनिनिहो ससेराजनिनिमागनार्थभयाको राजसेवाकोवर्ननगर्भीभयाकोविद्याछ विद्याभमाकाइनेहुन न जोदछसम

धूर्तपुलापस्त्रीयीपदप स्वर्गद्वेकियाकर्तृविनाकोयदियज्वानाम नतोदावाग्निदग्धा नाफलम्याङ्गुरिभुरुहाः
 मन्त्रप्रियचमतामपजतुनाबाहुचन्द्र तिकारणम् त्रिवारिणस्पृष्टपिस्मरेत्तु सवर्द्धनेतिराम् अपिच नि
 हतस्मपुनोयनेस्वर्गप्राप्तिर्यदिचेति स्वपितायजमानेन किन्तुतस्मा न हन्यत्य शिष्यः आचारिण्यज्जुइससोत्रे
 पलमत्पोपुलिसस्सजंरवयपिज्जसत्ताकिंनिरुदेहिर्निस्थिरं हिंसंसात्तसो कंत्तपलिहनिहस्य आप्ताघालनले

जुदि चार्वाकः

निष्ठाग्याग्यो नास्तिकलेशिष्यहेउर धर्मश्रद्धर्मकोविचारभयाको चर्नाउभयाजानोछ सोत नसदेवकोहामिहेरुमा
 प्रमानमान्दे नो नुसेवेदकुन प्रमानमान्माभयाका धूर्तहेरुलेविप्रमात्रगमाकोहो हेसियनिश्रयजाने इत्ताभयातपनि
 हेरुचरुप्रादिगमाकोइभहेरुभयो हामाआदिगमाकोकर्मभया हेनेसबैकोनासभयाभा जगगुराउभयाकागज
 मानहेरु नाइ यदिस्वर्गहुछभयावनेका अग्निलेउवा काहिहेरुकापनि फलकिनलागेनन्त्यको कुरापुनिसुन
 हेशिष्योह मरेनकनप्राप्रभयाकाजभुहेरुलाइ आहुलेगरि नृपिहुछभया निष्ठाकावातिलाई तेलगीछ की
 नवदिवालालेअक्तभयोबनाउवेन हेसिसिष्यहो

दातीनाउभया
 हिदुधर्मादि

प्रबोध
२८

भयो ३

शभ ४

देवो कुरोपनि सुन यममा मान्माका पमुहेरुको स्वर्ग प्रविष्टुह भन्या जगन्गनी हेरुले स्वर्गको भोगगराउना निमित्त
आफ्नो बाबालाई पनि योगमा क्यानकाटेन न भनिरहो आत्मागमो शिष्य संग भारिकलेर शिष्य जो छ विनिगर्छ
हे आचार्य हे गुरो यदि नो न पाईले आशा गे तुमो हि वडो पुरुषार्थ हो भन्या पुरुष हेरुले खाउ पीनु स्त्री हेरु
सको वडा विलास गे तुमो सो वडो ससारको सुरव को दि कन कउन कारगाले अनि उली गे याका रुधु चांद्राय

धर्त प्रणीतागम पतारिता मा मा मोद कैरि अंत प्रि मुर्खी राग म ॥ पश्य कलिगुनं भुज निपीडित बाहुं सु
लेभरनो न्नतिस्तन मनोहर मायनाशाः ॥ भिक्षा पवास नियमार्क क्षरीचिदारु ह होपत्रो यराविदि कुधि
याक चैयः ॥ ॥ शिष्य आचारि श्रुय कं वृत्तिस्थि आलवन्ति जंहुः स्वमिस्तिद से साल मुक न पलिहले निज
तिः चार्वाक हस्प उपपत्ति दर्शयन्ति आः दुर्बुद्धि विलसित नर पशु नाम । न्मानसु च विखयस ग गज मीरु
मांडुः पोप मृष्ट मिनि विचारने या ॥ विहिन जिहास नि सितोत मंत डल्य ध्यात को ना भी तु ख नो प हितार्थ ॥ ॥

वात्मा लाइ वुहने दुख दिन्छ भनि विनिगम्योः सियेल नातिक संगरः नास्तिक जो छ आतागर्छ हे सिष्य वेडे धूध निभया
का न्नु स्तिक हेरु का शास्त्र ले कानिया काः मुख हेरु का रस लोक याः नाना प्रकार को पुराण कर्म गोरों र स्वर्ग को सुख भो
ग गरीला भन्या रसेः आसारु पिल डले गरि न प्रिष्टुह हेरु हात ले मदन नंग रि या को काचि काने निक को स
री रदुना ले भाची या को छ अनि उच्चा नो जन को रखा खन ले गरि मन हर्षा भया का अनि सुं धर ने व भया का
स्त्री हेरु का आलिंगन गर्न्या ले भया को सुख जो छ को हा छ भिक्षा भया रका दसि का दिन मा उपवास भये कि

गति विवेक
किं विवेक
गति विवेक

गम
रु
काता मले

प्रबोध
२५

याका वचन जो छनः कर्णको सुखगर्न भया का मुनि छः भन्योरः खानन्दले सहित भेक नहे योरः कृपा भर्ना लाईः यो गभया को
 यनि विचारो मेरो मित्रः रुछः यो नास्तिक भनि सुखो मेरो मोहले आराग या को भुनो नास्तिक लेरः नास्तिक पुनि हेरि कन
 नजिक माग यारः इनै महा मोहलेः रागा महा मोह जो छनः वदे से श्वर्थ ले जुक्त भया को हुनः जय रुवस्त भन्यो यो नास्तिक को
 पुणाम छ भनि विनिगुः नास्ति कलेरः महा मोह जो छनः आराग छनः हेनानि केत पात्रि पाठ लागु भया वधिया
 हा आसन मारा नग तु रुवस्तः भनि आग्राग योः महा मोह लेरः नास्तिक जो छः आसन मावसिकन केहि कुरो

यतः प्राप्तामवाचनमिति हि यत्तानि पातेनिर्वर्त्तनासपदिल्ल सुखप्रसादः । उच्चैः प्रमोदमनुसोदितदर्शनः
सन्ध्याधनमस्यतिपदिवरुहप्रभुनाम् । महानोहः । एतस्मिन्कलौ कियन्तपन्नमः चाविकः । देवदेवितनवे
दार्थपथः प्रथीयसि यथायुक्तेषां गमितो महाजनेः । तदेव हेतुन कलिर्न चाप्यहं प्रभुप्रसादोहितनीतिपौरुषम् ।
तत्रोन्नपथिकाः पाश्चात्याश्च वयिमेव न्याजिताः । समदमादीनां केवकथाः स्यन्त्याचापि प्रायशो निविकामाचफलै
वचयौ यथाचार्यः । अग्निहोवचयो वेदास्त्रिदश नस्मगुठनम् ॥ प्रतापौरुषहि नानाजीविकेति वदस्वति ॥

हे राजन् महा मोह तपाइ लाइ कलिको पुना मुछ भनि विंति गयो नास्तिक लेर राजा महा महा मोह जो छ कलिको कल्या नूह जस
भनि आता गयो महा मोह लेर नास्तिक जो छ विंति गर्छ देवता भया का तपाई का पुमाद ले गरि सदा सर्वदा कल्या न छ कलि
को जो कार्य हो साय पनि उत्त न गरि सिद्धु गरि राखेछ शुक्र काम सिद्धु न्या भया का तपात्रि सेवा गयो भया को कलि जो छ
हे राजन् महा मोह तपात्रिका पाद कमल को दर्शन ग नाको इच्छा गर्छ भनि विंति गयो नास्तिक लेर महा मोह

शम
२६

३५

छेउः दोस्रो कुरोपनिविंतिगर्हः हेराजनः महा मोहः जो चाकरछः शत्रुहेरु काना शगर्नानिमित्तः प्रभुले बडो अहंरिया को छे दो स
 चुको निपातगर्नले गरिः केने तसेः शत्रुया का अक्रा अज्ञा फल गरिकनः तसे समयमा अथाया का सुप्रसाद ले युक्त भया
 को अति अहंरि ले युक्त भे कनः वडे सनोय को स्थान भया को छः दर्शन जस्को चा करु हेरु ले गन्यो का सिद्ध गरिकन प्रभु का चरन
 कमलारः नमस्कार गछः जो चाकः ॥

ले तेन कुरुक्षेत्रादियुता वतु देवेन स्वप्रेपि विद्या प्रवो धो दयो नरा कनिचः महा मोहः नचा साधु मपादिन महत्तु वलु
 नोर्थ अर्थी कन मुवा वीकः देवान् अविज्ञा प्य मस्ति महा मोहः की कथय नाम चा वीकः अस्ति विष्णु भक्ति
 नाम महायभाव योगि सातु कलि नायद्यपि विरल प्रचार कृतान तथापि नदनुगृहीतानो यमालोक यितु मर्त्तिन प्र

रजो छः धन्य हो भनि विंतिगन्यो नास्ति कलेरः महा मोह जो छः एस्ता ममर्थ भया का कलिमाः कउन्ः कउन्ः कार्य सिद्ध भया
 को छु भनि अज्ञा गदो भयो नास्ति कपनि विंतिगर्हः हे देव महा मोहः एस्त कलिले गरिले गरि वेद को माग जो छ भय मे रहे छ व
 राजन हेरु जो छ सोत जस लाई ज्वा मन माला गो सो का मगर्नो भैर ह्या छन एस्तै प्रकार ले गरि भुया चारण न्नी भैर ह्या छन
 एस्त कुरा मा कलि पनि करण केन मपनि छेन तपान्नि महा मोह का प्रसाद जो छ पुरुषार्थ को विस्तार गछः रुम हाराजा मह महा
 ह धर्म अ धर्म को विचार भया को अत्री नाउ भया को विद्या को विचार जो छ को छिगर्देन नः राम दम को न को हिथा हापनि ग
 देन नः अ भ्यास गन्यो कानः कउन् कुरा छन केसे छेउ त्रयी विद्या छ एस्ता ममर्थ ले युक्त भया का विष्णु भक्ति वस्त्र कउन् चितो उ

भवामः तदुक्तं

हः हामिलाई भन्नेर प्रकर भेकन सवेलाई शुनाई कन वोल्लागे नेक ल्याने ले युक्त भयाका नास्तिक विष्णु भक्ति वेडेव
वलिछत सञ्चर्य हामिलाई कठिन पन्था छ भनिस्का नगनु हवस किन भन्ना का म को थ आदिगया का सत्रु हेरु वडा
वलि या छ न भन्ना लो विष्णु भक्ति एउ निको कउ न्ना मर्थ चलेला नस्कि वृद्धि पनिकउ नू जगामा उदय पाउला सस्ति अष्टि दुक्व भ

वशात व्यभिचि मस्मा मोरु मभय मात्मगतं आपसिद्ध महाप्रभावा सो योगिनि सभावा द्वि द्वे विणी चास्माकं दुग्ध द्वा
न्भवतु प्रकाश मद्रालु मनया शक्या काम को पादिछ पनि पक्षे युक्तु वेच्य मुं देसनि तथा मिलि घिय स्प पिरि पेसनि ना
नवहि नजि गो बुना भवितव्यम् ॥

या की हत पनि विष्णु भक्ति शरी मुत्रु रूप भया कि छ ना न्याले अनि सा नु ह पुनि सत्रु का हेला नगुं नु भन्ना को ह न सप्रु थ
सत्रु लाइ जिन्ना भन्ना मन सु विपु ल्य हेरु ले पनि छो सत्रु हत पुनि भन्ना नु मरि चान से गर हनु भन्ना का छे नास्तिक
भनि म हा मोरु जो छ आता गर्दा भया

[illegible]

प्रवाधः

39

लियो कोहि पुरुष जो छ-निन्म सालामा प्रवेस गछ-मजो छुट्के देवा देवि न आया को हुन-तसे ठन्कल देसमाः
समुद्र कातिरमा पुरुषा ज्ञमना उभया को देवता को-आलय छ-तसे देवता का-आलय मावस्था का-वडा से भ-यल्ले यु
क्रम या को मदले-अभिमान ले-राजा महामोह करु नुरमा-पठायार-विधिलिकन आया को छु भनि स-ज्ञा को
गयो हे-यो र-शासात इकाशी-या राजा महामोह को कुल छ-तसे अर्थ-प्रवेस गछु भनि-निन्म सालामा प्रवे

नतः प्रविशन्ति हस्तकः कोपुरुषः हगो उक्कल देसदागदो सिज्जित्तथ साश्चलतिलसम्मि वओ युक्कि मोचम
सदिअं देवडाअदरास्मिन्माहिं मूलात्ताश्चससासं पसिदोहि. विलोक्य. एयवालाणमिस्सुं लाउलं जावत्त
वितामि प्रविस्सु. एसे भदके. चवो केन महुं किं विमत्तं अविदहि. दुतो चिंतोयत्त. नाउवम प्योमि नस्सु. उप्पसि
त्ता. नेदु रभदके. एइ पत्तं गालयमाणं पेक्खे दुम. इके इति पत्तं समयति. मद्दो मोहो. पज्जगि हि च्चाइ कुतो भवान्
पुरुषः हगो पुत्ति सा जमा. महा मोहः. ज्वगतं म्कार्यं मत्पहि न भविष्यति

शगभोर. नास्तिकलेसहितभयाकामहामोह जोहनु. कोहिमचरागनलागिनुरह्याहनु. नजीकमाजा न्याहोकि कसे
गर्वाहोभनि. चिठित्याउ न्याहृतंजाह चित्तोगनलागो. राजाकानजिकमायायापडि. जोनेपछ. भनि. निश्चयगभो
रराजामहामोहकनजिकमागयोर. राजाजोह. यडाउत्कर्षलेरहभनि. आसिवादगभोर. योपत्रलिनुहवस. पत्रमा
कउनु कुशलेश्याकाह. त्याविचार. सर्वेगनुहवसभनि. विनिगुरि. राजामहामोह काहानमापचदिदोभयो. पुत्रालिया
र. कउनु देशदेयिनु. आयाकोहोस. भनिमहामोहलेसोधार. रराजनुम. पुरुषोत्तममदिदिनु. आयाकोहनु. भनि. विनि

इत्या इत्या पुस्तकले सहा मोहलेपनि वेईही
अहि नभयाको का सकाहि श्रुता भनि मनमा
विचारगचारः

मोड

सर्वे लाइ सु नार्कन आशा गछे न रेनास्तिक जानु हवस आ फुलेग न्या काम मान पात्रिले वडे सावधि धान लेस
हित स यो धी भनि आशा ग न्या को धु न्योर नास्तिक जो छे न सोपनि मर मोह ले नो न्या जा ग सु न भयो सा काम गहु
भनि बोले पार नृत्न साला देखि न निरुद्धो भयो बाहा पछि महा जो छे न पचव नाउ छे न स्वस्ति श्री वारा नची माव
आका न्वरा सेधे ले युक्त भया को राजा महा मोह को चरण कमल मा पुरुषो न नाउ भया को देवता का स्थान देखि न मर

प्रकास चार्वाक गच्छ कर्त व्येष्ट वहिने न भुवित व्यं भवता चार्वाक यदा ज्ञापयति देखे करोमीति तित्तु कान्त
महा मोहः पच गचयति स्वस्ति श्री वाराणास्या परमेश्वर महा मोह पादाम् पुरुष न मयुज नानु मदमाने
साष्टांग प्रणाम विज्ञापयत यथा भद्र न व्याहृतम् ॥ नृप च देवि शान्तिर्वा शशुद्धया सह विवेक स्पष्टो तमाप
न विवेक संगमा यदेवि मुपनियदे मरुति सि प्रबोधयानी ॥

न विनिगद छे न विदु ले हरि भया को वडे कल्या न जो छे महा मोह ले हवस ॥ दो सो कुरो पनि विनिगछे न हे महा
मोह आसि मह नारि श्रद्धा ले सहित भया को शानि जो छे राजा विवेक का हति भया कि राजा विवेक ले मग भेट ग राह वादि
प्रतिग राउ ना निमिन्न निच जरु पि देवि लाई वार वार वृत्ता इ फुल्यार्ड न लागि राहि छ दो सो कुरो पनि लेखे काम ले
सहित भया को पनि धर्म जो छे वेराग्ना दिहेर ले वहने त प्रभया का जस्तो देखि जस को राग लेख म देखि न भिने भेक

सा सं ग प्र
सा म ग रि क

प्रबोध
३२

न कोहि न वेदे गुप्रभया का धर्म को प्रचार मे रहे छु ततो यो संपूर्ण कहिया क अर्थ को मालु मग न्यार देवता प्रसा न छुन स
कुरा मा भन्यार महामोह जो छु को छु से सहित मे कन रुला गरि बोलु छुन कि नय सो गरि अति मुख हेरु जो छु शांति दीधि न
पनि वडे भयमान दु छुन काहा देखि न यो सा न को सवे लाहि भय राउना को सामर्थ छु परंतु कने कने पानि या सा
निको अ व काम छुन भनि आता ग न्यार सा कुरा देवा उद छुन उरु जा छुन जगत् सार सो सति गन माच लाया का छुन दक्ष प्रजा

अपि च काम सह चोप धर्मो वै रागादिभिरुपत इवोपलक्ष्य यत काम हि छिद्य च्छिद्य च्छिद्य ठो धर्म पुनरति
न देत दुक्तार्थ जालो देव उमान मिति महामोह स को धर्म अा कि मेव मति मुग्धा शानो र पीव भानि कुतो उभा
स भव ता थाहि धाना विध्व विरुष्टि भाच निर नो देवा पि गौरि भुजा के आ न्य विघु रण मान नय नो दक्षा धर ध्वस
न दे न्यारि म के ला कपोल म कशी ले राता र स्थल शाने धा वी न रे सु जनु पु कामा सा न कथा ॥

पत्नी केश को नास ग न्यो भया का महा देव जो छु को पानि पार्वतिका बाहु ले अंक माल ग माले भया का अवन दले सु मा
या का छुने न ज न्का स ले छुन लक्ष्मिका गला मा कुं कु मारि चंद ल लयि या कामा सा को अकार भया का चि व ले चि ह भया का
छु वक्ष स्थल ज को रुखा विस्तु जो छु नानि समुद्र मा भु क लाग छुन स से यु कार ले गरि बला वि छु महा देव पानि रु
कर कामा दि को धन्या ला गे छु शांति छे न न अरु जानि हेरु वि ये शांति छे न कउ न शांति

ग्रह
३२

कोकयागनुमनिःप्राज्ञागपामहामोहलेरपेरिकामदेवकोदूतभयाकोविचारगुणिकामगन्धर्वाभयाकोजात्मपुरुषलार्
 प्राज्ञागर्हणं हेराजल्यन्तपात्रिले चोडेगारिकामदेवकान्तनिकमा जानुहवस्रहाप्राज्ञाज्ञाकोकामदेवलाहकहनुहव
 सुकंस्त्रीप्राज्ञाभन्याउपान्त-धर्मजोह्वेदेदृष्टदेहभनिसंज्ञामनमाहामिहेरुलविचारगमोत्तरकारणालेह्य
 भयाकाधर्ममासकधरिपनिविश्वासनमानु-धर्मलाहवलियागारि-वाधेनलगाहसकहाहियानामापछारिखनुधर्मकोविस्त्रा
 पुरुषप्रतिजात्मगच्छकामसत्त्वरमुष्मन्मोदशमस्माकीप्रतिवादय-यथादुगावायोधर्मइत्यस्याभि-सगर्त
 नदस्मिन्मुहूर्तमपिन-विस्वामितवदठव-ध्याधारपितव्यइति॥५॥ पुरुषः जंदेवोऽपानेवदितिनिःश्रुतः
 महामोहः स्वगतविचित्रंशानेकोभुपायः शुधवाच्यलमुपायानेनकोधलोभादेवतावदचप्रयाप्रोक्तः काच
 भोप्रविस्म-दोवारिकः प्राज्ञापयतुदेवः महामोहतावशादुयताकोधलोभश्चपुरुषः यदादिशतिववयन्तुमा
 गामिनियुक्तः॥तत-प्रविमति कोधलोभश्चकोधलोभप्रतिभ्रतेमया

रहुननादिनुभनिमहामोहकोरस्त्रेप्राज्ञाभयाकोहभनिकामदेवलाह-रस्त्रेकथाजोहशुनाहीदनुहोलाभनिप्राज्ञा
 गन्धाकोहजल्यपुरुषसुनार॥॥ पुरुषजोहसोपनि-जाराज्ञामहामोहलेप्राज्ञागर्हभया-प्राज्ञाकाशुनुसारलेगारि
 कामदेवकोविनिगयोलोभ-प्राज्ञाकामदेवकादूतभयाकोजात्मपुरुषजोह-नित्यसालादेयिन-निकेदामयोत्राप
 डिमहामोहजोह-शान्तिकोनिवारनगन्धाउपायकउन्हेलाभनिमनमाविचारगर्ह-शुधवाच्यरुडशायजोह-शान्तिको

निषरसागर्ह

प्रबोध

३३
३८

लाई क्या चाहियो शांतिके जरे उथेलि नै सुलगनै लहै कोष लोभ जो छुन वेडे समर्थ छुन मनि स्पेक्षे प्रकारे लीविचार ग
नार नृत्यशाला मा कउनु रवसा का छुन मनि महा मोह ले प्रजाग न्या को ठो को दा न्या ले सुनार नृत्य सामा प्रवेस गरि कन
हे महा मोह कउनु प्रजाग नु हुँ छ प्रजाग नु हुँ सु मनि विविति गयो प्रसन्न गरी पेछा का हा न्या ले महा मोह जो छुन प्रजा
ग छुन हे प्रसन्न गरी पिछा का हा न्या पीछे ले महा मोह को प्रजाग हुँ छ मनि को धलो भ वेडे जन नाम जिलाई वालाई ल्या भ
नि प्रजागरी या को पुरु जो छ सो पनि महा मोह ले जो प्रजाग नु मयो सो वेडे प्रमान भे था को वा तरे भनि निश्चय गधोर

यथाक्षान्ति भद्रा विष्णु भक्तयो महा राजे न प्रतिपक्षमाचरन्ति तः श्रेयसयिजिव
ति कथमात्मात्मनिरपेक्षितं चरिन्म

को का हा न्या जो छ नृत्यशाला दीय नु निक्के दो भयो वा हा पीछे को धलो भ जो छ नृत्यशाला प्रवेस गहुँ स्पेक्षे प्रकारे
प्रवेस गनार को छ जो छ लो भ सो उग को हिकरो बोल्छ ह लो भ मै ले व्याकुरा को प्रनि जाग न्या को भुनग ॥ यथा ॥
शांति भद्रा विष्णु भक्ति हेरु जो छ नु राजा महा मोह संग वेडे विराध वर राग छुन वेडे प्रभा भय छ मजि उदे छ मा न्या
ति सद्भा विष्णु भक्ति हेरु को आ फुजि वन ले राहत भयो को चेष्टा मात्र गनु हो सवे को नासग ना स्ताई सामर्थ छु मनि लो भला
इको ध जो छ आरु सामर्थ देखाउछ प्र

शुरु
३३

॥ ४३ ॥
हेलोमसेवेजत्संसारेलाई. अंधगंगाउनुभयो. वेहेगंगाउनुभयो. अतिवीरचेतनलेयुक्तभयकालाई. मुहा. जदभयाको
गंगाउनुभयो. रत्नादिसर्वेकरामा. सर्वेसमर्थ. कु. जिसकोधुकोप्रहृ. भयापान्न. तत्तु. असत्. अकार्यकोहिकुराकोविवेक
जोहृ. मनुष्यराई. न. कसेल. आफुहितगन्धको. कुरासुनायात. पनिभु. देन. वडोपरितभयोकोहृ. पनि. सर्वेनरुकोयथ
लाइपनिविसे.

तथाहि. अधीकरोमिभुवनं वधिरि. सचेतनमचेतननोनयामि. कृत्यं न पश्यति
नयेनहिजं. शृणाति. धीतमपि. नप्रतिमन्धमि. लोभ. अर. महु. पग्राहतामनोरथ
सरित्पारे. परासर्वेतावन्तारिथ्यतिकिपुनः. शात्मादीश्वतयिअति.

हृ. भनिपरेतेप्रकारलेगारिको. धले. आप्र. सामर्थजोहृ. लोभसंगदेयायोर. लोभपनि. अ. प्र. नु. सामर्थ. देयावृ. हृ. शे. केध
अरे. मलोभले. वसगारिया. लोभिपुरुषजोहृ. न. पहिले. शायमित्या. न. दु. शयको. आसागु. न. र. स्ते. प्रकार. लसदा. स
वदा. केरे. दु. व्यको. चित्ताग. नुरु. पि. न. दिका. पार. पनि. जान. स. कुरा. हृ. न. न. र. स्ते. मरा. वस. मा. न. या. का. जो. हृ. न. शा. ति. हे. रू. को. न.
चित्तापनिगन्धोहृ. न. न.

हेसयेहेमिव-लोभिहेरूकोस्वभाविचारगनुहवस-मदलेयुक्तभयाकोगंडस्थलेशांछंयुक्तभयाको-मज्जहातिहेरूभयावायु
वरोवरवगभयाको-घोडाहेरूभया-मेराघरमाछुन-फोरीपनिच्यूरूहानिघोरजोछन-पाउला-एतिडंवेजोछहानमालगा
जा-योडवेजोछ-अहिलेपाउछु-योडवपायापाकिफोरेदेवरेडवपाउरुभाभन्या-एखेनानाप्रका-

रकोधनकानिमित्तशरिरकोश्यासानगरीचिन्तागर्नालेजीर्णभयाकोमनभयाका^{ये}मनुहेरूकाशान्तिकोकथाकउन्छ
शान्तिजेककसेछेउछेनमानिलोभलेआफुलेजित्नाकामनुय्यहेरूकोकथासुनायोर

३४

कोधजोहुलोमलाई-आफुवडोवर्णगारिबोल्हरेमयेहेलोभ-मेरोवडासामर्थजाहु-तछानिलेजान्नेभेरेछ-वडुलेकावराभ
गरुनेपानि-मकोधिलेजितियाका-आनिहेरुकोसभावेजोछनजगनुहवस-उडुले-विजसुरलाई-मोपा-महादेवलेब्रह्माको
सिरक्या-विशामिवले-वसिष्ठका-कोराहेरुलाई-मादीभयो-रत्नेप्रकारलेगारि-कोधिहेरुजोछन्-नगनुकुरो:

कोधःसर्वेदिदितस्त-यामत्युभाव-त्वायु-वतमयानयत्तुरपतिश्च-द्वार्द्वचूडो-ऽधिनेदेवावस्य
सिरोवसिच-गनयानाघानयत्कोशिकः-अपिवाहविजार्पित्वपि-कीर्तनम्-तपिसदाचारव
दानात्पिभो-पौरुष-पूयनान्पि-कुलान्पुहुनुमिसः-शरान्

भनिगछभनि-कोधिहेरुकोकथासुनायो-काधजोहु-आफुउपुख्यार्थलाईपनिरुहिछ-हेलोपसुनुहवस-मजो
दुखानभयो-कीर्तीभयो-वठियाचारलेगारि-अनिनिर्मलहुनुभयो-वडापुरुषार्थभुवनभयो-तत्तेनानाप्रकार
कोगुनलेयुक्तभयोको-पनिकुलहेरुको-रुकक्षरोमा-नाशगर्गाकोसानर्थभयोकोहुमानकोधलेआफुवडावर्णग-याकोछ

प्रबोध

३५

लोभजोहू नृहमा लाइ देत ह्ये भनि आतागरे भयो . नृहमा लेपनि नृत्पमा ला मा प्रवेश गरि रहे आर्य पुत्र हे लोभ कउ नृ
आताग नृहू भनि विनि गरि . नृहमा ले . लोभजोहू . हृषिय हे नृह्ये सुनु हवस . भनि आताग छे येत गुन . वन .
प्रवत . महर . दोप . यथिम राउल र मादि वस्तु हात लागाउ . कउ नृ मलाइ . वडे दुव्य देवस भन्या कोहि आताग
नुरुपि आत वानि आभया काउारिले . वाधिया कोमन भयाका . एक हजार पायात रहजार का आताग रहजार पायात

लोभः नृह्ये इतस्तु वत्प्रविशत्तस्मान्किं पुनिदेवि . अजउत्ता . लोभप्रिये अयनाम् . शेवगा मवना डिप
जनपुरही पक्षमा मराउल प्रत्यासाधन सुत्र वद्ध मन माल धाधिक ध्यायनाम् नृह्ये देवि प्रयसिः
दक्षित नो अगा निनुगानि चेटो . प्राना भिना कुतः समकथा . वस्त्रा राउल र्षे र पि

४ हजारको आताग नृमा भनि भयाका प्रानि हरी वये हेत ह्ये यदि . तपात्री प्रसन्न नृहू नृहू . अतिपुष्ट भयाका हस्त पा
द आदि गन्याका . अंगले गरि विस्तार गनु हं हू . भन्या को देवा तपनि सां नृहू नृहू . वडे ते कउ नृ वानि गनु पछे . नृ
ह्ये वस्त्रा राउ पाया पा निशानि को वानि . कसे छे उ . नृह्ये नृह्ये . नमः अर्थ हेत ह्ये . तपाइले जस्त क्षउर हनु हू
लो अति जीर्ण भे गयो तपनि . अति नरु नि भे कने तपात्री ले राज गनु हवस भनि लोभले नृह्ये लाइ आताग देनि यो

गाम
३५

तस्माद्विनिगच्छेत् हे श्वार्य पुत्र हे लोभ तपात्रीले - जो आतागर्नु भयो - तस कुरामा - ज्योपेला ज्ञा कि धिभों समकालमात
पाइ - लोभका आताले गरी - एकलाय के कउ न कुरोगरु - केरि बुझा राउ पाया पनि - मेरो पैद जो छ - भरि ना छे न भनि
साले - ऐसे प्रकार के विनि जो छ - लोभ मगोई भे वाहाउ प्राज्ञ - का धने हिंसा ह्मा - हे हिंसे आस उलाग नुरु वसः
५१

तस्मात्प्रजउत्त ससं जे व व अहं यस्मि अथ्ये निजु अहि युजा सु पदं अजउत्त स
अस्मात्प्रसउ कोडिरी विन मेउ अर पुरइ स्मदि - को ध - हिंसे अगमना म - प्रविशहि
मा - स माहि अगमना वेउ - अजउत्त

भनि नृप जाला मावोला यो - नृप जाला मा अइ कन - हिंसा विनिगर्न लागि - हे को धन पद का चरन मा आया कि तु
आताग नुरु वस - भनि विनिगरी हिंसा जे को धमंगर - को ध जो छ - आताग गंद् हे प्रिये हे हिंसे वग धर्म गन्धी भया को तहाय

षोःध
३६

यदुनाले मेरा मातापितरहेरुको वं धगनु जोरुसोपनि सुरेले गुनमकिन्यादुभनि आतागयेर सुखेले गरनमका
न्यकार्यदेया उछे योपिआधि महतारिकुन्हे योवातुपनि कउन्हे कोरावरोवरभयाकाभाई हरु जोरु कउन्
कुन योदानुभाइरुको समुदानपनि चधगन्याको जोगछः अतिवागेभातिभयाका नारकाजस्त्राजोभिउ

कोधः प्रियत्वया सह धर्म चरिणामानृपितवधो ममेवकार एव तथा हि केयमातापिता चरुका
वजनको प्रानरके चकिपवोये वधुवर्गः कुतिलवितसुहृद्वै यिज्ञाता न यामिह स्त्रीनिर्घ्यास्येवा
गर्भयावदेया कुलमिदमस्मिन्नेनेनि शस्यया विस्फुज्जनः कोधवरेन दधति विचितावदंगस्फु
लिंगा

मलेयुक्तभयाका एतातानिहेरु कउन् कुन ऐसे प्रकारले कोधिहेरु जोरु मातापिताको अनादरगछेनतअ
रुमनुअहेरुको अनादरगछेन भनिकुन कुरोगनुभनि आतागमो नारिमिचिकन वो लछु गर्भपातपनि
गगाकनइनेसवे वधुगभहेरु काकुलेको जोरा सम सत्याना मृगरिषिनगरिदेन ताहास्यः कोधरुपिअ
निकाफिलिगाछुइनाकन छोउन्पाछेन सारिमाभनिदे लो

राम
३६

को धलेहि संग मेर है सोर हाया स्वाभि महा मोहर हा छन न सम अर्थ सवे जना जाउ नजिक मा भनि गया नजिक मा जय
कल्या नुह वस रागा मोह को मान आसि वाउ गया महा मोह जो छ को धलो महि सातु छा सवे जना लाइ आता गछे अ
डा कि छोरि भया कि हा मि संग विरोधा चरण गन्या भिया की शान्तिको न पाजि हेरु लवडा दराउ गनु भनि गया का
मे

विलोके स्नेह स्वामि न दुप सर्प मः सुवे उप शत्रु डु यतु रे वेदः मोह अद्या यास्त न या शोति र
स्महे शिरी सा भव दिनि गा होतु सव परादि शानि देव इति निष्काना मोह मोह पुनर चिंत
यत् प्रद्या यास्त न या इत्युप छे न उपाया तर मणि हृद म मारु कम्

पुन्यार जो महा मोह ले आता गनु भयो सो आता सिर पछ भन्यार नित्प शाला देयि न सवे जना निष्कदा भया न
मा होह जो छे करि मन मा शान्तिको नाश दुन्या कुरे चिंता गछे म डा कि छोरि भनि नाउ लिने लेपनि शान्तिको न
श दुन्या दोषा उपाय म मा सज्यार सोहि उपाय कह छन

प्रबोध
३७

पराईकां प्रसीनमापन्नाकि ज्ञाति कामाता अडालाई. कोहि ३ पायु लेगारि नुपनि स देखि नः भिन्नगराउनुः ब्राह्मणोक्त. ज्ञानादेवि
भिन्नकुरंगले भयां कि दुखले अनि दुवलि भया कि शोति जो छ होलि बडु ते दासिया मो न भै कन नासिये लि भनि मन मा एहेताः
विचार गन्धार बोल्छे वस्पाऊ नहि कारन ले अनि छिस्ति भया की मिथ्यादिष्ट भन्या कि नास्तिकता जो छ. अडालाकोः

तथादिः सांने माता सदा सा च परतं चाके न्यापु पापेन पनि चत्स का शान्तः अडाला पाप कर्मण कर्त
व्यम ततो ना विवियोगतुः एव दनु सुदुत या आतिर परता भविष्यतिः अक्सा दंति विनरपति अ
द्वया व्यापक मिथ्यादृष्टिरेव वार विलासिनि पर प्रगल्भेति तदस्मि विषय से वनि पु १
अपतामः पार्श्वेति वि लोकेः विभ्रमास्वति सत्तर मा ऊयता मिथ्यादिष्टि

तिरस्कारगुनुलाई बंदे समर्थ कृतसु चर्थ अडाला नाशग न्या काम मा मिथ्यादृष्टि भन्या कि नास्तिकता लाई अडाला
ज्ञाननुप न्या भन्यार. अडाला पश्चि भाग मा हे चारः ह विभ्रमा वति चोडे मिथ्यादृष्टि लाई महाराज महामोह को अडाला ऊँछ
नरन्य ज्ञाना पाउला गुह वस् भनि बोलाई न्याउनु रुद्र सः भनि महामोह जो छ नः विभ्रमा वति लाई आता गदा भन्या

राम
३७

विभुमावति लेपनि जो राजा महामोह ले आ जागनु भयो सो सिरपट्ट भनिर ननु शाला देखि नु निक्की कन केरि मिथ्या दृष्टि ले
सहित भै कन पुवे सगळे भिथ्या दिष्टि जो छन विभुमावति संगे आ प्राप्त न को वान गेई हे सचि महामोह को दर्शन नेमया
कावळ ते काल मेगयो न सस्यर्थ कसो गार राजा महामोह को मुखे रस ला निश्चय ले गरि राजा महामोह जो छन मलार सति
काल संका हो गेथि सभनि गालि दिन न भनिथ्या दिष्टि ले विभुमावति जो धिष्टोपनि बोळे हे सपाहे मिथ्या दृष्टिः

विभुमावति जे देवो आन वेदि श्रुति निरुम्प मिथ्या दृष्ट्या महप्रविशति मिथ्या दृष्टीः सहनिरदिष्ट
स महाराष्ट्र समकहे सुरे पक्ति समे शा मुमारा ओउ वाल हि समदि विभुमः सहित न च मुह देवाने न च
प्रा न जे व महाराष्ट्राने वेइ सादि कु दोउ वाल हि सादि मिथ्या सहि किम्य अलि गुप्त मोह गत भावि ड
विल वशि विभुमः सहित यद ज वये कि व समुत्पलि अत्त न मोह गत सम्य वि गि हा धु ना ड्ली
पिह सहि सेलो अने पक्के मि ४

तपात्रिका सुरव को दर्शन पाउ दे मापनि राजा महामोह जो छन मच्य मक नहु भनि आ प्रच वर पानि केहि पाउ न्या छे नू
वदे आन दर स मा भुलि आ जान्या छन न सस्यर्थ गालि दिन न भनि कउ न कु रोग नुहु छ भनि बो लि विभुमावति लेरः
मिथ्या दृष्टि बोले किन न बात्रि जु दो भयांक कामेरो सो भाग्य को सभा न गरि पुनार राग नुहु छ भनि मिथ्या द
ष्टि लेर विभुमावति बोले ह सचि उथो सो मा गे मेरो आ जाग नुहु छ समे काल ना विचार गनु होला भनि बो लि विभु

प्रबोधः

३४

मादति लेर दोसो कुगे पनि वोल्हे हेसाव मिथ्या इष्टः अनि निचारि भया की तयात्रिकेने वं गोछनु वेडे निदान पा या जस्ता
देचिन्नु न गिा दान पा उ ना को कउनु कारणा छ भनि सो धि विप्रमा वति लेर मिथ्या इष्टि जो छ वोल्हे हे सुखि न्दु ता स समः
कुन्पास्त्री का पनि मिद्रा दुदेन संवे लो क संसारे मा पनि मया का हा मुनि द्रा दुदेन भनि कउनु वारग नु पछ भनि मिथ्या इष्टि
दुखि लेर विप्रमा वति जो छ कउनु र तपानि हेरु ता पति हेरु हेन भनि सो धि भे र मि थ्या इष्टीः

नाकिं र वृषि भ्रम सहि य लो अस्म विगिा दु दाय कारणा म मिथ्या सो ह्य क वत्त हा विजा इत्थि अमेदिता य
विगिा दा दुल्ल हा किं उ न अस्मानं स जले ला अ व ह्न हा ने न विप्र के के उ न मि भ सा ह्य व ह्न हा मिथ्या न
हा रा अ अ दा उ व रि का मो को हो अ हं कार निः

जो छ आ प्रा पति हेरु को ना ठलि छे महा मोह काम देव को धलो भन्नु हं कार इने मे वे मे रा पति हुं न पति हेरु को त न ना उ
लि क्ता दु छ र स कु रा मा वाल क उ वा न्दु जो को हि उ त्त न्न भया का छ सो मे ले वि ना को

राम

३४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

अवोधः

३८

हे सखि वरं ते प्रकार लेखति गुन लेखक भया की सेवे जना की प्रियारि दुःख दुःख रत मात्रि छेठ कुरोग नु न पत्रि जो ते वेदे सो भाग्य लेखक
भया की खीन यो सा लाष्टि विमडल मा दो स्वी छे न जस त मात्रि को वडो सो भाग्य देखा लेखति दुःख लेखक भया को न भया का

न पत्रि जो ते वेदे सो भाग्य लेखक

सहि अदा जेव भगामि नरु सी सी मुह आर्षे पि आसु हविय न त्यजय सो हगाम
हृदि विहुरि अहि असा सवलि अपमा अपडि स्थदि सहि अस्मव भगामि ॥ ॥

हेरु जी उचति पनिक सो गरि पस भुङ्गनि हा प्राउ पर भनि वडे इहा गछर्न हे सखि वदो सो कुरो पनि भन छु ॥

॥ राम ३८

हेसरिव निद्राले व्याकुलचिन्तु न्याले लगाया काजग्गा देखि नृपुण्या को पाउका नेवल को रं रं शब्द ले युक्त भया का गमन ले गरी
 राजा लक्ष्मी को सभा वगछि नृ कया भुन्या जे गरिशब्द ले युक्त भया को चिन्त लाई गदि भनि सत्ता से का गछु भनि विभु भावति ले रनि
 थाइ सिजो छ कउ नृ मका गनु हु छ भं छ राजाले युक्त भया का राजा यत्न निति हो कि सयिद शनै मा विले गरि अनि प्रसन्न भया का

रं रं शिवा उलहि प्र आ विम दुलख ले त न्वल रा रो उलरु काल मुहला रुगदि सम हारा अ सव भा व अदि सं कि द
 हि अ अ करि सुदि प्रिय मरि नित के मि मिथ्या कि स म्प स कि द व रा अ हारा म हारा अ स्थि दु ना रा जे व
 र सो अ वि न आ अ वी अ सहि द सा ल म त प स म्प पुरि मा रा के रि स भ य म् म हा मो ह वि ला के म प्रो प्रे व
 प्रिया मिथ्या इष्टि आ सखा

सच हेतु को कस्ते भय हु छ भनि मिथ्या दृष्टि ले र विभु भाव निजो थि या अ न्यो न्य वे लु ला ग्या का थि या त से काल मा लक्ष्मी द
 ले प नि न ज र ग म्पार अ नि प्रि या रि मि थ्या इष्टि ले पाउ ला गनु भे ग म छ जो इ ने मि थ्या इष्टि क स्ति भ न्या उ प्रो न्न

प्रबोध-

४०

चर
कटिपं आद्रगकेर-पुननको-वडो भारवो-कुरुभयो नस्तेवडे-भ्रु-लसिभयाकि-चंडा-पुनल-सुकुलोभयाका-केस-शुदाये-
यिनू-सु-रनाक-नयारभयाका-मा-नाइ-फेरि-चुल्या-मालगा-नुनाका-छले-लगरि-लिलालेउ-भोउ-रायाका-वा-कु-कुनाले
देसियाका-पुनना-पु-कटभयाका-न-खका-यनका-प-किले-युक्तभयाकी-र-सिनील-केमलका-प-व-रोवर-अतिलामाने-चले-गरि

मनमाचडोहस्यग

धोणीभारभरालसादरगल-न्याल्यो-परति-कृता-ल्लो-लो-सि-पु-भुजो-प-द-सि-ति-कु-चो-मी-ज-च-रांका-
वलि-नीले-दी-वर-दाम-द-ध-न-रा-ह-सू-ध-य-ति-म-ना-दा-ला-न-दा-ल-न-लो-ल-क-क-न-रा-ण-त्कारो-न्नरः

सर्पति

उन्माभयाकि-दोलाको-चालन-वरोवर-च-चलभयाका-हातका-ग-ह-नीको-न-रा-ण-त्कार-श-वे-छ-पहिले-मुनि-या-को-ज-स्का-ए-
सि-व-डि-सो-भाले-युक्तभयाकी-आ-उं-छे-भ-नि-वो-ल्यो-म-हा-मो-ह-ले-र-

शम

४०

विभ्रमावतिचोलेद्धेऽश्रुतिप्रियारिमस्विः इनेराजामहामोहदुःखः तस्यार्थः नजिकमापाउलागुहवसुभनिविभ्रमाव
तिलेर्मिथ्यादृष्टिलेपनिहवसुभतिरः नजिकमाग्राईरः होतजोडिकन महाराजकोजयकल्पानहवसुभनिवोल्दिभे
महामोहजोद्धनः आजागर्द्धनः हेप्रिय हेमिथ्यादृष्टिप्रकतभयाकाद्धनः स्तनमा नयकायत्तजमोपरिद्धनसोहेभतिपुष्टउरु

विभ्रः सप्तमहाराष्ट्रोऽवसप्यद्विप्रसहि मिथ्या उग्ररत्न अजउरमहाराष्ट्रो महामोहोहः प्रिय
दलितकुचनरंवाकमकपालीरचयममाकनुप्यत्तविवरा अनुहरहरिशिक्षिकरोकस्थित
हिमशैलसुताविलासलक्ष्मि

भयाकिमिथ्यादृष्टिमेराकाचकाग्राईकन अलिंगनगरिवडो आनन्दगराडनुहृद्धवसुहेरुन कावरोवरश्चिनेराष्ट्रोनेत्रभ
याकी महोदेवका कायमानवस्थाकी पावतिलेगयाका विलासका स्वभाकी अनुकार गुर्नुहवसुभनिमहामोहले
आजागन्पापुनीरः

प्रबोध.

४१

मिथ्यादृष्टिपनि. थोरै हास्पले युक्त भया कि. जसो ज्ञाता गनु न भयो सो गच्छु भनिर. कसि कन आलिंगन गदि भैरा नाम होमा
हसे पनि आलिंगन गनी ले भया का सुख को मन मा अन्न भव ग पार. वडे आश्चर्य छ. यो अति प्रियारि. मिथ्यादृष्टि को. आलिंग
न गनी ले न रागे ग या को जु वानि पनि. फेरि फरि के के न. वडे न ज्ञा यो न आ यो भनि वा ल्यार. सोहि कुशे देखा उं छन ॥ ॥

मिथ्या सस्मिते तथा करोति राजा. आलिंगन सुरव न भनि चय अहे पिया या. परि घंता न्परा वृत्त मे न वयो व.
नमः ॥ तथा हि य प्रागसीदभि न व वयो विभु मा वा प्रज न्मा चि नो न्मा धि वि वि ध वि च यो प प्र वा न्द
मा द्राः यती र न्ती र प नि न वा क्षे म ज न्म स क पि यो छ प्र मा न व इ व पु न मा न्म यो भ वि कार ॥ ॥

न व य का वि ला स दे धि न् पु न्प न्म यो को. चि ज्ञ को उ न्म य ग न्म भ यो को. ना ना प्र कार का र्त्ता च द न मा ला आ दि ग न्मा का वि च
य को स व व द्नु न्म ले भ या को आ न्द ले ग रि अ ति प नी भु त भ या को स् स्ता हो भ नि व रा न्ग न प नि न स कि न्मा न्म रू प ले यु क्त भ या
को. का हि न व यो व न जो छ. पहिले हु दोर हु छ. सो हि क दर्प दे धि न् भ या को वि कार जो छ. ने मि थ्या दृष्टि ले आ लिंग न ग न
ले ग रि उ न्प न्म भ या को. व डे प्रे म प्र ति ले यु क्त भ या को. फ रि न या ज न्मो भे के. मे रा चि त का वि ति ला ई. नि र स्का र ग द्ध भ नि

सागप्यार
मिथ्यादृष्टि

४१

मिथ्यादृष्टिजो छः विनिगर्हः हेमहाराजः सजो ह्युत्कालमाः वेडेनत्रायेनलेयुक्तिभयाकीछुः निश्चिजानुहवम् चित्तग
गडीकनः लाप्पाकोः प्रमपुतिनो छः कोहिकाललेगरिपनिष्टुदुत्तोरहेनछः वेडेसेश्वर्येलेयुक्तिभयाकाः हेराजमहा
मोहः आजागनुहवम् कउन्कारगाँमिन्नः हेजुरलेमलाईः सजिवोलाउनुभयोः हजुरहेरुः

मिथ्याः महाराज्य अरुंसेपदंरावयोचनेवसंयुक्ताः गारुभावागुवंदुपेम्पकालेसाविविहरोदि
आनवेदुमदारकः किरिमिन्नभदनासुमरिदसिमेहः प्रियस्मर्षसहिवाभोक्तयो भवेद्वयादहिः
मन्त्रिभिन्नौभवतीकनवजिवराजनेः मिथ्याः महाम्पनथाविन्नानवेदुमहागः आमोहः

लेपनिसेगनुभयरेः धन्यवशमाग्लेक्तः युक्तभयाकीस्थायुः अनिविंजिगुरिमिथ्यादृष्टिलेरः महामोहलेपनिदेप्रियः
अतिराजाजद्यभयाकिमनुहवम् योप्राणिः आक्रुचिन्नदेधिन्ः वाहिहरेछः तसेलाईसजिन्ः तस्तेसंसारमा
व्यवहारछु

वङ्गेने३

प्रबोध-

४२

तस्यार्थः मेरा चित्त रूपि निनामा लेणी व्याकिः पुनर्विरे गरि तपानि बहुने सोभा यमानुङ्कुनुङ्कु - संज्ञे प्रकार ले चित्त
माः सर्वदा रक्षा किः तपानो तपः ननु जोगे दे न भानि आजाग न्यार मिथ्या इष्टि निः कामिमाः वडे प्रसन्न मन या का लहा
राजकुनुङ्कुने न नि के हि कुरे आसाग नु हव स आन विनि गरिः ज संज्ञे प्रकार ले प्रकट भया का न्यंग ले गरिः

यथैव प्रकाशिते रगिः सवव विचर सित धेव प्रवर्त्ति तव्यम्ः अन्य अन्य दास्याः पुत्रि अष्टा विवेकेन सहोपा नि
यडे या जयितु कुट्टि नी भाव माप ना अतः प्रति कुला मकुल जपो पा पापानु वर्त्ति निम्क स या कथ्यताः
राजो पारो ड्यु नियो जय मिथ्या.

सर्वे जागमा किनुङ्कुने संज्ञे प्रकार ले गरि अवउपां तपनि नहनु हव सः अनि आजाग न्या महामो ह्नेरः दो मो कुरो
पनि आजाग न्हेरः हे प्रिये हे मिथ्या इष्टिः वडे अ नु र्थ कुरे मु नु हव सः सा र्थान् दासि की छोरि जा सि भया
कि अष्टा जेष्ठ उपनिषत् लाइ राजा विवेक ले सग भट गराइ वडे प्रीति गराइ नानि निजः कुतुनिका रूप धा

रान
४२

गिणचिह्न नस्यार्थः इति मंगलसदा सर्वदा विरोध मात्रेण न्यायभया की चेदेदोर्भा र्पलेयुक्तभया कि चडी पापिनी हासा कुलको
क्षयगनेनाई नयाई भया कि समदम आदि पापिहेरुको अनिपियारिभया की असुक्ता ममाला गितपूनि रसो नग
नु त्रिभया गन्या कोहि न भया कि वाइनि छलुरेराइ भया की तस्त्रा अद्वा लाई केस मा फेरोहालि धिमा रि लेजि कन पा
खराड हेरुका राजा मा सुपि दिनु हवस् भनि आजा गन्या महामोहलेर मिथ्या दृष्टि विनि गेछे ॥ ॥ ॥

सुंदेवो मज्जे के विविशे अशुलं भई रोग अहिनि वेसे न च अ न मज्जे के नू जेव भट्टि रोगा दासि सदा आरां
करि सदि सरव भय मिथ्या धुमो मिथ्या मोक्को मिथ्या वे अ मग्गो मिथ्या मुहावद्य आराई मिथ्या
सगग फल विज्जेति भनि ज्वेति वे अंग जे व पति रुलि सदि कि उरा उव निखदम्

हे महामोहना म राजा रत्ना यो रे कुमा पापनि केरा मा फेरोहालि बांध भआ आइ पा नग नु हवस् दासी भया की अ
दोजो छ महामोह को रत्ना आजा मेरे छ भनि वचस् सुंदे मा पनि हजुर हेरुको आजा गने छ तस् अर्थः
वचने लेवसे मा आइ गई भन्या बाधिल्या उन्ना प्र योजुन के न भनि विनि गरि महामोहनाई सधार ऊन्ना
पुरो वो ले हे महामोह सुनु हवस् धर्म भयो मा हव भयो वेद मार्ग भयो वडे सुख को विद्वग न्या भया को नाना

प्रबोधः

४३

कारकाज्ञास्त्रहेतुकोपदुर्भयोः यो विद्याकोऽभ्यासगारिस्वर्गमित्कभन्याकोऽधः वशधूर्तः आस्तीकहेतुले मोहि
विद्याभयोः इनसर्वैकुराजोछन् मुतेहुन् भनिवारंवार रेमैलेबुभाइयाकीः अद्वाजोछ भरिलेमार्गलाई छोडिहा
स्त्रि बुद्धनुहवसर उपनिषत्शास्त्रलाई छोडलि भनिक्याविन्तीगरुः दोशोकुरेपनिः सुन्नु हवसर माः

अविज्ञाः विसम्यां नन्दविमुक्ते मोक्षस्य दोसानन्दे स अतिस्पृष्टवनि स दो वि विरत्ता करिस्सदिमयसद्गुः

लाचस्त्री आदिगत्याकाविस्समकाश्चानन्ददेयिन् भिन्नभयाको मोक्षविद्ये अनेकदोशे सदेयाउत्तार उपनिष
त्तपनिर्मुगेरहेछ भनिउपनिषत्तदेयिन् वडेविर भेकन भिन्नभयाकि अद्वाजोछ चाडेहोस्त्रिभनिथ्याह
स्त्रिलेर जस्तो बोल्नुहुन्छ तस्त्रै कामगर्नु भयो भन्या उपोन्न वडेमेरामन मा बढिया लागेन्या कुरा तपानिले
गर्नुभयो भनि आत्तागन्धार

राम
४३

महामोहजोछनूफेरिनिथ्यादृष्टिलाइ. अलिङ्गनगारि. चुबनूगणलाग्या. मिथ्यादृष्टिलेबोल्ह. सेवेलेथाहापाउन्याभया
कायकात्रोजगामा. नपानिलस्सत्ताकुणगुनुङ्क. भन्यामलाइ. वडोलज्जालाङ्क. भनिनसुभेक. विनिगारमिथ्या
दृष्टिलेर. महामोहलेपनिबठिया भठेस. धरेमा जाउभनि. आशाग-गार. आक्रामेनास्वीः

राजायदेवेसुखमेप्रियंसंसादितम्. प्रियमापुनरालिङ्गपचुबनि. मिथ्या. भद्रगोपत्रासेवियवुंउ
पत्तेनलज्जामि. महामोह. नुइवस्तु. वासागारजेवप्रविशतिनिसुताः सर्वे॥ ॥ इति श्री
हमिअविरचितेप्रबोधचन्द्रोदसाय्येद्वितियोक्क॥ ॥

हेरुलेशकितभयाकोसर्वेमहामोहकोसेनाजोछ. महामोहलेमहितभेकन. नृत्तसालादेचिन्निबुद्धोभ
यो॥ ॥ ॥ ॥ इति श्रीप्रबोधचन्द्रोदसभाषायाद्वितियोक्क. समाप्तः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

प्रबोध

४४

दोस्रो अकविधे राजाविवेकका धर्मनु^{का} नको. चार्थगराउ नानिमित्त राजा महामोहले. देम आदिग मा कामें
ही हेरुला इन्वडा २. काशी आदिग मा का. ती थहेरु विषे. पण उदाभया. अवय सम अविषत स्वा अ क मा राजाविवेक
का सेना को पराजय गे नानिमित्त. गारव राड हेरु का आठ म्वर. जो छ. वेहु प का समान

गतः प्रविशति शान्तिः करुणा चः शान्तिः सा श्रमात् २ कामिदहि मे प्रिय दर्शनम् मुक्ता ककु
रं का कानन भुवः दोलाः स्रवत्क्षारयः पुरा या न्याय तानि संतत तनये निश्वस्ये न्या नसाः । य
स्याः प्रीतिरमीषु सास्त्र भवती चराडाल शोदरं प्राप्ता गौः कपिले ववी वति कथ पखराड हस्त
गता. अथ बाले जी वन स भा व न या.

कुछ भनि रखेता कथा को प्रसग कहि छ. महामोह का आशाले गरि मिप्पा दृष्टिले. शान्ति कि महतारि अडालाई पा
खराड का हान. सम्पाठ प्राप्ता महतारि सग विवोग कु नाले. आसुहाडु दे गरि. करुणा शान्ती जो छन. नृत्प सामा आउ राम
दाभया. रुदे गरि हे मात रे अड. काहाडु नुहु छ. मलाई. दर्शन दि नुह वस्त्र भनि शान्ति नोई वो ल्दी. ४४

भः भयले रहित भया का मृगले युक्त भया किः वनस्थलि भयाः छहरा पन्या जूलेले युक्त भया का खर्वत भयाः प्रतिपवि
 वभया का देवाल यह रु भयाः चारं वारं रत्तपा राग न्या भया का वान प्रस्थ रु भयाः इने सर्व विपु न्य भया की नस्
 तपात्रिका वडा प्रिति थियो सोहित पात्रि आज काल पाखराउ का हात मा जानु भे सो रह छ चंडल को घर भित्र प्राः
 प्र भया की कपिला रु जो छ वडे कयले पनि जिउ देन नस्ने गरि प्राखराउ का हात मा पाप त भया

यत्तः मामनालोक्य न स्नानि त भुक्ते नपि वत्सपः न मयारहिता अडा मुकुर्त मपि जि वन्ति
 तदिना सडा याम पिशाने जि व नं धिउ वन मेव

का तु पात्रि जो छे जिउ दि दे छे जिउ दि हो न भानि वोलि शानिले र जिउ दे हो वे न भानि शंका पनि पागु नु डं छ जस्कर
 रालि मेरो मरु तारि अडा जो छ न क्षण छरि पनि जिउ दे न न म सातिलाई न दे व्या उषान्न स्नान भोजन जलपा
 न इत्यादि को कुरा पनि न गन्या भया कि आज काल म संग विछोड भया की अडा जो छ न क्षण छ

प्रबोध.

४५

भक्ति २

रिपुनिः शिउदेष्टे नन्. अद्भुतगिरिजोद्धिन्. भन्मा अद्भुतले मगवियोगभैकन. एकक्षनपरिपनि. आतिकोत्रिउ तुजो
छः मनुष्यगेवरछः सातिले आत्मावानगरि. पारवण्डकाहानधुग्पाकि अद्भुतकानिमित्तविनासगरिरं करुणासंग
वडाविरहकोहिकुराः कोविन्तिगर्नलागिन्. हेकरुने. हेसगिनिः नमश्चर्यः अवश्यमेलेपनिमनुछः मलाई
मर्नानिमित्तः मलो लगावनुहवसः अतिवल्दा अर्शमिषवे मगरुलाः अतिचाङ्गीगरि अद्भुत.

तत्सारिवकरुनेमदर्थचित्तामावरययावदः चिरमेवदुताशनप्रवेसेनतस्याः सहवरिभः पानितकरुना
मा अम्.

कीसगिनिजुंलाः भनिविन्तिगरि आतिलेर करुनाजोछन् रुदेगारि आज्ञागच्छिन्. ॥

॥

॥

॥ राम

४५

हेमपिः हे शानि. विषवरोवरभयाका ज्वा लासुं मुदायवशेवर. काशामासुहेमापीडागर्भाः सहिनसक्रावचन्
यदिवो लुङ्छ. अयस्मजिउनालेरति भयाकिसलाहपनिगनुङ्छ. निश्वभयो नसकारणलेप्रमेचम. कुनुह
वस रेप्रियारिसगिति क्षणाघरि जीन्यालाइः धारिगमनुहवस्. जहासम्प्रसतोउति मुनिहेरुकासमुदाय

सहिसर्ववि समजलगा जालाकुल कस्मकदुदः सहई अयवकासइजपतिः सवथाविलु न्न जिवि
दयियसहरी. पावई दो न दो पुस्मे सुचस्ममे सु मुनि अन्न स माले सुमागिरथी तीरे सुनि अने
निरुवेस्मक आमिहामोह. भीदाकतिनृपापध स्मारिगवस दिः शानिः. सहिकिमनिधने
वि

का २
लेयुक्तभयाका वशगः अ अर्मले युक्तभयाका जंगानि रविसेः वशय त्वलगी अहालाइ. योजो लाः कंठकप्र
चित् ममेगाहका वशभयलगरि. लुकि कनः कं हिजगामा वस्या किङ्कनिर्. भानिकरुनास्ति लोई वुम्हा
हरः हेमपिः. कोहायाजनुङ्छः. भानत्रानिले वोलिद्धन्.

शान्तिः महि किमुप्रति कलेविचारिभ्यः सभावेत्त २ मूलत्रुटि

प्रबोधः
४६

वनका धान्यलेचिह्नभयाका बालुकाका समुदायलेयुक्तभयाका वानप्रस्थहेरुलेव्याप्रभयाका नदीहेरुकातीरभ
या समिधाव्यालभयाकोयतः स्तम्भकाबललेयुक्तभयाका चमसभन्याकायुक्तकापत्रहेरुलेयुक्तभयाका
नानाप्रकारकाजशाला भया वृक्षचारिभया ग्रीहस्ति वानप्रस्थ भिक्षु इनेचारेजा प्रमभया एतेप्रकार
लेगारि जग्गा २ मायो ज्यो वडेया धुर्येलागेपा केमेजग्गा मापनिदेशना कोकडन कुरोगरु भ्रष्टा कोकथावात्ताप
नीधारेकिनेसेकतानिसरितो कुलानि वैरवानसेराकतानिसमिच्चरवाल चमसभया प्रागहाय ज्ञानम
प्रत्येकंचनिरूपितो प्रतिपद चत्वारस्वा प्रमाप्रदुयाः कचिदप्यहोखलुमयावात्तापिना करिण्ताके
रुनासहिचवभभामि जइसा ज्ञेवसस्तइसहुं तदयन स्मरिसिंदुगादि संभावेमि नखुत्तारिसीसेपु
स्ममयी प्रोपुप्रारिमी प्रसूभावगिज्जविवर्त्ति प्रसूहवर्त्ति जेथा हिदेवि श्रीयेनकात्मजाइ
शमुयः सासीहिरक्षे सो नीता चैवरमानलः भगवतिदेववयी वानवे

मिः मैलेमुनिनभानि शान्तिले दुयितभेकनः सस्तोकथा कहिर करुना वो ललागिन् हेसरिषहे शान्तिमस्तो
कुरेसुन यदि सत्त्वगुनलेयुक्तभयाकी उने अडा छतुभन्या तस्तीलार्हः एतेवडेदुःखपन्नीहो भनि संभाव
नागनेननिसकेन किनभन्या सस्तापु रापात्ता हेरुजो छन सभावनापनिगारिनसकिन्ना भयाकी सस्तिः

शय
४६

बडिपत्तिपाउदेननः समारमापुपात्मा हेरुजोछनः वेडेमुखको भोगगछनः भुनिवित्तिगरिन करुनाले शात्तिसंगरवडा
 पुगाप्यात्माहु छन तपनि देव न्यनुकुलनहुनाले दुःखपाउछनः भनिमातिले वालिछनः हेसरिवेदेवसनाथे छेनुभन्या
 कउनुकुराहु देनभनिसोहिहिकुरो देवाउछीनः रामकिराजा जनकिछोरि साक्षात्तिलेक्ष्मी रूपभयाकिः दूविशिता
 जाछनः राक्षसभयाका रावनका घरमा बस्ति भेनः वेदत्रयी जोछदाने हेरुले रमातलमाले गया गंधर्वकि मडालसा

नाउभ

गंधर्वस्पर्शालमाचतनयापातालकेतुछ लादेन्यपजहारहंतविषमामाविधेष्टतयः न इवस्तुपाराग
 लयध्ववतावदनुरावः करुनाः स्वेवा भोइतिपरिकामनः

याकीः छोरिलार्पातालकेतुनाउभयाकादेन्यले आक्रमनजिकमाहरिलग्याः स्मेते प्रकारले गरिः विषवरोवरभ
 याकादेवका देवका आचरितजोछन सोः लोकमाकोहिभिन्नैगतिभयाकाछनः जातुहवसः स्मिन्नपुगाप्या
 अदुलैपनि पारवराडका शतपनुः नौछः देवीविपक्षहुनाले हाः भनिवालिरः हेवस धारवराडका घरमा जाउ
 पाउलागनुहवस भनिशात्तिलेरः करुनाले पनिजोआजागउहु छवठिया भनिवालिरः पारवराडका घरमा
 करुनाशात्तिजोछन जाहाभयाः

प्रबोधः
४७

करुनाले वेदे भयने दुःखे कन हे सरिवहे नुहवस २ भनि वोलिरः शान्ति पनिक उनु याराक्षस हो भनि मो धिर करुनाले
नः वोल्वला गिनः बुद्धा विद्या का खिलाल पतिया को दुनाल अनि चि फला भे कन वेडे उ लीग हो दुनाले ननु
किन्प्रा भया का शारः कानिले युक्त भया का यो जो छे हनु हवस रु उ र वलिया को के स ले युक्त भया का दिगं वर
भया को भनि वोलि करुनाले शान्ति वेदे हे सगिनि याराक्षस हो इन मा क्षान न पुम कहानि अ य जानु हवस भनि सातिले चरती

करुणा सत्राम सहि कस सो २। शान्तिः का सो राक्षस करुणा सहि पे कस २ जो अ प्र सो गल न मल प
का पि मा दु ल विह ल विह दु पु क्त दे ह छ वि गु ल्त्र चि अ चि उ र मु क व स रा ड द स रा गि सि हि सि उ पि छि अ ह थो ड
दो जे व अ हि व द्दि शान्तिः सा वि ना य रा क्ष सो नि वि र्थः र व लो य म् करुना म् न को य सो भ वि स्म दि शान्तिः
सरिव शा च इति अ के करुणा सहि अ प्फुर न महा म उ ड मालु भा सि अ पु अ न ज ल दि य व ड म त्त द म ड ले ध पि शा भान अ य सो

यो क उ न हो ला भनि करुणा ले हे सगिनि शि शा च हो ला न नि शा का ग छ भनि शान्ति ले वोलिरः करुणा वोल्वला गिन नरे स राम
रि व ड ने वि स्तार भया का किरण का समुह ले अति प्र का स मान भुवन मे रा ड ल लाई ग न्यो भया र स्ता महा इ न पि सु र्य का म रा ड
मा क सो ग ४७

अद्वलस्यो ननु ह्यस्य भनि वोलि शातिरः करुणा मे प्रियाः नृत्य शाला कोष दक्षि नागपाः अद्वलार्यो जन लक्ष्मभया-
 दाहाउषो नृभिश्च कुरुष्व ध्याको पुस्तक हान मालि चोको नुदुशा स्वको अभिमानो देवता भयाको बुद्धो नृत्य शाला पवि स
 गच्छ मोहि भिक्षु जो छ मन मा विचार गरी कहि कुशे वोल्ला दो भयो हे उपासको शुनर ससार का निमित्त भयाका अशोक का
 सनाको नासके

ततः प्रविशति भिक्षु रूपः पुस्तक हस्तो बुद्धा गमः निक्षुर्वचिचित्यः भो उपासकाः साक्षात् साक्षाद्वि
 शयनानिरात्मका भय भो प्रियता वहि विप्रतिमाति भावो सैवाधुना विगलितारिषित वासनत्वाद्धि सतति
 स्फुरति निर्विषयो परागाः॥

नाले भित्ति पितरि दिग्भा का अने रूप का विषया कारले शुन्य भयाको मोहि सानको सतति जो छः स्फुल्ल विषे वहु
 ते प्रकाश मान डूछः जसु विज्ञान का सतति विषे उत्पन्न गराश्याका छटपट आदि गन्धा का धने माना सुद्धया
 भयाका अन्माको वहुने को लसम्पत्ति न भयाका न ना विषय जी छ न स्तो प्रकार ले गरि बुद्धि विषे कल्पि नहु
 नाले अतर्भा रस्या का पनि बाहि रस्या का जस्ता देखि नहु न सहि मार्ग जो छ वहुने प्रमारा मूल भयाको छ न स अ
 र्थति मिहे रूले पनि सैने मार्ग को अनुसर नगनु भनि आशा गयो उपास कहै ललाई भिक्षु कले र

प्रयोध
५०

नत्पशा लाकोपुदक्षिरागारिः फेरिवोवर्गान्गरिवोत्तुलागो चडेआश्चर्यछु रनेवौदुहेरुकोधर्मजोछु चडेमुन्द
रछु जसधर्मविये सुखबडेछु मोक्षपनि भनिसुखो कुरो वोलनलाग्यार सोहिकुरेदेयाउछु जसवोवकाधर्मवि
ये मनहन्ना वचनवोत्तुभया अनिसुन्दरधरभया आप्रामनकोचेथा जान्या भयाकावेशपारखीरुभया अनि
राधोविछाउताभया भो कलाग्या

परिकम्पपुनः सक्षाधम् अहोसाधुरयसोगतधर्म यत्रमोरखमोक्ष भवतथाहि आवासेलपतंस
नोह रमभिषाया नुरूपावशि आर्यावाञ्छीतकालमिष्टशमनंशयामृदुप्रशस्तराः ॥ ॥

कसमयमाः अतिमियोभोजनगर्नुभयोः स्नेहसवेकुरा अतिवठिया भयाकाछन् जानकुलमित्त्राभयाका विवा
हिनास्त्रीभया जपस्यागन्नावशरभया सखाकुरा बहुतेदुःखदिन्या भयाका केहिकुराछेनन्

सं
५०

जसबौद्धविषे कुंकुमादी चन्दलेपनार्थीले गरिया काः कामदेवका उक्तवरूपि किडाले गरिउत्पन्नमया काः अप्रानन्दले
परिपुर्णभया काः तरुनिस्त्रिहेरुले वेडसडाले गरि सेवा गरिया काः प्रकासमानमया काः चोदनले अतिउज्जाला भया
काः विहेरु जोरु सुबेले गरि कारिन्धु नृमनिभिक्षु जोरु बोल्दा भयाः बाहाउषा न करुणा जोरु बालनलागि हेससिः
हेरांति अति सप्रका नालका विः क्षेवरावर अप्पला भया काः अतिला मुगस्व वावस्व पैर्या काः आर्यापनि मुगडगया
काः स्तना विलस्य नः भय बाया काः पुरुष जोरु कउत्त

अद्भुतपुष्पपासिता युवतिभिः कृष्णगरगोत्सवक्रीडा नन्दभरे वर्जनिविलज्जोत्तेनाग्ज्वला रात्रय करुणा
मोहकोरु सानरुगिता लनरूपल बाले वनकसा अमिमगनि वरा मुद्दसनुड सुडपि डोइरा जवन्ना अछुनि
आतिसविबुद्ध गमस्यः भिक्षुः आकाश भो भो उपासका भिक्षु वसा धुयन्ता भगवन् मुगतस्व वाक्या मत्तमिति पुस्तकं वाचयति

हो नृमशालामात्रा उद्धेरी विचागनु हवन्तः भनि बालि करुणा लेर आंति बोल्छे हे सखि वो धको सास्त्रमापरगत
भया को पापुसु जोरुः भिक्षु कोरु धाया को बुधे हो चिह्न हवन्तः भनि आति जोरु करुणा संग बोल्छि भो सोहि भिक्षु
जोरु आकास विषे हरिकुन बोल्छे उपास कहो हे भिक्षु कहो केवलः साक्ष्यान् भगवान् भया का बुद्धका चचनरुपि
अमिन् जोरु भुनः भनि स्तना कुग बोल्छार पुस्तक वाचन लग्ग

तेसैममयविधेः क्षपनकभन्पाकेः दिग्विभित्तजोहः भिलाईहेइलेरिकनवदोउच्चसदगरिः वोल्दहः अरेरभिक्षक
तिमिक्षेः कोहकुरोसोधुः भनिवाल्पोदीगंवरलेरभिहुजोहः केधलसहिनभुकनः हवदोपापिवाचकेः अक्षतिभ
याकाक्षमिक्षेः सोधनाकोनेराअधिकाः कनिनडराईः विलापगम्येगारिवोल्दहः भनिरस्नेाकुरोवोल्पोभिक्षले
रक्षपनकजोहवोल्दहः अरेकाधनगरः कास्त्रकोवानकोहिसोधुः भनिवाल्पोरभिक्षजोहवोल्दहः अरेरक्षपनक

क्षपनकः मिश्रमा लो केष्टेः शब्दम् अलेष्टलेभिकवुवाइदोदावः किं विपुष्टि सामः भिक्षः केष्टुः आः पापाचत्रा
 कनेकि मे वं प्रलपतिः क्षपणकः अलेमुचकोहसत्यगंदकि विपुष्टामिः भिक्षः अरे रक्षयनक शास्त्रकथामपिः
 वैशिः भवतुष्टिः मृत्तावन् उपसन् किं पृष्ठसिः क्षपनकः भनदावरवगविगा सिगात्तु कस्मकदेवदधा
 ली अरीः भिक्षः अरे मयेना मृत्तमे सत्तनिपतिनक डिदिज्ञानक्षनसमुष्टि नवाम नो मोक्षने क्षपन
 कः अलेमुकवरइ कस्मिपिमननले कोविमुक्तो भविस्सदिः तदोदेसं पदपणा हस्सकदो कैलि उपत्रा लं

ठियाहामिलेपत्पानुंभन्यारः नजिकमाप्रार्कनः कुरुवानसाधुसः सोधः भन्योभिक्षलेरः सपनकजाधुवा
 ल्हाहेभिक्षकभागनः शरीमानाशङ्कन्याभयाकाः निमित्तैः कस्मान्निमित्तव्रतगिरिहः भनिषोल्पो सपनकभन्याकादिगेव
 रलेरः भिक्षवोल्हः श्रुरक्षपुनकशुनः हाप्रविज्ञानकापरपशमाः प्रवेकागन्याकोः कोहिपनिसमारिजोछमुक्तिहुछः
 भनिषोल्पोरः सपनकजाधुवाल्हः श्रुरमुखः यदि कसेमन्वतरपिषेपनिकेहिपुरुयजोछः मुक्तिहालाः क्यहुदेनतमः अर्थस्मसम

इति गंवदसास्त्रकोकथापनिर्ण
जादृक्षसुब

गुरुसुख

द्विस्त्रिंशदिनदोदशसप्तवत्

यमा दुष्टकृष्णमिनेगाचे एस्मि सवमेम् उददिठु

卷之四

प्रबोध
थर

निनयभयाकासरिको - कस्कोउपकारगली - दोसोकुरोपनि सोधछु - रज्जो धर्म जो छ - कस्कोउपदेसगयोकोहो भनि रज्जो कु
सोगपोशपराकलेर - भिक्षोवाल्छ - हेक्षपराकसेवेजान्या भयाका भगवानु बुद्धलेकह्याको - यो धर्मको भन्यो भिक्षुलेर सपनकषा
ल्छ - ज्युरे - ह भिक्षु - सवेजान्या भयाको बुद्ध भनि - कसो गरित भिले जा भिस - भनि बोहोर भिक्षुवाल्छ - अर - अपन क बुद्ध
काशा खैले गरि - सवेजान्या छ - भनि बुद्धले - वेडेय सिद्ध भयाको छ - भन्यो भिक्षुलेर सपनकवाल्छ - अर हे अनिसो गोडी
मयाका भिक्षु

भिक्षु ननु सर्वज्ञेन भगवता बुद्धेनो ॥ यमेवः सपनकः ॥ अलेः सधर्मो बुद्धे स्थितिक धं तु यणादम् भिक्षु नबुद्धे
गमेरे वप्रमिधो बुद्धः सर्वज्ञ इति सपनकः ॥ अले उज्जु बुद्धि आनरनस भामिरे नमवरा नपडिव ज्ञे सिताथहेवि
मवे आणा भिनुम विनिद पिडा महेहि सद्धमत्त पुलिसहिंदा मत्ति ॥ ॥ ॥ रामो जयति ॥ ॥ रामचन्द्राय ॥

यदि मशास्त्रजान्दछु - वडो सर्वज्ञ भयाको छ - भनि बुद्धलेकह्याको भुनि बुद्धको वचन मुनि के निश्चय मानि बुद्धलाई सर्वज्ञ छ भ
नि छहराउछ सभन्या - मेरा वचनको पनि - निश्चय मानु - सपनि - मेरा कुरा सवेजान्या छु - हे भिक्षु सुन - नेरा पिता पिता मह आदि
गन्याका मान पुर्खा ले महि न भयाको तपनि मेरा राम हाम - ज्ञे जो कुरा बोल्छाउने कुरा को सोचो मान्छु सभन्या भनि
रज्जो कुरा बोल्छो सपराकलेर

राम
थर

बड़े को धले सहित भैंकन भिक्षु बोल्क विद्या के हिलो धार्म्य भया का चोपपि भया का रेपि सा च नेरो पनि मुदा सङ्ग भमि
 बोल्पार क्षपन क बोल्क चुर वे र्पा का पु ति हेरु के अति पियारा भया का यो दया न जो छ मे ले दया का हो सुन तोला
 ई विधा सङ्ग न्या कराम भेन्दु भनि बोल्पार सोहि कर गछ बुडु को आशा भयो बुडु को आश्व भयो यो म वे छो डि दी ग वर का
 नजिक मा आ ई दिगं वर को छेन जो छ धानु ह व स ति मिले भनि भिक्षु लारि सिध्दा ग गोर भिक्षु पनि बोल्क रेपि पि आ पु ना शिया को

न दो सी को पनि ना जग रणी
 कोर का ग छ म ज स्कार न ले अ
 भनि र स्त्री कुरो बोले क्षपन क ले र न र का कुरा का हा स्म ठः

भिक्षु को धः आ पाप पि आ च म ल पं क ध र न वा ह दाम सपन क अले विहा त दा सी भु अंग दु द प वृ ज्जि अदि दान्तर
 दे म र से द सि दे ना वि स दु भ रणा मि बु डु नु शा स न पहिले हिले य अलि ह ता गु सा म न अर गु म ले तो दि अ व ल दे ज्ञ
 व धार दु भ व म भिक्षु आ पाप अ व य न स्त परा ना रा यि तु मि छु मि च तः स्वारा ज्प प्रा ज्प मु त्त ज्प लो के नि न्द्या म
 भिन्दि न अ सि वा ज्जु ति को ना म भ वा नि व भि व च ना म अ पि च अ ह न म पि ध र्म दे व न कः अ ह र तः

भरा दु खे रा ज्प ला ई छो डी बडे निन्दा ग नी ला इ पो ग्ग भ या कि पी शा च ना ला ई नै व रो वर लोक मा निन्दा को पा च न भ या
 को क उ नु पु रु अ जो छ बडे इ छा ग छ दो स्त्रो कु रो पनि मु नः अति जो ग्ग भ या को पनि दो स्त्रो ध र्म जो छ कालिं छः
 को हि लिं दे नः भनि भिक्षु ले बोल्पार क्षपन क जो छ बोल्क इ भिक्षु अ ह न स च वार चन्द्रः सुर्यः मुकु रा ड्ड पर मर्थ
 जान मे वा द को दर्मा नु ग नी ले गरि हा मिले बि चार ग यो बडा जो ग्ग भ या का भ ग वा न् दि य व र ला ई स वे सा स्त्र जा न्मा भ नि ठ ह रा न्नु

ठागरी भिक्षावोल्ह अरे हेतमनक अनादिसिद्धभयाका ज्योतिः सास्त्रकाइंदि पजात्राकोजोग्गनभमाकात्तान
लेगरी ठाटियाका निमिले अतिकस्तदित्वाभयाका वृत्तको अंगीकारगन्पाक्षेमन्पार सोहि देयाउछ हेक्षनरा
क जरीरथरोवरप्रमानभयाकेविशानरूपिभयाकोजीवजोछ कहीसबंधभैकनकसोगरिनिनलोककोदानजा
चलाइममथछकथाहगभनिरस्ताकुरेवोल्पार आगुरेवोल्पाकोकुरेवलियोरहन्यादृष्टांतकहंछजस्तैयछभिध

क्षणकः गृहमरकवत्तवालचंदसुलोपलाशुशुक्ललाङ्गुलमभरणानसंवाददंसरोराशित्मुविदंभञ्जदो
संभरणत्तरात्रलिहंतस्मभभिक्षुः विहस्यः श्वरेऽश्वनादिप्रवित्तज्योतिष्यामतां द्वियज्ञानप्रतारितोनभूवेदम
निकष्टवत्तयाभाषितमृत्तथाहिज्ञातुं वपुःपरिमितः क्षमते त्रिलोकीजीवः कथं कथं संगतिमन्तरेन शास्त्रान्तिकु
पमनिहितः शमिष्येपिदीयोभावाः प्रकाशयितुमप्युदरगिहस्यतस्मान् लोकाद्वयविरुद्धादहतमजादिदमुगतदशनमवसाधनात्सु

कश्चनपरादिगम्याकावस्करुकोऽप्रकाशगरालिङ्गिपनि समर्थं न तस्मै सारभिन्नरह्यको जीवजो ह्यसेवे जा न्या भयाको
कसौ गच्छो ला गतिमिपनियोक्तु रो बुद्धः क्षपनकः तस्मान् तैः सत्त्वो कमा भयो परलोकमा भयो वडे दुःखदिन्या भयाकादिगव
रैस्तकामन्तवेषिन् केवल बुद्धको मन्त्रो ह्यः साक्षात्सु यदि न्या भयाको अन्तिराप्रो मया कोपनिहामी रुक्मै देय्ये ह्यो भनिभि
क्षजो ह्येवा लो भयो

राख्याकोविदभिर्यानि
युक्तभयाकोविजनाक
घनभित्तकास्त
मज्जाम

नवावहमनि रत्ननिष्पन्नान

बाहाउप्रान्तः शान्तिजोधिबोल्नलागिः हेसरिवहेकरुणाः अर्काजगामागार्ः अद्दालार्थाजोभानिबेलिरः करुणालेपनिवठि
 याहवसभनिरः शान्तरः करुजोधियाः चारेतरपुगेसोजिनलागाः जमेसमयमाः शान्तिजोछः आक्राअधिलुतिरः हेरिक्कन
 बोल्हकरुणायोअधिलुतिरवस्याकोः सोमसिद्धांतधन्याकोः पार्वनिलेसहितभयाकोः महोदेवकोसिद्धांतहाभानिजातु
 हवसः सोमसिद्धांतमितजार्कन अद्दालार्थाजोभानिः शान्तिलेरः करुणालेपनिवठियाभनुभयोभनिरः शान्तिः करुजोधियाः
 सोमसिद्धांतकानजिकमाजान्यभ

शान्तिः सरिवअनेतो गछावकरुणाः सधभोदुः इतिपरिकामतः शान्तिः पुरोविलोकेः सधपुरस्तात्सोमसिद्धांतः भवत्वा
 आपितावदनुसरवकरुणाः सधभोदुः रान्तः प्रविमतिकालीकरुधरिसोमसिद्धांतः परिकम्पनरास्थिसाला
 कृतभूरिधुचनक्रमज्ञानवासीनकपालः भोजनः पस्पामियोगाजनभुद्धदवोनोजगन्धिथोभिन्नमभिन्नमीस्वरार

याबाहाउप्रान्तः नत्तमालाकोषदक्षिणागगोरनरमुराडकोमालाः भगाउगालेगारिः कपलिकोरूपधायाकोः सोम
 सिद्धांतजोछः नित्यमालामाप्रवेसगदीभयोः बाहाउप्रान्तकेहिकुरेबोल्नलागीनूः नरकाहारकामालाकोपेहूनगन्धा
 भयाकोकासिद्धादीगयाकोक्रमज्ञानकावेरजाकोस्वभावभयाकोहोः मनुष्यकोकपालवियेभोजनगन्धाभयाको
 योगस्थपिकः जललेगारिअन्तिभुद्धनेत्रभयाकोस्पज्ञावदानपरिस्वभयाकोमजोछुः अन्तान्यभिन्नभिन्नभयाको

जमेसमयमाः शान्तिजोछः आक्राअधिलुतिरः हेरिक्कन
 बोल्हकरुणायोअधिलुतिरवस्याकोः सोमसिद्धांतधन्याकोः पार्वनिलेसहितभयाकोः महोदेवकोसिद्धांतहाभानिजातु
 हवसः सोमसिद्धांतमितजार्कन अद्दालार्थाजोभानिः शान्तिलेरः करुणालेपनिवठियाभनुभयोभनिरः शान्तिः करुजोधियाः
 सोमसिद्धांतकानजिकमाजान्यभ

प्रबोधचं
५४

कः कुडलादिगन्धका नाना प्रकार का गहरा को अन्धे ने भेद छत पनि सुवर्ग देखि न भेद छे न ते मै गरी देखि न भनि स्तेन क
रो के पालिक जो छे वागेडा भये मोहि क्षपन क पनि बोल्छे यो पुरुष जो छे कपालिक को अन्तर्ग देखि न समर्थ स्तेन पुरुष छे
उपनि केहि कुरे सो धर धरु भनि बोल्छे नजिक मागे कुरे सो धन लागे पाये रे कपालिक के न राखि मुराड धारक निमिरे स्तेन को
धर्म हो के सो मा भो कहनु वर स भनि सो धो क्षपन क लेर कपालिक जो छे बोल्छे अरे क्षपन क पहिले हो सो धर्म जो छे धुन के सो
हा सो धर्म छ भनि बोल्छे अपा

० क्षपन कः अले से मे क बलि अ वंद पुलि से बोले दि नारंग विपु छि स्तम्भ उपसृत्तः अले र का बलि आन लाह स्थि भुं भुं
राड धलिः आ के लि से तु व धर्म के लि से तू व मो क वे का पालिकः अरे क्षपन क धर्म ना वद स्या के धारय मस्ति स्का
क व सा भि धारि न महा मो सा हति जुह ता व हो ब्रह्म कपाल कल्पि न मुरा पाने न पारणा ॥ मद्यः कन्त क ठार कराठः
विगलत्की लाल धारो ज्वेले र चैनः परे सो पहाल बलि मि दे वो महा भै वर ॥ भिक्षुः करे पी धाय बुद्धः २ अ हो

धर्म की वर्ग न गच्छि गि दले मु छि या का बो सो चो रे न र प धारो ला ग्ग्या भया का बडु ने मा मु को अग्नि मा हो म ग न्ग्या भया का
रुक्ता हा मो वल क पाल मा व ना या का सुन्दर म दि रा को पा न ग र्गालि ग सरि र मा पु स्ति क छे हा मा पु ज्य भ या का दे व ता प राम
नि पु न रे क्ष प न क न त्क्ष ने मा का टि या का अ जिक ठार भ या का ग ला देखि न चु ड दार न क का धार ले गरि अ उ ज्जल म प ४
या का रुक्ता पुरुष रूपि दा च हा उ ना ले गरि सा ध्या त्म हा भै र व दे व त्त जो छे न हा मा पु ज्य छे न नि अ य जा न्म नि क पा वि
क ले से स्ते प्रकार ले आ पु र्धर्म जो छे क्षपन क संग वर्ग न ग या का सु नो भिक्षु ले र क न्द किक न हे बुद्ध २ अधर्म की आचर न ग नु जो छे

नरेन्द्र नाथ ॥ राम नि भिक्षु जो छे धरि यो वा दो भयो ॥

क्षपनजोष्ठवेत्तुहेअहन् २वडोपापगर्भभयाकाःकसेपुरुयलेयोकपालिकुलार्धमदेधिनयसायकःजाह्नुव
 सभमिक्षपनकलेभन्याकोधुन्योःकपालिकलेरःवेडेकोहलेसहितभैकनकेहिवोल्हहेवडोपापिभारवराडेहुरुमाव
 हेभुधर्मभयाकाःमुडउडुन्यभयाकाःचरागलकोभेयवाभयाकाःकेशलाइउयत्त्राभयाकाभनिरुत्तेप्रकारकोःवेडुनेगा
 लिदियाकोरःफेरिदेवलागेअरेधुर्त्तभयाकाःहेक्षपराकभुनःचौधभुवनकोःउपतिस्थितिप्रलयगर्नीकासामर्थ्यभ
 याकावेदानकासिद्धानलेगरिषतिद्वभयाकाःसाक्ष्यातःभगवानकानकाःपार्वतिकापतिभयाकाःरस्तामहादेवतादन्
 जसधर्मकादहिष्कनन्तरकारनलेःरस्तामहाधर्मकोःवडेमहिमाचोदविचारगरःकस्तारेहेक.

क्षपनकःअलिहन् २घोलपावःकालितकेःगाविदीपलडावलाएःकापालिकःसकोधध्यापापपारवरागपसदसु
 डितमुडचागलवेसकेशोखचकःअरेविप्रलभकःकिलचतुर्दशभुवनोत्पत्तिस्थितिप्रलयवर्त्तकोवेदान्तसिद्धान्त
 प्रसिद्धोःयत्रभगवान्भवानिपतिःदशपामहर्हिधर्मस्यास्पमहिमानरहिहरसुरज्यस्यस्यनुरानहमाहरे
 वियतिवहनानःक्षत्रानाखणःधिगतिरतिःसनगनगरमभःपुराविधायमहिमिमाकेलससकेलेभूर्यस्तोयक्षरौनपिवामित्.

भनिबोलेरःमहिमाकोवरान्गर्पिताग्नाःविष्णुमहादेवइंद्रारिदेवताइनेसर्वदेवताजोहन्चयलेज्येष्ठभयाकाः
 सामर्थ्यलेगरिवेडेब्रेभयाकाःरस्तादेवताहुरुलाइपनिआक्रावराभाल्याउनाकोसामर्थ्यकश्चासवियगतिभ
 भयाकानक्षत्रहेरुगतिपतिरोधनगूढःपवर्त्तनगरलेसहीनभयाकिप्रधिविलार्जिललेपुराभयाकीवनारक
 नयथिभरकाजलजोष्ठगागुकायवर्त्तलेगरिषनेमापिउरगडुभनिकापालिकलेःआक्रावडासर्थकोवरीनगचोर॥

प्रबोध
५५

क्षपनकचोचोवोत्तः अरहे कालिकरमेकासगलेमतिमिलाई कोहिइइजाई बीआजात्या पुरुषलेइइजातिमायादेयाईकेन
छाटियाकाकोभकुः भनिक्षपनकलेबोत्योर कापालिकवोचु हेवडोपापिभयाक्षपनक कुरिपनिपरमेस्वरलाई इन्द्रजाति
पुरुषभनिगालिदिन्दुस भन्यार वडेदुष्ट कुरोसहि नसकू गर्दोरहेछतस अर्थ सताइलाजग दुभनिमिजानदेविनरव

अदोलेवभराभिमिकेगाविइइय गालिरागरीदिआलिमो श्रीदेसिअविष्पलेछा उनिका
क्षपनक अलेकापातिः आ पापपुनरविपरमेस्वरमेजाइकमित्या क्षिपसि तन्त्रयमीगीयमस्वदोरात्म्यमस्व

सिति कापालिकः आ
इमाकथ्यतदहमस्वस्नत्करालकलवालीनिकृत्तकरा नालो छलदह लफेनिलबुडो धेसा डेइम छमरुदो छु
तिऊतः भूतवर्गेगगभहिगास्तिधरेधेधे नोमिइतिरवडुमुधम्पगछतिः ॥ ॥ ॥ ॥

त्योर केहिबोल्नलाग्पा अतिभयानकभयाकाः समुत्तरवारलेकाटियाका गलाका चोकेदेविनः उभोतिरनियुक्ताका व
इनेफिनलेसहितभयाका विंडुलेयुक्तभयाका रगतलेगरिः शङ्कगन्धीभयाका उमरुकांडोकारशब्दलेवालाईयाका
भूतकासमुल्लेसहितभयाको महाभैरविलाईनृपिगरोउछु भनिस्तो कुरोवोलिक रवडुउपई क्षपनककानजिकमाका

डा

सम
५५

क्षपणकः जो छ सो पनिः भयले सहित भयाको हेमराजः अहिशा जो छः वडो धर्म छः भनि बोलेर भिक्षुका कायमा जान्दो भयो भिक्षु
पनिः कापालिक लाई वारणगरिः केहि वात बोले लागेर हे वडा भाग्य ले युक्त भयाकाः छ छाले गरि भयाकाः कलह मा पनिः लो वडा न
स्वी विये तरवारको प्रहार गर्नु योग्य छैनः भनि भिक्षु ले विनिगन्योरः कापालिक पुनिः सत्ता अपराध पनिः सत्ता प्रारण लिन्ना होई
न भनि मनमा विचार गन्योरः खड्ग लाई मित्रान माहात्म्यो भयोः क्षपणक यनि स्वस्थ भेः केहि कुरे वेत्त लागेर हे वडो ऐश्वर्य ले युक्त

क्षपणकः स भयम् महाभा अत्र अहि साप लमो धम्मो स्थिति भिक्षोर कं प्रविशति भिक्षुः कापालिकं वारयन् मो भो म
हा भाग को तुः क प्र युक्त वा के लह न युक्त मन स्मिन् पुस्वि नि प्रहृत्तुम् कापालिकः खड्ग प्रति संहरति क्षपणकः समा
स्वस्थ महाभा अजहत् समह निदघोल लोसा वम समुत्ते न दाह गोक विवु छिदु मि छामि कापालिकः पृच्छः
क्षपणकः सुदेतु ह्याः रापल मे धम्मा अधं केलि से मो क्लेश को कापालिकः अनुः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भयाकाः कापालिकः यदिः अति भयानक भयाकोः जो छ को आवे सः छोड नु भया उं प्रात्तः म केहि वात जो छ ज पाछे डो
प्रा को ई सा गर्हु भनि विनिगन्योरः कड नु कुरो सो धरु सः भनि कापालिक ले पनि आता गर्दो भयोः क्षपणक पनिः अलि
क कापालिकाः धर्म को छडा गरिः बल्छः हे कापालिक ज पाई हे रु का धर्म जो छः पुन्य को छः अव उं प्रात्त मो क्षप को सुख
जो छ कस्तो छ आशा गर्नु हव सः भनि विनिगन्योर कापालिक जो छः हे क्षपण पुन भानि आशा गर्हु ॥ ॥

प्रवाधः
५६

स्त्री आदिगत्या काः विषयं छेन न भन्यासु सपनिकेने छेन आत्मरूपसुखं भनितपनिः आत्मरूपसुखं भन्याका कुरा
मा प्रमानके छे छेन सुखका अनुभव ले रहित भयाको जीवके स्थिति जो छे सोहि मुक्ति हो भनौतः सोपनिश्चयेनः
नङ्गनाले पुरुषार्थ नङ्गना जहः मुक्ति हो भनि भन्नसकी देन नम अर्थ स्त्री चन्द नमालाः ईनेना ना विषय जो छे नमोक्ष सुख
न भनिसस्त्रो कुरो सास्यात् महादेव जो छे न कहूँ थाः भनिसस्त्रो कठा कहूँ था भयाको शर्वति वरे वरमया की आश्रितिले वश आन
न्दले गरि आलिंगन गर्नाले मुक्तः

दृष्टं काः प्रसुरं विना न विषये रानन्द देवो धाजित्ता जीवस्य स्थितिरेव मुक्तिरूपलावः स्थाः कथं प्रयेतेः पार्थव्या
पत्तिरूपया दयितपासा नन्दमालिङ्गितो मुक्तः कीडति चन्दनुदः नपुरित्मू भवानिपतिः सिद्धः महाभाग्यः
अद्वयमेतदवीतराजस्य मुक्तिरिति ॥ ॥

पभन्याको वरो किङ्गर्गर्गले गुरिका छि कने छे सोम सिद्धांति भयाका हाथोः स्त्रे प्रकारको मुक्ति सुखं भनि क्षपन कजां लिई
कहदो भयोः भिक्षुः जो छे सोपनि वैल्हः देवडा भाग्यले युक्त भयाकि का पालिकः नरकारि आदिगत्या काः विषयमा
पीति दुःखा को छेन नस्त्रो मुक्ति दुःख भन्याको कुरो जो छे वेडे जन्मो हेरुले अगर्गर्गो पछेन भनि निक्षले वा लोभयो

राम
५६
राम नयति

क्षपनकजोछःबोल्छःअरेहेकंपालिकःयदिनपाईलेरिसानिगनुभन्याःमकेहिविनिगछुःभनिवितिगरिवोल्छःस्त्रीआ
 दिगःयाकानानाविचयविचयेषीनिगन्याभयाकोशरिरजोछःमुक्तस्वरूपजोछःभनित्रीआतागनुभयोःसोकुरोवशे
 वेदविरूधवातगनुभयोःभनिरस्त्रोकुस्त्रोरोविनिगदोभयोभिक्षुकोरःक्षपनककोमनःजोछःवडेअदालेयुक्तभया
 कोरहेनछुभनिविचारगयोःक्षपनकलेरःअवेलाइसुनाईकनहेमहेहाप्रानजिकपाःआठनुहवसःभनिआतागयोःकापालि
 ककोभे

क्षपनकःअलेकापालिआजरनलूमसितदोभराभिःसलीसुसिलागिमुक्तेतिवेअविलुधम्ःकापालिकः
 स्वगतम्ःअयेसदाःक्षिप्रःमनयोरःनःकरगाम्ःभवत्वेतावत्प्रकाशम्ःअदेइत्तस्ताःवत्तततःप्रविशको
 पालिकरूपःधारिणीसदाःकलरागःसहिमेकवसरःरजस्मःसुदमदुःजायसाःविणीदरातीतुप्पनलाःअ
 लोअरगाराएभिमाताचालुमुअसाःशिश्रवपिसाथःगभालमथलाविहाःदिगःसस्तुमुहिविलासिनिः

अधामाकोप्रदुपनि नृत्पत्रालादेविनःमाप्रवेवागदिभैःनैसैसमयमाःकरगानोभिवांतिमंगवैल्लागैपीन
 हेजातिरजोगुनदेविनःउत्पनभयाकिःअदुल्लईहेनुहवसुःकस्तिअदुभन्याःकमलपधवरोवरःलामाःअतिचेल
 लेनेत्रभयाकीःस्ननकोरःफटिपःआःहागकोवडाभारदुनलःमुखगरिदुःआभयाःकिमनुयेकामिरकोअतिरसो
 मालापैह्याकुःभयाकीपुरीनदुवरोवरःमुखभयाकिःस्नेप्रकारलेगरिःजोअदुवदुतेसोभायमानभैरहिदु

भनिरस्त्रोकुस्त्रोरोविनिगदोभयोभिक्षुकोरःक्षपनककोमनःजोछःवडेअदालेयुक्तभया

प्रबोधः

५७

अदुलेपनिःकां पातिका लाइव दक्षिणागरिः न पात्रिका न जेरेमा मछुः आतागनु हवसः स्वामिन्नु भनि स्तोत्रि
निगुयो पुन्यो कापालिकनेर आतामर्ध हे अतिप्रियारि भयाकि अद्वानि मिले दुष्ट चिष्ट भयाकि वडा अभिमोनि
यो भिक्षु लाई अकमाल गरि न छोदि पकी राखनु हवसः भनि आतागन्याको अति अदुलेर बुद्धिया हवसः
भनि भिक्षु लाई अगालो हाति भै भिक्षु जो थियो सो पनि जन हे रुका न जिके मो अति राप्रो आनन्द ले गरिः अलि

अदुलेपरिकम्प ससमि आनवेडु सामीः कापालिक पिये एनं दुरात्मा भिमनिर्न भिक्षु गहानः अद्वानि भिक्षु
मालिगति भिक्षु जनातिकमः मानन्द परियो ज्योमा चमः भिनीय अहोः सुख रूप कापालि निन याहि
ररागः पीन पयोधराः कति मया चडा नुरागा न्दु जेद दुःख पीडित पीवस्त न भर नो गाध मालि गिनाः ॥

लाग्यो अहो आओर्य लाग्यो नसुका पातिका को भै अधान्यो भयाकि अद्वका अंग के स्प उर्ष डुं दे माप नि वडो सुख
दुरो रहे ह भनि बोल्कोर मोहि कुरो दे सा ड छ अति पुष्ट न भयाका आक्राप निले हान भयाका दुनाले संभोक राम
मंलाई अति विचित्र मान्यो भयाका सत्ता र्व हि रु जो छन वडा पि निले गरि दुई वाडु का अति नरमा भरि भ ५७
याका अति दुला वडा स्तन को मर्दन गरि अति वलि योग रि मै ले कति स्त्री हे रु लाई अलि गन गरिया को के नर
वडु ने स्त्री हे रु लाई अलि गन गन्या को छ नर परतु

हेरु

कापालिनी का अतिपुस्त भयाका उवापनिर्वरे भया स्तनको अलिगनगर्नाल भयाको बडे आनन्द जो कः अरुची विषे
कनेमिलेन समकुगामाशय फेरगुरु हेरु को नाउलि आपधगद्वे देउपनगुराग्या रहिछ भनि एस्तो कुरो बालि
क अहा आचर्य छ कापालिक को चरित्र जो छ वडा पुन्य का प्रताले युक्त भयाको रहेछ भनि कथा हा कथार सोम सिद्धा
न जो छ सोपनि वशे वर्गानी विषे रहेछ यो धर्म पाने वशे आ अर्यगग उन्पार रहेछ भनि बोल्थो भिक्षु जो छ केहि वा त्वसा गो रहे व

भयाका क
सब था जानु हुन
हामि हेरु

उडेले शतशः रोपेयदि पुन फुतापि कापालिनी पीनो नग कुचा वगुह न भ प्राप्ता प्रमोदो दये अहो पुराण कापालि
क चरित्र म अहो श्लाघ्य सोम सिद्धांत आधर्यो य धर्म भो महा भाग सर्व था व दानु शासन मर्या भिक्षु तृष्ट मु प्रविस्त
म परम्प धर सिद्धांत न दार्च्य स्तुति आह म पु वे सत्य मा पारम्प शरि दी क्षा म क्षप नुक अले भिक्षु आ का बो लि रा
फ म दु सि दे नु म ता द ले अप स ल भिक्षु आ पा न व चितो सि र का पा लि न्या प रि भ म हा म हा स व रा का पा लि क प्रिय क्ष प

हो न
हो न

को वहु को साख लाई न्या ग ग नु स्पे न पार्द हेरु ले उपास नागरिया को सोम सिद्धांत विषे प्रवेश गरिनु तस अर्थ मेरा गु
रु नु ह व स परम्प र वं धि भया की दीक्षा दिनु ह व स भनि एस्तो कुरो भिक्षु लेर कपालिक संग विनिग्या को धुन्यो सपन ले केहि
हुने बोल्थो लामो अरे हे भिक्षु बडी अप वित्र भया की कापालिनी संग अलिगनगर्नाले ति मि पनी अर्प विव ह छ न रा अ
थहा आननिक मा व स्तुत व स टा ठो रहनु ह व स भनि क्षम प न क ले निक्ष को नि दा गरि वो ल्यो र भिक्षु प नि अनिलाल आया

मि
लि
रि

प्रबोध
५८

का ३
हेवडोपापभयाकाक्षपकः कापालिकं हस्तिकि अहोको अलिङ्गनेरुपिवडाउत्सावलेरोहभयाकोहस्त सत्तित्तैरोभाषपनिधेन भनिएस्तोह
सेवोन्दोभयोः कापालीकपनि अहोईकेहि आजागरां लागेो देवियाभयाकिसहो क्षपनकलोई अलिङ्गनगरि आग्रावसमात्मा
नुहवसभनि आतागुरुहवमः पालिनी सहाजाथि मापनि हवसभनिबहुया आतामात्मा भनिविनिगुरि कालिभिलेरक्षपणकला
इअलिङ्गनगदि भे क्षपणकनोह मापनिरोमाचले सादतभेकन अहोअहर्न २ भनि आक्रोदेवताकोसकनागभारका

कापालिनी क्षपणकमालिमनि क्षपणकः सरोमाचमः अहोअलिहन्त २ कावास्तिनिफंसकुसुदलिमुदावपणोविअप्रक
वालि उवगनमः अलेमहने सुदीदेअविआलेउवहोदेनाअधि कोविउवावोकि अथिजन्त नथाकलाः अइपीराधराग्य
गामोहराणी पलितकुलंगविलोअणी जईल मरीका वालिनी भावकी नाकींकलीसादिसावकिः ॥ ॥ ॥ ॥

पालिका आंगकोस्पर्महुदे मापनिवडोसुरवहुदोरहकः भनिबोलिकरणहसुन्दरि भन्योर फेरिआफे अलिङ्गणगरि अरेवडोमहि
नसहुईडि अकोविकार मनमाउपचभेयो भनिवाल्योरः कउपायगभारः केउरवागमपाप्राप्तयोविकारणहः नलनिभनिमनमा
विचारगरिविठया मजुकीपिछः काममुदायलेठाकलाः भनिमजुः कीपिछः लेठाकि केहिबोल्न लागेो पुरभेक अति ठरीप
याकास्तनलेगरि गामिभयाकी तछाकि श्रीनिकानेववरोवर अतिचचलनेत्रभयाकी हेकपालिनी अहानिमि वडेसहालेपुक्त

भनिसुलारिवडोपसन्नगगडिछोनेरुग्राशपन
कहैरुको कथावाजीकेहिबः अदिनभनिबोल्न
सुलारिवडोपसन्नगगडिछोनेरुग्राशपन
कहैरुको कथावाजीकेहिबः अदिनभनिबोल्न

अहो अश्चर्यं कथा लोकां देहको मृतजोहू वधे मोक्षसुखको निमित्त भयाको रहेहू भानि सत्त्वो कुरोग यो रहेहू अश्चर्यहेका
 कालिकहो अज्ञानतपानि के चाक भे गजानमस्यर्थ मनमा ध्यानलिकनु महा भेयवको आ जाले पार नतारि पनि दिक्षु दिनु
 हवस भनि विनिग चोर क्षपन कलेर कापालिक को धियो सो पनि निमि दुवे ज नो वरा जो वातनी म हेरुने विनिग पो नसे का
 मगर भान आ गपाय पार कालिक ले पनि सुरा पात्र हान मालि मघले गरि ध्यान को प्रकास गदी भयो अद्वा पनि विनिग नु ल
 गिह भगवन् सुरा पात्र जोहू

अहो कापालि अष्टक दसरां मोक्ष साहन भो आ वलि अहो पातु किंकले स पद से बुने म विम भै ल वार उ सा स रे रि क्त
 सुरेण कापालिक उपविप्रनाम् उ भो नया कुरुत कापालीक भाजन समादाय ध्यान नाटयति अद्वा मव अ
 पुलिद मुलास्मा अगाम कपालिक विलोक्य पिता श्रेय भिक्ष क्षपन चोर पयति इद पवित्र भ मृत पीयता भव
 भैय भि प पु पात्र समुद्धे दे कारण भैरवो दित मु उ भो वि भ शत क्षपणक अहो पात्र अलिह नातु सामरा मुला पान न स्थि
 पुरा भैरहेहू भनि विनिग यो र कापाली कले पनि सुरा ले पूर्ण भया का पात्र ला इहेरि करण सुरा पियोर जोय रहा को सुरा जोहू अति
 पवित्र भया को जल सा र को अश्रु भ भया को जोला का मसार का निमित्त नया का कर्मा नु सारि वो मनो को दुखि नु ग न लाई निमित्त भ
 भया के केवल साक्षात् भैरव ले कहिया को यो वदो अमि ने हो अमि न का पान गर भानि युक्ति मत्र पाहि भिक्षा क्षपन कलाई
 दिन्वो भयो भिक्षु क्षपण क जो धियो सो पनि दुवे ज रा मन मा विचार गर ग ला गी न से वी च मा क्ष प ने जा छ हा प्रा मन पा सुरा

एवो ५
५५

भनिपुत्रो कुरोवेन्दो भयोः भिक्षुपनिकापालिक को जुठो मदिगजोछः कसो गरिपानगरो लाभनिवाल्तो भयोः कापालिकलेपनि सु
गपाननगन्माजसो ठहराये योर हवडा कडुन न विचार गछे सरः भिक्षुकारः क्षपरा कका सुखे त्वलार् अरु संपत्ति दूरग भाको
रहेन छ तस अर्थः मेरा मुय को जुठो हुना ले अपवित्र भयाको छः भनि सुगर्हः इने हवे जनामा न्दछु नः नस्कारगः निश्रा मुय
काम घले गरि

भिक्षुः कथं काप्रातीको छिंता सुगमा रूपामः कापालिकः किविमशमिहुने पसुत्व न नमाः नो घायनीयत्वः नेन स्रद्धा नगरो
यागपवित्रा सुरामे तो मत्पः तेतद्व वति सब कः सब पुता कत्वा न यो रूप न यनः यनो तो थिका अवर्दति स्त्री मुयं तु स
दासु चिइति जे भवः आरावेदिनि पानः यात्र गृह्णित्वा पित्त शेष सुपन यतिः भिक्षुः महा प्रवादः यति च चक गृहीत्वा पिव
नियहो मुगया सोन्दर्यम्

अनिपवित्र वनाई छः भिक्षु क्षपरा कः कानजिक माः सुरा पात्र लार्ः लै जानु हवसः नस्कारगो वडा धर्म वा स्त्री हेरु पनिः स्त्री को मुय न
मदा सर्वदाः अति अद्वुष्ट भन्नुनः भनि सहा लार्ः कापालिक जो छः सजो कुरो आजा गर्नु भयोः अहो ले पनिः जोत पत्रो ले आजा गर्नु भयो
सो वठियाः आजा जे छु शिर पर छुः भनि विनि गरिः त्यो सुरा कोः पुरारहा को सुरा पात्र लार्ः भिक्षु कानजिक माः लै गेः वरो महा प्रसा
हा भन्पारः सुरा को पात्र हा नलि पीउ न लाग्योः अहो अर्थ छुः वदै यो मुगमा सोन्दर्य रहेछु भनिवाल्पारः सुरा को वस वर्ग नगन लाग्यो
भयो

विनिगरीलाया अरेभि
दुका

मुन्दरभयाकिस्त्राको जुगे भयोः अनिसुगधिले युक्तभयाकोः स्मृत्तसुराजोद्धः वेष्पाहेरुले सहिनभयाकाः पेले कनिवारपियाको छेनरपिये
को छ नर परतुः यो कपालिनि अद्वाकाः मुषका मघले गरिः जनि सुगधिले युक्तभयाकोः स्मृत्तसुरावरोवरः कने मिले नुठो कुरा कि
नगरेः यसे सुरालाई नपाउनाले गरि देवनाहेरुकाः समुदाये से पानिः अमि तपि नको इच्छा गन्या धनः यो कुरे नि अय भय भनि
स्मृत्तप्रकारले गरी अमि नलाई ही नगरिः गुराको वडे वर्गा नगरे भयोः स्मृत्तप्रकारलेः वर्गा गरि गन्याका सुनारः क्षपन कजो

निपित वेष्पाभिः सहन कनिवारः नुवदनाः सुखो छि शस्त्राभिर्विकचवकुलाः मोदमधुराः कपालिन्याः वक्त्राः सवसुरभिमे
तातुः मदिगमः लध्वाः जानिमः स्मृत्तसुराये सुरगगाः क्षपणकः अले भी कतुः अमा सवो पिवकाः बालिनिः वचनः
सलसमः दिले भुः मविधाले सुभिक्षः क्षपन काय चयक मुषनयतिः क्षपनकः पित्वाः अहो मुलायम हुले नग अहोमा
दे अहो ग वो अहो मुलिह नग सः चिर मुयः अलिह नग गुमा मगोः निवदिदोः पडि धि दौहि इदि से नः मुला लसनः

लिनीका मुषका रमकेरुनालेः अनिमिगे भयाकोः यो सुराजोद्धः सर्वे नपात्रिलेः नपि उगुहवसः मला रूप निराधिदिनुहवसः भनिरे
जे विनिगन्यारभिक्षले पनि क्षपणकः काहनमाः सुराको पुगसे बरह्याको भादो जोद्धः दिदो भयाः क्षपणकले पनि सुरालाई पियार वडे
पर्गा गरि ला ग्या अहो अहो अहो यो सुरा मा वडे मधुरा ले युक्त भयाकोः स्वाद रहेछ गे भनि अनिमिगे रहेछ धन्य रक्ता सुराका
सपिन छोडि कन बडुने काल देखि नः यो दिगवरः का शास्त्रमः इविगजाः भनि रक्ता कुरो वा ल्यार दे र्शो कुरो के र्त्तन लागे अरे भिक्षु मेरा हा
न पाउमा वडा गला निहुला ग्या तस अर्थ मनि डाग छि भनि बोले पार भिक्षु ले पनि वधिया रहवस भन्यो निदा पापन्या वाउ प्रातः का
पालिक गोथि यो सो पनि बोल्छ हृप्रिये कपालिनि अमुल ल्या गरि किम्माका दुइ वीनाः

प्रबोध
६०

दासजोछत्र पाइया तसे अर्थ नृत्पगरोला भनि । चित्तगर्न लाग्वाः क्षपनकपणी वोत्त लाग्वाः अरोयोकापालिक जोछु भिक्षु हो ।
अथवा वशे आचार्य हो रस्ति कापालि नीसंग अनिरागो गरि । चित्तगर्न ई भनि वो ल्यो र अरोयो कापालि निमंग हामि सविनित्तगरो हो ।

भिक्षु भनि र

अले भिक्षु आधोलनिमं अपार नामुसाः सः यवो कुर्वन् तथा कुरुतः । कापालिकः प्रियञ्चमुले कीर्तदा मद्रयलवुत्त नृत्पावत्ता
वत्त उभो नृत्पः न क्षपनकः अले भिक्षु आर्यसे कापालिः स अहं अचाति स्कापालिणी र्गुण दुः सोह नैराग्ये दि नालदा
समधः अहं विराग्य अमः सवो कुर्वन् दत्ति मदः सवलि न नित्य नः

लोकोरोक्षपनक लेवात्मा को सुचारः भिक्षु लेपनि मद्यपि उ नाले मत्त मेकः लोइ दे पदे भिक्षु र क्षपनक जो थिया चित्तगर्न
लाग्वा भया

गाम
६०

क्षपणकजोहः अथिपीन धरात्थगाइत्यादिः पहिले कहाको श्लोक जोहः गाउन लाग्या भिक्षुपनिबोल्हः हे आचार्य हेकातिकवो
आश्चर्यदेखिहु जसविसेदुःखेनगरीपनिआफुलेचिनायाका वडा वडा अर्थमिडिजोहनुः दुदरहाहुनुः भनिबोल्परकउत्तरमत्तोव
अश्चर्यदेखहुसः भनिकापालिकलेबोल्पर अश्चर्यदेखाउनलाग्या जमरासामतमाः नैव प्रादिग आकाशद्वयकनानाविषय
कामागविलास गर्दामापनि अणिमादीगया का अर्थमिडिजोहनु नजीकमा पाप्रभयाका मोक्षमाः पीतिगन्या भयाका

क्षपणकः अथिपिनघनः थगाइत्यादिगायतिः भिक्षुः आचर्यमेहाचर्यमेतः दर्शनं यत्राः क्लेशमभिमतार्थमिदुयः
सपद्यनेकापालिकः कियदेतदा अर्थपत्रः मिः अत्रानुः जतचः क्षत्राः रीदिविषयामगेपिमिद्वीत्यमुरः त्यासन्नमहोदय
प्रणापिणाः मर्यो महामिदुयः वक्ताकर्षविमाहन प्रशमनप्रक्षोभाः ने चार नापाः याः याकितमिदुयस्तु विदुषां योगात्
रायाः परक्षपः शाकः अलेकावालि अविमृष्टपः अले आचालि अविमृष्टपः अथवा आचालिः अलाजकुल आचालि
जान्याहेरुकातः वेडेयोग्य काविघ्नभुतभयाका वशिकरणा भयोः आर्यगा भयोः मोहनभयोः संवेतान भुजा रीदिनु भयोः उन्मत्त
गर्नुभयोः पुञ्जातनृगर्नुभयोः इनेमवेकुराठरेभया का प्राकृतिमिदुबोहः सोपनिमिल्लहुनु भनिस्सत्ता कुरोकापालिक गर्दभयो
क्षपणकपनिमत्तभेकेन अलेकापालिक अश्चर्यअथवा अश्चरजकुराचार्यः भनिवारवार २बोलनलाग्या द्वा सिकनभिक्षु
बोल्हः ठरेमादिसाः पिउनालेगार वडाएस्तपस्विकाः चिन व्यस्यवभेरहेहु जस अर्थमद्यकोरंगलाई औवधगरिदुःखारिदिजह

अबोध
६९

वठियाइवसभनि कापालिकलेपनि आफुलेचपरीगपाको पागनेछ दापरणलाई डियो कापालिक कामुसको पानयाइस्वस्थ चिन्नग
आरक्षपराक जोछ बोल्न लागेहे आचार्यहे कापालिक केहि वार सोठ्छु शुन जस्ता तपात्रिका गुरामा दोसाइवमगराउन्पावदि
साइछ तले यो पिथी मदलमा काहि विहेरु पक्येहस्त मासिदिछ भनि रज्जा कुगारा भयो दापरणक लेर कापालिकलेपनि

आ ३

अथ मणायामि निअयितपितया मदि रयादुर मुन्मनि कृतपण्यः न कि यत्ता मस्य मदापनयनस कापालिक
स्वभवति निसो मुये छिउ तावुल क्षयणा यद दाति क्षपराक सार्थी भुय आचालि अस्वर्ष पुछामि जादि मित
हागा मुलाये स्सुहल गमिद्धी किना मीई थि आपुति मे मुवि अर्थी कापालिक कि विरोये नए छाने पक्ष विधा
धर चाथे मुगना वा ना गांगरा वा पथ पक्षक म्पम्य घमने च्छु पुवन के ये पि विद्या ववला ज्ञत दुपाह गमिः

विस्मगरिका मोषकु हेर भनि बोलेर आफुछेड किमिलाई देखाउन लागे विद्या धर कि खीहवस ज्ञपनि देवता कि खी
हवस स्तपनि नाग कन्या हवस स्तपनि यक्षनगरि कन्या हवस स्तपनि सर्वे लाइवमगरा वडुने का बोल्नुपर्छ यो
निर्नलोक मा जोजा मेरो पि यारिछ चस्तु छ यो मेरे विद्या कावल लगरि अक्ता वजमा ल्याउना कन मन्त्र पाछु रस्ताव
ओराम पर्यले युक्त भया किमिदिछ भनि कापालिकलेपनि भयो

राम
६९